एम.पी.एच.आई.एन.२०१२/४५०६९ ॥ओ३म्॥ डाक पंजीयन : एम.पी./.आई.डी.सी./१४०५/२०२१-२३
प्रत्येक माह दिनांक २५ को प्रकाशित एवं २८ को प्रेषित

हिन्दी-मासिक

वैदिक संसार

● वर्ष : १२ ● अंक : १२ ● २५ अक्टूबर २०२३, इन्दौर (म.प्र.) ● मूल्य : ५०/- ● कुल पृष्ठ : ४०

उस देश की, उन व्यक्तियों की अत्यन्त दुर्दशा क्यों नहीं होगी जो एक परमात्मा को छोड़कर इतर की उपासना करते हैं। -महर्षि दयानन्द सरस्वती

परम मित्र मानव निर्माण संस्थान
द्वारा निर्मित

भारत मित्र स्तम्भ

ग्राम : खाण्डा खेड़ी
जिला हिसार, हरियाणा

लोकार्पण
आर.एस.एस.
सरसंघ चालक
डॉ. मोहन जी भागवत
के करकमलों द्वारा
दिनांक १२ अक्टूबर
को सम्पन्न।

समारोह अध्यक्ष
पद्मश्री आचार्या सुकामा देवी जी

विशिष्ट अतिथि
योग गुरु बाबा रामदेव जी
स्वामी चिदानन्द जी

(विस्तृत समाचार पृष्ठ ३८ पर)

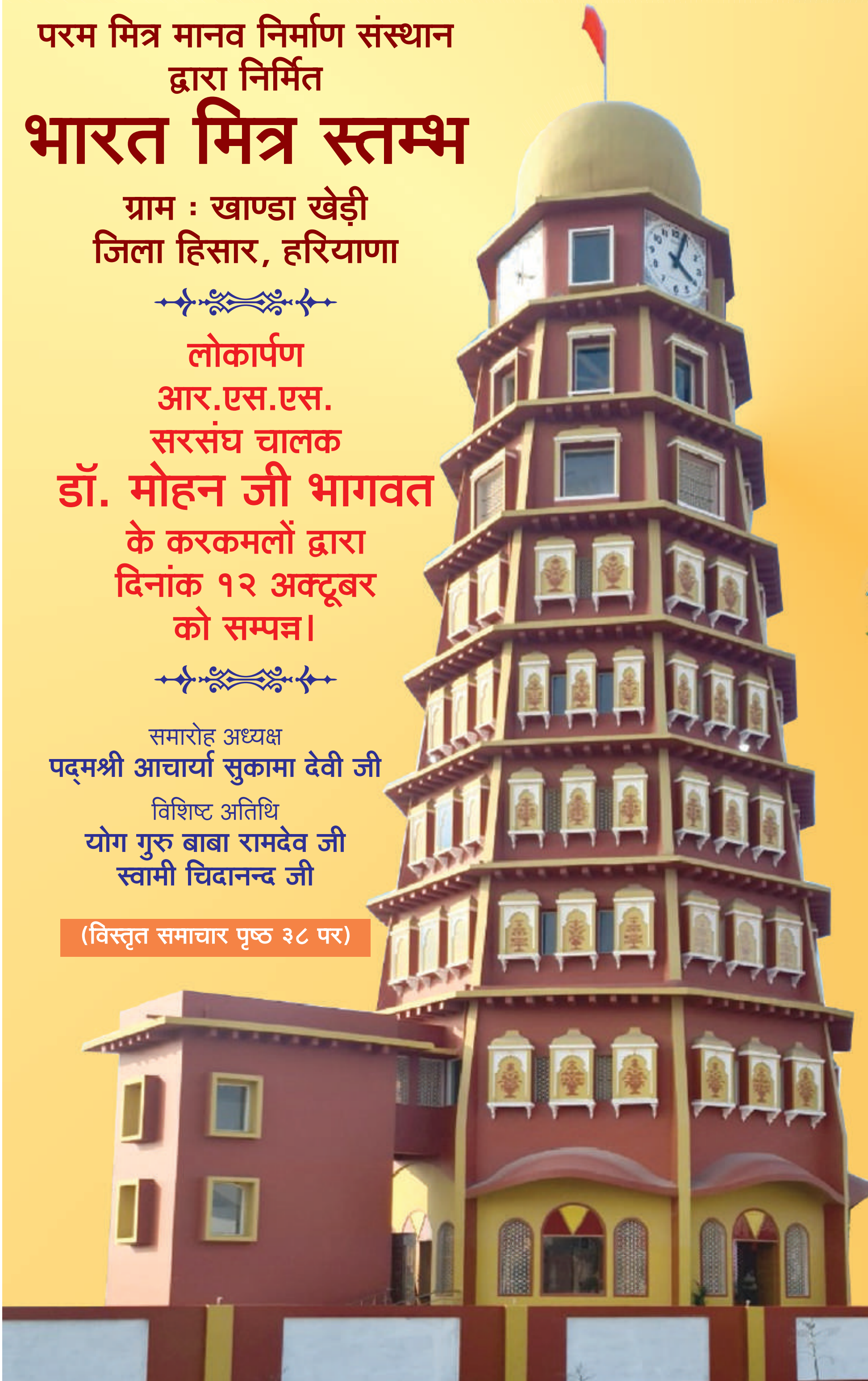

वैदिक पथ के पथिक

स्मृति शेष
चौधरी मित्रसेन जी आर्य

जन्म: १५ दिसम्बर १९३१
देहावसान: २१ जनवरी २०११

चौधरी मित्रसेन जी आर्य की स्मृति को समर्पित आठ तल के इस स्तम्भ के शीर्ष भाग पर ओ३म् पताका सनातन धर्म की ऊँचाई की बोधक है। ओ३म् पताका के ठीक नीचे चारों दिशाओं में समय बोध करवाने वाली घड़ियाँ प्रतिघण्टे ओ३म् के नाद को गुंजायमान करती हैं। शेष आठ तल में ब्रह्माण्ड उत्पत्ति से लेकर वर्तमान तक के ऐतिहासिक कालखण्ड, सनातन धर्म-संस्कृति और राष्ट्र के महापुरुषों, वीर बलिदानियों, परमवीर चक्र से सम्मानित शूरवीरों, हरियाणा राज्य की प्राचीन कला-संस्कृति, परम्पराओं तथा चौधरी मित्रसेन जी के जीवन वृत्त को जीवन्त करती मूर्तियों-चित्रों के साथ पुस्तकालय व भूतल पर यज्ञशाला। स्तम्भ परिसर में वैदिक शोध व अनुसन्धान केन्द्र प्रस्तावित है।

भव्य 'भारत मित्र स्तम्भ' लोकार्पण समारोह की भव्यता की साक्षी देती चित्रावली

भारत मित्र स्तम्भ का अवलोकन करते हुए मुख्य अतिथि सरसंघ चालक
डॉ. मोहन भागवत जी एवं अन्य विशिष्ट जन

महान् विभूति चौधरी मित्रसेन जी की मूर्ति के समीप आयोजन की महान् विभूति
डॉ. मोहन भागवत जी एवं बाबा रामदेव जी तथा अन्य

मुख्य अतिथि डॉ. मोहन भागवत जी को स्तम्भ की प्रतिकृति भेंट करते
संयोजक कैप्टन रुद्रसेन जी चेयरमैन आर्यन ग्रुप एवं समारोह अध्यक्ष

बाबा रामदेव जी एवं स्वामी चिदानन्द जी को 'चौधरी मित्रसेन जी अभिनन्दन ग्रन्थ'
की प्रति भेंट करते समारोह अध्यक्ष एवं संयोजक कैप्टन रुद्रसेन जी

मुख्य मंच के दायीं ओर मंचस्थ संन्यासी वृन्द तथा बायीं ओर मंचस्थ खाप पंचायत प्रतिनिधिगण, राजनेता, आर्य समाज के पदाधिकारी व विद्वत्गण

ओजस्वी उद्बोधन प्रदान करते बाबा रामदेव

मुख्य अतिथि के करकमलों द्वारा
स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती का सम्मान

वैदिक साहित्य के क्रान्तिकारी प्रचारक
डॉ. विवेक आर्य दिल्ली का सम्मान

'शुद्धि सभा' स्थापना की शताब्दी पर प्रकाशित 'आर्य समाज
और शुद्धि आन्दोलन' की प्रति भेंट करते डॉ. विवेक आर्य

समारोह अध्यक्ष पद्मश्री आचार्या सुकामा देवीजी
का सम्मान मुख्य अतिथि के करकमलों द्वारा

मित्र गाथा का गीत प्रस्तुत करने वाली बालिकाओं को
बाबा रामदेव ५१ हजार रु. की राशि से पुरस्कृत करते हुए

विशाल पाण्डाल में सम्पूर्ण भारत से उपस्थित अपार जनसमूह

विस्तृत विवरण पृष्ठ ३८ पर

जो बिना भूख के खाते हैं और जो भूख लगने पर भी नहीं खाते, वे रोग सागर में गोता लगाते हैं। –महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

वर्ष : १२, अंक : १२

अवधि : मासिक, भाषा : हिन्दी

प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ अक्टूबर, २०२३

- स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
  सुखदेव शर्मा, इन्दौर
  ०९४२५०६९४९१
- सम्पादक
  ओमप्रकाश आर्य, आर्य समाज रावतभाटा (राज.) चलभाष : ९४६२३१३७९७
- पत्र व्यवहार का पता
  महर्षि दयानन्द स. विद्यार्थी आवास आश्रम
  ४७, जांगिड भवन, कालिका माता रोड, बड़वानी (म.प्र.) पिन–४५१५५१
- अक्षर संयोजन–
  नितिन पंजाबी (वी.एम. ग्राफिक्स), इन्दौर
  चलभाष : ९८९३१२६८००

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

अति विशिष्ट संरक्षक सहयोग	५१,०००/–
पुण्यात्मक विशेष सहयोग	११,०००/–
पंचवार्षिक सहयोग	२,१००/–
त्रैवार्षिक सहयोग	१,३००/–
वार्षिक सहयोग	५००/–
एक प्रति	५०/–
विज्ञापन : रंगीन पृष्ठ (भीतरी)	११,०००/–

(पंजीकृत डाक व्यय पृथक से देय होगा।)

खाता धारक का नाम : वैदिक संसार
बैंक का नाम : यूको बैंक
शाखा : ग्राम पिपलियाहाना, तिलक नगर, इन्दौर
चालू खाता संख्या : 05250210003756
आई एफ एस सी कोड : **UCBA**0000525
कृपया खाते में राशि जमा करने के पश्चात् सूचित अवश्य करें।

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अन्धकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज : **'वैदिक संसार'**

अनुक्रमणिका

विषय	शब्द संग्रहकर्ता	पृष्ठ क्र.
अमृतमयी वेदवाणी : साम–अथर्ववेद शतक पुस्तक से	स्वामी शान्तानन्द सरस्वती	०४
...आर्यावर्त भू–मण्डल के विशेष पर्व एवं दिवस	संकलित	०४
वैदिक संसार पत्रिका के उद्देश्य	वैदिक संसार	०४
सम्पादकीय : महर्षि दयानन्द, दीपावली और वर्तमान पर्यावरण की स्थिति	ओमप्रकाश आर्य	०५
महान् विभूति : श्रीकृष्ण महिमा	आर्य पी.एस. यादव	०६
महान् विभूति : अमर बलिदानी कन्हाईलाल दत्त	डोंगरलाल पुरुषार्थी	०७
कच्छप गति त्यागें	आचार्य रामगोपाल सैनी	०८
महान् विभूति : भाई परमानन्द की १५१वीं जयन्ती...	इन्द्रदेव गुलाटी	०९
दस निर्देश माता–पिता के लिए	पुष्पा शर्मा	०९
महान् विभूतियाँ : ...१४८ महान् विभूतियों का पावन स्मरण	आचार्य राहुलदेव आर्य	१०
हिन्दी की वर्ण मंजु मंजरी (गतांक से आगे)	चौधरी बदनसिंह आर्य	१०
सम्पूर्ण मानव जाति पर देव दयानन्द के अनन्त उपकार	पं. उम्मेदसिंह विशारद	११
ऋषि बलिदान (निर्वाण) दिवस	सुश्री आदर्श आर्या	१२
महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (गतांक से आगे)	ई. चन्द्रप्रकाश महाजन	१३
दीपावली– महर्षि दयानन्द और आर्य समाजी	पं. नन्दलाल निर्भय	१४
ऋषि को अश्रुपूरित अन्तिम विदाई	सत्यकेतु आर्य	१५
यदि देव दयानन्द न आते	खुशहालचन्द्र आर्य	१६
भक्ति संग ज्ञान	रमेशचन्द्र भाट	१६
यज्ञ वैज्ञानिक शोध पर आधारित रोगों से सुरक्षित करने की...	डॉ. श्वेतकेतु	१७
वैदिक संसार : वेद मन्त्र मंतव्य चित्र विशेषांक	सुखदेव शर्मा	२३
दुनिया कर्म क्षेत्र है कोई सैरगाह नहीं/एक भूख–दूसरा नंग	देवकुमार प्रसाद आर्य	२३
कौन कहता है, हम हो गये आजाद...?	ओमदीप पुनैया	२४
हे इसरो! तुझे प्रणाम	अशोक शर्मा महाराज	२४
किसकी करूँ पुछाड़ी बोलो!	डॉ. लक्ष्मी निधि	२४
भर्तृहरि नीति शतक और वृद्धावस्था	पं. शिवनारायण उपाध्याय	२५
परिवार में वृद्धजनों की स्थिति/फर्ज माता–पिता के प्रति	मोहनलाल दशोरा	२६
वैदिक शिक्षा के अभाव में बदलता परिवेश : मानव का दानवीय व्यवहार	सुखदेव शर्मा	२७
चन्द्रयान–३ : भारत का स्वर्ण दिवस	सुन्दरलाल चौधरी	२८
हर सनातनी को सन्तान को वैदिक शिक्षा देनी होगी	अरविन्द पुरोहित	२९
महर्षि दयानन्द आश्रम बड़वानी की मेरी यात्रा की कुछ आँखों देखी...	स्वामी हरिश्वरानन्द सरस्वती	३०
अच्छा नहीं हुआ	राधेश्याम गोयल	३१
ठाकुर विक्रमसिंहजी का ८०वाँ जन्मोत्सव हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न	आँखों देखी	३३
आर्य महासम्मेलन (जयपुर) सम्पन्न	सुखदेव शर्मा	३५
इस्लाम मुक्त भारत (ISLAM FREE INDIA- IFI)	राधाकिशन रावत	३६
उपनयन संस्कार सम्पन्न	गजेन्द्रसिंह सोलंकी	३७
भारत स्तम्भ मित्र लोकार्पण समारोह सम्पन्न	सुखदेव शर्मा	३८

अमृतमयी वेदवाणी

साम-अथर्व वेद शतक पुस्तक से

● **स्वामी शान्तानन्द सरस्वती**
(एम.ए. दर्शनाचार्य)
प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दर नगर, रोहतक (हरियाणा)
सन्त ओधवराम वैदिक गुरुकुल, भवानीपुर (कच्छ), गुजरात
चलभाष : ९९९८५९४८१०, ९६६४६३०११६

पुनानो देववीतय इन्द्रस्य याहि निष्कृतम्।
द्युतानो वाजिभिर्हितः।। (४३)

– सामवेद उ. २.२.४.३

शब्दार्थ– हे शान्तिदायक प्रभो! **पुनानः** = अपवित्रों को पवित्र करने वाले **द्युतानः** = प्रकाश करने वाले **वाजिभिः** = प्राणायामों के साथ **हितः** = ध्यान किये हुए आप **देववीतये** = विद्वान् भक्तों को प्राप्त होने के लिए **इन्द्रस्य** = इन्द्रियों में अधिष्ठाता जीव के **निष्कृतम्** = शुद्ध किये हुए अन्त:करण स्थान में **याहि** = साक्षात् रूप से प्राप्त हूजिये।

विनय : हे परम पवित्र, पतित पावन, परम पिता परमात्मा! आप अत्यन्त ही शान्तिदायक हैं तथा अपवित्र व्यक्तियों को भी पवित्र कर देने वाले हैं। जो भी आपके शरण में आता है और आपकी उपासना करता है, ध्यान करता है और व्यवहार में आपकी आज्ञा का पालन करता है, आप उसके अपवित्र आचरण को नष्ट करके उसे पवित्र आचरण वाला बना देते हैं तथा उसके मन, बुद्धि, अन्त:करण को पवित्र कर देते हैं तथा अज्ञानियों को भी अपना शुद्ध ज्ञान प्रदान करते हैं। हे प्रभु! प्राणायाम, धारणा, ध्यान आदि साधनों से जो आपके विद्वान् भक्तगण आपके सान्निध्य को प्राप्त करते हैं आप उन्हें अपना शुद्ध स्वरूप का साक्षात्कार करा देते हैं। हे प्रभु! हम पर कृपा करिये कि हम सब भक्तगण आप परम पवित्र परमात्मा के गुणकर्मों को धारण करते हुए अपने अन्त:करण को पवित्र करें, अपने आत्मा को पवित्र करें और अपने जीवन को सफल बनाएँ।

पद्यार्थः *शुद्ध स्वरूप सुखों के दाता, पावन कर हमको हे भ्राता।*
आये हैं हम शरण तुम्हारी, वेद ज्ञान से भर महतारी।।
करें ध्यान तव गान निरन्तर, पावें तुझको हर क्षण अन्तर।
धरो हाथ हम सबके सर पर, भीगें विमल भक्ति में भरकर।। ■

● **दर्शनाचार्या विमलेश बंसल (विमल वैदेही), दिल्ली**
चलभाष : ८१३०५८६००२

विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्त नवम्बर मास, २०२३ के कुछ राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय पर्व–दिवस

०१. विश्व शाकाहारी दिवस, राज्योत्सव दिवस (कर्नाटक राज्य स्थापना दिवस), आन्ध्रप्रदेश दिवस, केरल दिवस, छत्तीसगढ़ दिवस, मध्यप्रदेश दिवस, पंजाब दिवस, हरियाणा दिवस। ०२. **पं. उमाकान्त उपाध्याय पुण्यतिथि।** ०५. विश्व सुनामी जागरूकता दिवस, भूपेन हजारिका पुण्यतिथि, विराट कोहली जन्म दिवस। ०६. युद्ध एवं सशस्त्र संघर्ष में पर्यावरण क्षति रोकने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय दिवस। ०७. शिशु सुरक्षा दिवस, विश्व कैंसर जागरूकता दिवस, लालकृष्ण आडवाणी जन्मदिवस, चन्द्रशेखर वेंकटरमन जयन्ती। ०९. **पं. इन्द्रविद्या वाचस्पति जयन्ती,** विश्व विधिक सेवा दिवस, उत्तराखंड दिवस, गुरुद्वारा करतारपुर कॉरिडोर स्थापना दिवस, विश्व उपयोगिता दिवस (द्वितीय गुरुवार), गोवत्स द्वादशी। १०. शान्ति व विकास के लिए विश्व विज्ञान दिवस, परिवहन दिवस, धन्वन्तरी जयन्ती, धनतेरस। ११. युद्ध विराम (स्मरण) दिवस, शिक्षा दिवस। १२. विश्व निमोनिया दिवस, राष्ट्रीय पक्षी दिवस, दीपावली (नव सस्येष्टि पर्व), स्वामी दयानन्द निर्वाणोत्सव। १३. विश्व दया दिवस। १४. **आचार्य ज्ञानेश्वरार्य पुण्यतिथि,** बाल दिवस, विश्व मधुमेह दिवस। १५. **महात्मा हंसराज पुण्यतिथि,** बिरसा मुण्डा जयन्ती, झारखण्ड दिवस। १६. **काशी शास्त्रार्थ ऐतिहासिक दिवस,** राष्ट्रीय प्रेस दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय सहिष्णुता दिवस, राष्ट्रीय मिर्गी दिवस, विश्व दर्शन शास्त्र दिवस (तीसरा गुरुवार)। १७ अन्तर्राष्ट्रीय छात्र दिवस, विश्व सी.ओ.पी.डी. दिवस, लाला लाजपत राय बलिदान दिवस। १९. विश्व शौचालय दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस, सड़क यातायात पीड़ित स्मरणोत्सव विश्व दिवस (तीसरा रविवार), रानी लक्ष्मीबाई, श्रीमती इन्दिरा गाँधी जयन्ती। २०. सार्वभौमिक बाल दिवस। २१. विश्व टेलीविजन दिवस। २२. वीर दुर्गादास राठौर पुण्यतिथि, वीरांगना झलकारी बाई जयन्ती। २३. राष्ट्रीय फाईलेरिया दिवस, सन्त नामदेव जयन्ती, एन.सी.सी. स्थापना दिवस। २४. गुरु तेगबहादुर बलिदान दिवस। २५. विश्व मांसाहार दिवस, महिला हिंसा उन्मूलन विश्व दिवस, २६. डॉ. हरिसिंह गौर जयन्ती, संविधान दिवस, विश्व पर्यावरण संरक्षण दिवस। २७. गुरु नानक जयन्ती। २८. महात्मा ज्योतिबा फूले पुण्यतिथि।

वैदिक संसार के उद्देश्य

- जगत् नियन्ता परमपिता परमात्मा द्वारा मानव की उत्पत्ति के साथ सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याणार्थ दिए गए ज्ञान–वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि–मुनियों एवं ऋषि दयानन्द प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।
- महान् योगी, संन्यासी, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगद्रष्टा, स्वराष्ट्र–प्रेमी, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित–पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खण्डन–मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डिनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदानुकूल सद्–साहित्य के रचयिता, दयालु, दिव्य, अमर बलिदानी महर्षि दयानन्द सरस्वती के समस्त मानव जाति पर किये गये उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
- आमजन में व्याप्त अज्ञानता, धर्मान्धता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
- आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार–प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
- आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुँचाने का प्रयास करना।

महर्षि दयानन्द, दीपावली और वर्तमान पर्यावरण की स्थिति

महर्षि दयानन्द सरस्वती एक युगपुरुष थे जिनका निर्वाण ३० अक्टूबर सन् १८८३ को अजमेर में हुआ था। जन्म गुजरात में, निर्वाण राजस्थान में और कर्मक्षेत्र पूरे भारत में, विचार सार्वभौमिक। वे इस धरती के तिमिरांचल को विदीर्ण करने के लिए आए थे। आर्य समाज को अपना सारा उत्तरदायित्व सौंपकर इस संसार से विदा हो गए। यदि उनका आविर्भाव न हुआ होता तो आज भारत की क्या स्थिति होती? इसकी कल्पना करके रोंगटे खड़े हो जाते हैं। उनका सारा जीवन वेद–प्रचार में विश्वकल्याण में, मानव के उत्थान में, सत्य को प्रकाश करने में, अंधकार को दूर करने में व्यतीत हो गया। यह कटु सत्य है कि लोगों को सत्य सुहाता नहीं, कल्याण मार्ग भाता नहीं। उन्हें चमत्कार, असत्य बातें, काल्पनिक गप्प कथाएँ, अतार्किक असम्भव रोचक मनमोहक बातें अच्छी लगती हैं। इसी कारण सम्प्रति महर्षि दयानन्द के दिखाए मार्ग पर चलने वाले कम ही पुण्य आत्माएँ हैं।

आगामी नवम्बर २०२३ को दीपावली पर्व मनाया जाएगा। यह पर्व पर्यावरण–रक्षा की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। किसान नई फसल को घर में लाएँगे। वर्षा समाप्त। आकाश स्वच्छ। प्रकृति सौन्दर्योपंत, न अधिक शीत न अधिक गर्मी। धरती थोड़ी नम रहती है। इसी कारण वर्षाजनित रोगोत्पादक सम्भावनाएँ रहती हैं जिसके निवारणार्थ ऋषियों ने दीपावली महापर्व को महायज्ञ के साथ जोड़कर यज्ञोत्सव का विधान किया ताकि वातावरण रोगाणु रहित बन जाए और मानव सुख से आनन्दपूर्वक रहे। महर्षि दयानन्द की दिव्यदृष्टि से सबको ज्ञान हुआ; पर्वों की वैज्ञानिकता का पता चला। प्रत्येक आर्य पर्व को मनाने का उद्देश्य प्रकाशित हुआ। दीपावली पर्व को पर्यावरण को सामने रखकर चिन्तन–मनन करें। लोग इस पर्व को वैज्ञानिक ढंग से मना रहे हैं या पर्यावरण का विनाश कर रहे हैं। यह विचारणीय बिन्दु है।

आज समूचा विश्व प्रदूषण से संत्रस्त है। न वायु शुद्ध, न जल, न खाद्य पदार्थ शुद्ध, न भूमि। वन–बागों का विनष्ट होना, बढ़ता शहरीकरण, भौतिकता की अंधी दौड़, भागदौड़ की जिन्दगी, आपाधापी, नाना रोगों की वृद्धि, तनाव, अर्थप्रधान संस्कृति का उदयन, भौतिकवादी सभ्यता। इन सबके मध्य मनुष्य का जीना। तनाव नहीं तो और क्या होगा? जिस हवा में साँस लेना है उसी हवा को विषैली बनाकर कैसे सुखी रह सकेगा मानव? यह चिन्तनीय विषय है। दीपावली के पहले, दीपावली के दिन, दीपावली के बाद इतने पटाखे फोड़े जाते हैं कि वायु की उस स्थिति में साँस लेना कठिन हो जाता है। यह सब क्या है? हम पर्व मना रहे हैं या पर्यावरण का विनाश कर रहे हैं? इसमें पढ़े–लिखे, बिना पढ़े–लिखे सब शामिल हैं। श्वासरोगी तो बहुत बेचैन हो जाते हैं। लोग यही समझते हैं कि यह तो पटाखे फोड़ने का पर्व है। पटाखें फोड़कर खुशी मनाओ? पर्यावरण का तिलभर ध्यान नहीं। ऐसे ही हर खुशी के मौके पर लोग पर्यावरण के साथ खिलवाड़ करते हैं। यह विनाशकारी खेल कब समाप्त होगा? कब तक पर्यावरण का विनाश करेंगे? हम कब चेतेंगे? पर्यावरण के प्रति सजगता क्यों नहीं उत्पन्न होती?

महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में लिखते हैं–

सम्पादकीय

● **ओमप्रकाश आर्य**
आर्य समाज, रावतभाटा, वाया कोटा (राजस्थान)
चलभाष : ९४६२३१३७९७

''मनुष्य के भीतर से जितना दुर्गन्ध उत्पन्न हो के वायु और जल को बिगाड़कर रोगोत्पत्ति का निमित्त होनेसे प्राणियों को दुःख प्राप्त कराता है उतना ही पाप उस मनुष्य को होता है। इसलिए उस पाप के निवारणार्थ उतना सुगन्ध वा उससे अधिक वायु और जल में फैलाना चाहिए।'' वे आगे लिखते हैं, **''जब तक इस होम करने का प्रचार रहा तब तक आर्यावर्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था, अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाए।''** आज दिन–रात मोटर गाड़ियों के जहरीले धुएँ से वायु विषैली हो रही है। यज्ञ के स्थान पर जहर घुल रहा है और लापरवाह मनुष्य पर्वों और अन्य खुशियों के अवसर पर पटाखे फोड़कर प्रदूषण में वृद्धि करता है। **महर्षि कहते हैं कि जो वायु और जल को बिगाड़ता है वह पापी होता है। पाप का फल सदा दुःख होता है। इस आर्यावर्त देश में बड़े–बड़े यज्ञ सम्पादित होते थे और तब यह देश सुखों से पूरित था।**

प्रश्न यह उठता है कि इस समस्या का समाधान कैसे निकाला जाए? उपाय क्या है? हम इतने आगे बढ़ चुके हैं कि प्रकृति की निकटता पसन्द नहीं आती। बनावटी जीवन जीने में शान समझते हैं। सब कुछ दिखावा और फैशनपरस्ती के नाम पर वास्तविक धरातल बौना हो गया है। जब तक मनुष्य यज्ञ, वेद, योग, ईश्वर की शरण में नहीं आएगा तब तक वह इस धरातल पर सुख से नहीं रह सकेगा। इन सबका समाधान वेदों की ओर लौटने से ही सम्भव हो सकेगा। यही वह मार्ग है जिस पर चलकर यह देश जगद्गुरु, सोने की चिड़िया और विश्व का सिरमौर था। वेद ही जीवन जीने की कला सिखाता है, सत्य–सत्य ज्ञान देता है। आत्मा को संस्कारित करता है और मानवता का बीज वपन करता है।

दीपावली पर्व हर वर्ष आएगा और चला जाएगा, यज्ञ–हवन से नाता नहीं जोड़ पाए और पटाखे ही फोड़ते रहे तो आने वाली पीढ़ी हमें कभी माफ नहीं करेगी। प्रकृति की विनाश लीला होगी जिसमें मनुष्य नाना प्रकार के आधि–व्याधि से ग्रस्त होकर असमय काल–कवलित होगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती इस युग के ऐसे महापुरुष मनीषी थे जो प्रकृति से लेकर मोक्षपर्यन्त की बातें बताकर ज्ञानामृत पिला गए। हम जीवन और जगत् को वेद की कसौटी पर तौले, तब मनुष्य का कल्याण होगा अन्यथा लकीर के फकीर होने से काम नहीं चलेगा। प्रकृति कितनी सुन्दर है! ईश्वर ने एक–एक तृण कितने वैज्ञानिक ढंग से बनाया है। ब्रह्माण्ड कितना विशाल और मनमोहक है। वायु की संरचना कितनी वैज्ञानिक और आवश्यकीय है। जल की संरचना के पीछे कितना बड़ा विज्ञान है। पेड़–पौधे, नदी–पहाड़, जीव–जन्तु, रत्नगर्भा धरती का मातृत्व स्नेह, फूल–पत्तियों का सौन्दर्य और

कलात्मकता देखकर हमारे अन्दर पर्यावरण के प्रति प्रेम और संरक्षण–शुद्धता का ध्यान होना चाहिए तभी हमारा कोई भी पर्व मनाने की सार्थकता है अन्यथा उसे बिगाड़कर अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारना है और अगली पीढ़ी के लिए दु:ख बोना है। दीपावली पर्व मनुष्य से बहुत कुछ कह रहा है उसका मूक सन्देश पर्यावरण में पढ़ लीजिए। महर्षि दयानन्द का ज्ञानामृत ग्रन्थों में पड़ा है पी लीजिए। परमात्मा का अमरज्ञान वेद अमृत की धारा बहा रहा है उसमें स्नान कर लीजिए। यज्ञ की अग्नि जलाकर सुगन्धित द्रव्यों का हव्य प्रदान कर परमात्मा की आज्ञा का पालन कर लीजिए। योगमार्ग को अपनाकर मानव–जीवन के पुरुषार्थ को प्राप्त कर लें। यह जीवन अमूल्य है। मार्ग कठिन अवश्य है किन्तु कल्याणकारक है।

महर्षि **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** के पोषक थे। उनका उद्देश्य सारे संसार का उत्थान करना था। वे मानवमात्र को वेदामृत पिलाना चाहते थे। आज देख लीजिए। रूस और यूक्रेन तथा इजराइल–फिलिस्तीन के युद्ध में पर्यावरण के ऊपर कितना बुरा प्रभाव पड़ रहा है। वायु और जल के ऊपर कितना घातक दुष्प्रभाव है। काश! सारा संसार वेद के प्रकाश में आता और सब आर्यत्व के गुणों से ओतप्रोत होते। धरती पर विनाशकारी खेल होता ही नहीं। यह संसार सुख भोगने के लिए है। यह तभी संभव होगा जब मानव वेद मार्ग पर चलेगा। आइए! हम सब इस दिशा में कुछ कृतसंकल्पित हों।

श्रीकृष्ण महिमा

संगीत का साधक खुद को बना कर,
श्रीकृष्ण जिस वक्त बंसी बजाए हैं।
सुरों से वश किए पशु–पक्षी, नर–नारी,
पेड़–पौधे झूम उठे खुद मुस्काये है।।
उंगली के इशारे से पर्वत की तलहटी में बसा दिया गाँव।
आँधी तूफानों से बच गए ले ली पर्वत की छाँव।
पर्वत ने गायों के वर्धन का काम किया।
श्रीकृष्ण ने पर्वत को गोवर्धन नाम दिया।
योग में परम योगी योगेश्वर पद पाये,
जान लिया ब्रह्म को सर्वत्र समाए है।
माता यशोदा पहुँचाये है,
अर्जुन को ज्ञान दिया विराट् दिखाये है।।
सात जनम पूर्व क्या थे श्री भीष्म जी,
पलक झपकते ही विवरण बताये है।
कुछ पाप किये थे जो तब बचपन में,
वही शर शैया पर ये कष्ट पहुँचाये हैं।।
जिसके भी थोड़े से ज्ञान चक्षु खुले थे।
श्रीकृष्ण महिमा को शीश झुकाये है।
अक्ल के अन्धे जो भी उस काल थे।
शिशुपाल जैसे तो शीश कटाए हैं।।
उपदेश दिया जिसने सही खानपान का।
पालना सिखाया जिसने गौ माता महान का।।
जो दूध दही मही मक्खन करते उपयोग है।
महाबली बनते और वे रहते नीरोग है।।
जो भी उपदेश दिया करके बताये हैं।
गोओं को पाल के गोपाल कहाये है।
मित्रता के कर्तव्य कैसे संवारे।
सुदामा के संकट कैसे टारे।।
केवल याद रखा रास रचाना।
भूल गए उनका सुदर्शन चलाना।।
नारी का मान था जिसने बढ़ाया।
दुष्ट कर्मों से जिसने बचाया।।
कैसे बचाई थी नारी की लाज।
हमें भी सीखना चाहिये आज।।

जिससे जुड़े हो उसको भी छोड़ना।
जीवन को नई दिशाओं में मोड़ना।।
सिखा गये कृष्ण छोड़ के ब्रज को।
छोड़ के गोपी सखा और ग्राम रज को।।
मोह नहीं तनिक भी उन्हें पकड़ पाया।
इसीलिये तो नाम मोहन कहाया।।
कंस जैसे शत्रु से नहीं भय खाया।
दुष्टों सहित उसको मार गिराया।।
माता–पिता को मुक्ति दिलाई
कर्म कर पितृभक्ति दिखाई।।
स्थापित कर दिया फिर से सुराज।
गद्दी पर बैठा दिये फिर महाराज।।
वीर थे महावीर योद्धा महान थे।
कर्मवीर चतुर महा बलवान थे।
फिर भी उन्हें नहीं युद्ध कभी भाये।
पलायन करके रणछोड़ कहाये।
श्याम वर्ण की उनकी काया थी।
पर सुन्दर मन की माया थी।
उन्होंने तन भले ही काला पाया।
फिर भी जग को कितना भाया।
खूनी संग्राम नहीं थी उनकी चाह।
पकड़ी थी उन्होंने शान्ति की राह।।
रखा पाण्डवों का शान्ति प्रस्ताव।
कौरव नहीं ले पाये इसकी थाह।
शरीर का रंग तो पाया था काला।
पर द्वेष मन में किसी से न पाला।।
जिसने जैसा चाहा समझना
उसने वैसा ही समझ डाला।
कोई कहे वो है जगत गुरु।
कोई कहत है केवल ग्वाला।।

हुआ अनचाहा महा संग्राम।
जिसमें अच्छे–अच्छे आ गये काम।
भारत में ये जो महाभारत हो गया।
भारत का स्वर्णकाल उसमें खो गया।
इसमें वीर ज्ञानी महारथी खोने का।
आज तक रहता है सबको मलाल।
मिट गए महारथी चमकते सितारे जो
छा गया अन्धकार हो गये कंगाल।
फूट जो पड़ी तो टुकड़े–टुकड़े हो गये।
सुख जितने थे सब दु:खड़े हो गये।
दु:ख प्राप्त करने की यही से शुरुआत थी।
आगे के काल में तो दु:खों की बारात थी।
सब जानते हैं आगे क्या काम हुआ।
पतन हुआ इतना कि देश गुलाम हुआ।
सज्जन सब मिल करें ऐसी दुआ।
खोद न पावे कोई फूट का कुआँ।
फूट–भेदभावों की मिट जाए खाई।
करो ऐसे प्रयासों की श्रेष्ठ कमाई।
मत केवल नाम भजो बात करो काम की।
कर्म करो उन जैसे छोड़ो माला नाम की।
हम सब उनके कर्मों को धार लेंगे।
दु:खों के दरिया में नैया को तार लेंगे।
बिखरे मत वाले कौरव चाहे सौ हों।
संगठित धार्मिक पाण्डव ही जीत लेंगे।
बनो सब धार्मिक संगठित रहें सब।
श्रीकृष्ण तो अपने ही है, अपनी ही प्रीत लेंगे।
उनकी ही शिक्षा से, सारा जग जीत लेंगे।
उनकी ही शिक्षा से, सारा जग जीत लेंगे।

• **आर्य पी.एस. यादव**
प्रधान आर्य, समाज, मण्डीदीप
जनपद : रायसेन (म.प्र.)
चलभाष : ९४२५००४३७९

अमर बलिदानी कन्हाईलाल दत्त

● डोंगरलाल पुरुषार्थी
प्रधान आर्य समाज, कसरावद, जनपद : खरगोन (म.प्र.)
चलभाष : ८९५९०-५९०९९

भारत की धरती यह वीरों की धरती है।
इसमें प्राणों के बलिदानी होते हैं।।
इस धरती पर गद्दारों की भी कमी नहीं।
जो वीरों का सब किया कराया धोते हैं।।
इसलिए गद्दारों को बख्शा न जाए,
जड़ से उखाड़ कर इन्हें मिटाना अच्छा है।
अभिशाप देश के लिए है जिन्दगी इनकी,
इनका विनाश कर देश को बचाना है।।

महाराष्ट्र के पूणे जिले के ग्राम चिंचवड़ नामक गाँव की बलिहारी पन्नाधाय (उपमा) ने अपने तीन बेटों को आजादी की लड़ाई में बलिदान किया। सन् १८९६ में पूणे क्षेत्र में प्लेग फैल गया था। जो इस महामारी में हजारों लोग मारे गए। इस प्रकोप से निपटने के लिए कमिश्नर मि. रैंड ने अपनी तानाशाही के तहत सैनिकों द्वारा गरीब जनता को घरों से निकालकर घरों आग लगवा दी और महिलाओं के साथ अपमानजनक कार्य किए गए। अस्तु क्रान्तिकारी तीन बेटे दामोदर चापेकर, बालकृष्ण चापेकर तथा वासुदेव चापेकर ने मि. रैण्ड को अपने अत्याचारों को बन्द करने बाबत् लिखित चुनौती दी। किन्तु रैण्ड ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया। अस्तु इन तीनों भाइयों एवं साथियों ने मि. रैण्ड को खत्म करने की योजना बनाई। दिनांक २२.०६.१८९७ को दामोदर और बालकृष्ण चापेकर मि. रैण्ड एवं मि. आयरिस्ट को गोलियों से भूनकर फरार हो गए। सी.आई.डी. मि. लुईस ने इन भाइयों को गिरफ्तार करने हेतु बीस हजार रुपए पुरस्कार की घोषणा की। इनाम की लालच में गणेश शंकर और रामचन्द्र नामक दो द्रविड़ भाइयों ने भेद बतला दिया। जिसके कारण चापेकर भाइयों को फाँसी की सजा हुई। तीसरा भाई वासुदेव चापेकर ने इन दोनों गद्दार द्रविड़ भाइयों को मारकर स्वयं अदालत से फाँसी का उपहार प्राप्त कर शहीद हो गए।

इसी तरह देशभक्तों के विश्वास को तोड़ने वाले गद्दार मुखबिर (भेदिया) बनकर ब्रिटिश सरकार को क्रान्तिकारियों के भेद बताने वालों को मौत के घाट उतारना प्रत्येक क्रान्तिकारी अपना धर्म समझता था। ऐसा ही एक क्रान्तिकारी युवक कन्हाईलाल दत्त ने देश भक्तों के रहस्य सरकार को पहुँचाने वाले मुखबिर नरेन्द्र गुसांई को मारकर उसे देशद्रोह की सजा तो दी थी। साथ ही यह भी बता दिया कि देश के गद्दारों का क्या परिणाम होता है। कन्हाईलाल दत्त का जन्म सितम्बर १८७७ में बंगाल के जिला हुगली के चन्द्रनगर नामक गाँव में हुआ था। सन् १९०५ में बंगाल का विभाजन हो जाने के कारण देश के राजनैतिक जीवन में पर्याप्त असन्तोष फैल गया था। बंग–भंग के विरोध में सभाएँ आयोजित होतीं, हड़तालें होतीं और जुलूस निकाले जाते। क्रान्तिकारी दल में कन्हाईलाल दत्त, नरेन्द्र गुसांई और सत्येन्द्र बोस आदि क्रान्तिकारी सम्मिलित थे। कलकत्ता के क्रान्तिकारी ३४, मुरारीपुकुर रोड, अलीपुर में स्थित एक कारखाने में बम बनाया करते थे। पुलिस को जब पता चला और उस मकान की तलाशी ली, जहाँ बम बनाए जाते थे। कुछ तैयार तथा कुछ अधबने बम, डाइनामाइट का मसाला और कुछ गोपनीय पत्र बरामद हुए। इसके साथ ही पुलिस ने ३४ युवकों को हिरासत में ले लिया। इन पर मुकदमा चला जो **'अलीपुर बम काण्ड'** के नाम चर्चित हुआ। इस केस में नरेन्द्र गुसांई नामक युवक पकड़ा गया जो बाद में मुखबिर बन गया। इसने अपने साथियों को पकड़वाने में पुलिस की मदद की। नरेन्द्र ने अपने साथियों के पते-ठिकाने बता दिए। पुलिस के कहने पर नरेन्द्र ने कुछ ऐसे व्यक्तियों के नाम भी बताए जो कि इस काण्ड से उनका कोई सम्बन्ध नहीं था। कन्हाई और सत्येन्द्र बोस ने जब अपने ही साथी नरेन्द्र का यह व्यवहार देखा तो उनके मन में घृणा भर गई। इन दोनों ने सोचा कि नरेन्द्र को अवश्य मृत्यु दण्ड दिया जाए। पुलिस ने नरेन्द्र की सुरक्षा की दृष्टि से उसे यूरोपियन वार्ड में रखा जो कि वह सरकारी दामाद समझा जाता था। कन्हाई और सत्येन्द्र ने बाहर से कटहल और मछली आदि में रखकर दो रिवॉल्वर मँगा लिए और गद्दार के लिए मृत्यु-जाल इस प्रकार बुना गया। अस्वस्थता के कारण कन्हाई को पहले ही अस्पताल में भर्ती किया जा चुका था और दुबले-पतले शरीर वाला सत्येन्द्र बोस भी गम्भीर उदर-पीड़ा का बहाना करके अस्पताल पहुँच कर कन्हाई से जा मिला। इन दोनों की कुछ मंत्रणा हुई और कुछ व्यवस्था भी हुई।

यूरोपियन वार्ड में नरेन्द्र गुसांई को यह समाचार मिला कि सत्येन्द्र बोस क्रान्तिकारियों की गतिविधियों से ऊब गया है और वह भी सरकारी गवाह बनना चाहता है। सत्येन्द्र ने नरेन्द्र से मंत्रणा करने की इच्छा प्रकट की है। नरेन्द्र के लिए यह शुभ समाचार था। उसने सोचा कि एक से दो भले। नरेन्द्र ने जेल अधीक्षक से आज्ञा माँगी और जेल के एक अधिकारी हिगिन्स के साथ अस्पताल जा पहुँचा, जहाँ सत्येन्द्र उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। वह १९०८ की ३१ अगस्त का दिन था। सुबह के लगभग सात बजे होंगे, सत्येन्द्र अस्पताल की पहली मंजिल के बरामदे में खड़ा नरेन्द्र की प्रतीक्षा कर रहा था। एक अंग्रेज अधिकारी के साथ नरेन्द्र को आता देखा तो वह बरामदे से हटकर अन्दर के कमरे में चला गया। हिगिन्स के साथ नरेन्द्र

सीढ़ियाँ चढ़ ऊपर के बरामदे में पहुँच गया। गोपनीय मंत्रणा के लिए एकान्त पाने की दृष्टि से हिगिन्स को नीचे प्रतीक्षा करने के लिए कहा और नरेन्द्र सत्येन्द्र से मिलने के लिए ऊपर के प्रकोष्ठ की ओर बढ़ चला। नरेन्द्र ने देखा कि दूसरी ओर से वहाँ कन्हाई भी आ रहा है। कन्हाई की उपस्थिति उसे अटपटी लगी, क्योंकि उसका पलंग किसी दूसरे वार्ड में था। सत्येन्द्र और कन्हाई दोनों ही नरेन्द्र के पास पहुँच गए और बातें करने की सुविधा के लिए वे बाहर के खुले बरामदे में जा पहुँचे। बरामदे में उन तीनों की मंत्रणा चलते हुए कुछ ही मिनट बीते होंगे कि गोलियाँ चलने की आवाज हुई। नरेन्द्र का हाथ जख्मी हो चुका था और सहायता के लिए हिगिन्स जा पहुँचा। नरेन्द्र भागता-भागता चिल्लाता जा रहा था ''मुझे बचाओ! मुझे बचाओ! ये लोग मुझे मार डालेंगे।'' नरेन्द्र की चीख को सुनकर हिगिन्स उसकी मदद के लिए दौड़ पड़ा। उसने नरेन्द्र को दवाई-कक्ष में धकेल दिया और हमलावरों का रास्ता रोकने का प्रयास किया। कन्हाई के साथ गुत्थम-गुत्था होकर उसने कन्हाई के हाथ से पिस्तौल छीनने का प्रयत्न किया। इस कोशिश में हिगिन्स का एक हाथ जख्मी हो गया। हिगिन्स और कन्हाई को उलझा हुआ देखकर नरेन्द्र ने सीढ़ियों से उतर भाग जाने का प्रयत्न किया। उसे भागते देख- कन्हाई और सत्येन्द्र दोनों ने ही उसका पीछा किया। नरेन्द्र भागता जा रहा था और दोनों ही क्रान्तिकारी उस पर गोलियाँ दाग रहे थे। इसी बीच एक दूसरा अंग्रेज अधिकारी मि. लिन्टन नरेन्द्र की सहायता के लिए कूद पड़ा और उसने भागते हुए सत्येन्द्र को टंगड़ी मारकर गिरा दिया और कन्हाई को अपने हाथों में जकड़ लिया। कन्हाई ने अपनी पिस्तौल की नाल उसकी खोपड़ी पर दे मारी और जोर लगाकर उसके बन्धन को शिथिल कर दिया। कन्हाई की पिस्तौल में केवल एक ही गोली बची थी और उसने पूरे आत्मविश्वास के साथ आखिरी गोली नरेन्द्र पर दाग दी। इस बार निशाना अचूक था, चक्कर खाकर नरेन्द्र जमीन पर गिर पड़ा जो कि आधा भाग गटर की ओर लुढ़क रहा था।

कन्हाई और सत्येन्द्र का काम बन चुका था। उन्होंने किसी तरह भागने का प्रयत्न नहीं किया। वे स्वेच्छा से गिरफ्तार हो गए। दोनों पर मुकदमा चला। कन्हाई ने किसी वकील की सहायता लेने से भी इनकार कर दिया। उसने अपना अपराध बिना हिचक स्वीकार कर लिया। उसे फाँसी का दण्ड सुना दिया गया। जूरी के बहुमत ने सत्येन्द्र को अपराधी नहीं माना। उसका मामला ऊँची अदालत में भेजा गया। जहाँ उसे भी फाँसी का दण्ड सुनाया गया।

कन्हाईलाल दत्त ने फाँसी का दण्ड सुना जैसे उसे लगा कि मेरा मन वांछित पुरस्कार मिला हो। आत्मिक प्रसन्नता उसके मुखमण्डल पर विद्यमान थी। खिले हुए कमल की भाँति उसका चेहरा सबको मोहित कर रहा था। दण्ड सुनने के पश्चात् फाँसी के दिन के समय तक उसका वजन सोलह पौण्ड बढ़ चुका था। उसने मृत्यु को जीत लिया था, केवल औपचारिकता भर शेष थी। फाँसी की औपचारिकता निर्वाह अलीपुर केन्द्रीय कारावास में दस नवम्बर १९०८ को हुआ। अपने जीवन की अन्तिम रात कन्हाईलाल दत्त इतनी बेफिक्री के साथ सोया कि सुबह जगाना पड़ा। प्रात:कालीन कार्यों से निवृत्त होकर वह सधे हुए कदमों से मृत्यु मंच की ओर बढ़ चला। पूरे आत्मविश्वास के साथ सीढ़ियाँ पार करके वह तख्ते पर चढ़ा। गले में फन्दा डाला। चेहरे को काले टोप में ढंक दिया गया। संकेत मिलते ही कुन्दा खींचा गया और कन्हाई का शरीर एक झटके के साथ अधर में झूल गया।

शहीद का अन्तिम संस्कार बड़ी धूमधाम के साथ किया गया। लोगों की अपार भीड़ उसकी महायात्रा के साथ थी। सुगन्धित चन्दन का ढेर का ढेर उसके दाह संस्कार के लिए प्रयुक्त हुआ। चिता भस्म ठण्डी होने तक लोग उस स्थल को छोड़कर नहीं गए। उसके अवशेष चुटकी-चुटकी करके लोगों में बँट गए। अवशेष युक्त ताबीज लोगों के गलों को सुशोभित कर रहे थे। उसकी स्मृति देशवासियों की आत्मा को आलोकित कर रही थी।

सत्येन्द्र बोस को फाँसी पर २१ नवम्बर १९०८ को झुलाया गया। उसका अन्तिम संस्कार जेल के अन्दर किया गया। कन्हाई के उदाहरण से शासन ने सबक लिया और उसका शव उसके परिवार वालों को नहीं दिया गया। शासन अपने लिए खतरा मोल नहीं लेना चाहता था।

दो अनमोल जीवन देश के लिए अर्पित हो गए। वे भावी पीढ़ियों के लिए सन्देश छोड़ गए 'एक बार हम अपने शत्रु को भले छोड़ दें पर देशद्रोही को हम किसी भी मूल्य पर नहीं छोड़ सकते।'

अन्ततः 'कुछ वे लोग हैं, अपने ही हित जिया करते,
कुछ वे लोग जो, औरों के हित जीने आते हैं।
वो भुला दिए जाते हैं, जो अपने हित जीते,
पर हित जो जीते, वे अमर पद पाते हैं।। (जय भारती)

कच्छप गति त्यागें

आज जमाना तेज से भी तेज दौड़ने का है। कितनी प्रकार की रेलगाड़ियाँ चलती हैं- एक्सप्रेस, सुपर एक्सप्रेस, फास्ट एक्सप्रेस, मेल, फ्रंटियर, तूफान मेल, दुरंतो, राजधानी, वन्दे भारत आदि। कितनी कारें चल रही हैं। नई-नई तेज से तेज गति वाली। कितने वायुयान उड़ रहे हैं आकाश में, एक से एक तीव्र गति वाले। पर मानव को इससे भी सन्तोष नहीं है। वे और भी तेज चलना, उड़ना चाहते हैं। इस दुनिया में अकर्मण्य, आलसी, प्रमादी लोगों के लिए कोई स्थान नहीं है। आज स्पर्धा नहीं, प्रतिस्पर्धा है, गलाकाट प्रतिस्पर्धा है। इसमें जो कमजोर होगा, आलसी रहेगा, ढीला, असावधान, लापरवाह रहेगा वह कहीं का भी नहीं रहेगा। समय का प्रवाह बहुत तेज है। इसके साथ चलना आवश्यक है। जो समय की परवाह नहीं करता है उसकी समय भी परवाह नहीं करता है। शास्त्र कब से पुकार रहे हैं- **'चरैवेति-चरैवेति'**। चलते रहो, चलते रहो। रुको नहीं, झुको नहीं। बढ़े चलो, बढ़े चलो। वसुन्धरा पुकारती, रुको न शूर-साहसी।

यह संसार कायरों और कमजोरों के लिए नहीं है। धधकते अंगारों से सब बचकर दूर से निकलते हैं, लेकिन वे ही लोग कोयलों को जूतों से कुचलकर उनके ऊपर से निकलते हैं।

● **आचार्य रामगोपाल सैनी**
फतेहपुर शेखावाटी, जनपद : सीकर (राज.)
चलभाष : ९८८७३९३७१३

भाई परमानन्द की १५९वीं जयन्ती (४ नवम्बर २०२३)

● **इन्द्रदेव गुलाटी**
संस्थापक : नगर आर्य समाज,
बुलन्दशहर (उ.प्र.)
चलभाष : ८९५८७७८४४३

- आप भाई मतिदास के वंशज हैं जिन्होंने जान दे दी किन्तु हिन्दू धर्म नहीं त्यागा। इनका शरीर १६७५ में आरे से चीरा गया था।
- आप कट्टर हिन्दू थे। आपके प्रयास से १९१५ में अखिल भारत हिन्दू महासभा बनी जिसका भवन १९३९ में नई दिल्ली में बना।
- आप सांसद भी बने थे। हिन्दुओं की घटिया सोच से आप परेशान रहते थे। आपने **'हिन्दू'** अखबार का संचालन भी किया था।
- आपने सुझाव दिया था कि यदि विभाजन अनिवार्य सा है तो पाकिस्तान की सीमा रेखा रावी नदी को माना जाए किन्तु आपका सुझाव सीमा आयोग ने नहीं माना।
- आपके प्रयास से वीर सावरकर हिन्दू महासभा के १९३७-३८ के अहमदाबाद अधिवेशन में आए थे।
- आपको अध्यक्ष बनाया गया तभी आपने घोषणा कर दी कि अब हिन्दू महासभा राजनीतिक दल है। अत: कांग्रेस से सम्बन्ध समाप्त करने का ऐलान कर दिया।
- १९४५-४६ के निर्वाचन में हिन्दू महासभा को १६ प्रतिशत वोट मिली क्योंकि आर्यों और स्वयंसेवकों ने कांग्रेस को वोट दी थी।
- १९४७ में पाकिस्तान बनने पर आप जालन्धर आ गए। वहाँ ८ दिसम्बर १९४७ में आपका निधन हो गया।
- डॉ. भाई महावीर इनके पुत्र थे। खेद है कि वे हिन्दू महासभा में नहीं आए। वे संघ के स्वयंसेवक बन गए। १९५१ में भारतीय जनसंघ के महासचिव बने। एक बार राज्यसभा के सदस्य बने फिर म.प्र. के राज्यपाल भी रहे।
- ९२ वर्ष की आयु में आपका निधन हुआ। निधन से पूर्व डॉ. भाई महावीर ने कहा था कि उनके जीवन की सबसे बड़ी गलती यह रही कि वे हिन्दू महासभा में शामिल नहीं हुए।
- निर्वाचन आयोग ने मान्यता समाप्त कर दी है क्योंकि ३ कार्यकर्ता स्वयं को राष्ट्रीय अध्यक्ष कहते हैं।
- डॉ. महावीर यदि हिन्दू महासभा में रहते तो पार्टी का विस्तार हो सकता था और प्रभाव बढ़ सकता था। उन्होंने मुर्दा समाज को लात मार दी।

दस निर्देश माता-पिता के लिए

बच्चे कैसे बनेंगे अपने
आज प्रश्न यह सूझा है।
कैसे इनकी करें परवरिश
अपने दिल से बूझा है।
सोचा इस पर खरी मैं उतरूँ
सही तरीका अपनाऊँ।
ऐसे उनसे घुल मिल जाऊँ
प्यारी सी माँ कहलाऊँ।
शांत हृदय से करूँ मैं बातें
उनकी बात नहीं काटूँ।
न उत्तेजित होऊँ इतना
हर बात पर मैं डाँटू।
ऊँचा माता-पिता का दर्जा
जन्म दाता हम कहलाएँ।
किशोर अवस्था में बने अपने
धैर्य धारण गर कर पाएँ।
वार्तालाप करूँ मैं उनसे
उनकी बात नहीं काटूँ।
हरदम उनके साथ खड़ी हूँ
बस दिल में मैं कहलाऊँ।

वक्त मैं उनके लिए निकालूँ
जो कि बहुत जरूरी है।
आँख कान मैं रखूँ खुल्ले
रहे न बात अधूरी है।
शालीनता से हों बातें
न गाली गुफ्तार करूँ।
बच्चे भी तो वही सीखेंगे
क्यों मैं जीती रोज़ मरूँ।
प्रशंसा भी बहुत जरूरी
सदा करूँ उनका सम्मान।
तू तड़ाका लब पे न हो
फिर न मैं पाऊँ अपमान।

गर हम उनकी करें प्रशंसा
संग में प्रोत्साहित कर दें।
बच्चे तो अपने बन जाएँ
खुशियों से झोली भर लें।
बच्चों को दें व्यवहार दोस्त-सा
यदि हम उनको दे पाएँ।
वे हम पर विश्वास करेंगे
तभी दोस्त हम बन जाएँ।
प्रेरणास्रोत माता-पिता हैं
भविष्य उज्ज्वल बन जाए।
जीवन की बाधाओं सम्मुख
सीना चौड़ा कर तन जाएँ।

● **पुष्पा शर्मा**
मोदीनगर, जि.गाजियाबाद (उ.प्र.)
चलभाष : ९०४५४४३१४१

आर्य समाज के १४८वें स्थापना दिवस की बेला पर१४८ महान् आर्य विभूतियों का पावन स्मरण

(गतांक पृष्ठ ८ से आगे)

● आचार्य राहुल देव
पुरोहित आर्य समाज बड़ा बाजार, कोलकाता (प. बंगाल)
चलभाष : ९६८१८४९४१९

१२) श्री धर्म प्रकाश नागपाल : बलिदान – २६ जून १९३८ कल्याणी, रियासत हैदराबाद के उत्साही नवयुवक थे। जब आर्यसमाज मंदिर से घर जा रहे थे मुसलमानों की भारी भीड़ ने हमला कर दिया और लाठियों से मार डाला। आपके शरीर पर १६ घाव पाए गए थे।

१३) श्री महादेव जी : बलिदान – १४ जुलाई १९३८ आयु २५ वर्ष, आप निजाम राय की अकोमक सैदां नामी जागीर के निवासी थे। आर्यसमाज के सेवक होने के कारण और मुसलमानों की आँखों में काँटों के समान चुभते थे। मुसलमान ने छुरा घोंपकर आपका बलिदान कर दिया।

१४) शहीद खंडेराव जगताप : बलिदान – ६ मार्च १९३० महुआ सूरत गुजरात, रंगीला रसूल पुन: प्रकाशित करने से इमाम खाँ नूर खाँ के द्वारा धारदार हथियार से हत्या कर दी गई।

१५) वीर धन बृजलाल आर्य : पिछड़े दलित भाइयों की शुद्धि की वजह से अब्बास खान के द्वारा छुरा घोंपकर हत्या।

१६) शूरवीर चौधरी माईधन : बलिदान – १९३३ गढ़वाल सोनीपत हरियाणा, अवैध रूप से मस्जिद बनाने पर रोकने से गोली मारकर हत्या

१७) महान् बलिदानी नाथूराम : सिंध, पाकिस्तान, तारीख ए इस्लाम पुस्तक प्रकाशित करने पर छुरा मार कर हत्या।

१८) नरवीर नारू मल : बलिदान – १९३५ कराची पाकिस्तान, तारीख ए इस्लाम एवं रंगीला रसूल पुन: प्रकाशित कर बाँटने से नाराज होकर खोजा जाति के मुस्लिम द्वारा तेज छुरी से पेट में वार करके हत्या।

१९) मानसिंह : बलिदान – १९४१ बागीडोरा बांसवाड़ा, पं देव प्रकाश जी के साथ मध्यप्रदेश के आदिवासी क्षेत्र में शुद्धि कार्य करते हुए ईसाई मिशनरी ने देव प्रकाश जी पर गोली चला दी उनको बचाने में मानसिंहजी को गोली लगी और शुद्धि कार्य में शहीद हो गए।

२०) भगत फूल सिंह : बलिदान – १४ अगस्त १९४२ ग्राम माहरा सोनीपत रोहतक हरियाणा। ये पटवारी थे बाद में आर्य समाजी बने और नौकरी छोड़ दी छुआछूत आंदोलन में तपस्या करने लगे। दलितों को कुआँ बनाने में सहायता करने से मुसलमानों ने गोली मारकर हत्या कर दी।

२१) शहीद परमानंद : बलिदान – २६ मई १९४४ लाहौर, पंजाब लाहौर में जिल्द लगाने का काम करते थे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ने उर्दू सत्यार्थ प्रकाश छपवाया। मुसलमानों ने क्रुद्ध होकर पहले दुकान में आग लगा दी फिर भाई परमानंद को चाकू से हमला करके हत्या कर दी।

२२) शेर सिंह शेर : भटगाँव हरियाणा आर्यसमाज का दृढ़ता से प्रचार करने से नाराज मुस्लिमों ने कुख्यात गुंडे शेख मुगला के द्वारा गोलियों से हत्या करवाई।

२३) देवकीनंदन : मुखडपिंडी घेम कैंबलपुर के निवासी थे। एक मुस्लिम कन्या से विवाह करके उसे संस्कृत अध्यापिका बनाने से क्रुद्ध मुसलमानों ने धारदार चाकू लाठी–डंडों से मारकर हत्या कर दी।

२४) मुरली मनोहर : कंधार पाकिस्तान २३ वर्ष की आयु में शहीद। हिंदू देवी–देवताओं को मुस्लिमों द्वारा गाली देने पर आपने विरोध किया इस पर पठानों ने पत्थरों से उन्हें क्षत–विक्षत कर मार डाला।

राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त की पंक्तियाँ याद आ रही हैं –

वे आर्य ही थे जो कभी अपने लिए जीते न थे,
वे स्वार्थ–रत हो मोह की मदिरा कभी पीते न थे।
संसार के उपकार–हित जब जन्म लेते थे सभी,
निश्चेष्ट होकर किस तरह वे बैठ सकते थे कभी।।

मुझे यह लेख लिखने में पाँच दिन लगे और मोबाईल में हिन्दी लिपि लिखना भी कोई सरल नहीं हैं। आपने पढ़ा आपका बहुत–बहुत धन्यवाद। आप सभी को आर्यसमाज स्थापना दिवस की बहुत–बहुत शुभकामनायें। **आर्यसमाज – अमर रहे!**

मूल रचनाकार : स्व. श्रीयुत मुंशी दरबारीलाल 'कविरत्न'

हिन्दी की वर्ण मंजु मञ्जरी

गतांक पृष्ठ २० से आगे

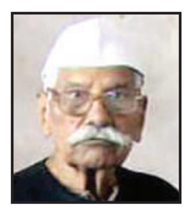

संकलन एवं सम्पादन
● चौ. बदनसिंह 'पूर्व विधायक'
१३/१०८, चारबाग, शाहगंज आगरा (उ.प्र.)
चलभाष : ९९२७४१६२००

व्यंजन वर्ण : (३४) 'ज्ञ'

छप्पय: ज्ञानी ज्ञाता ज्ञान ते, ज्ञान वन्त विज्ञानि।
ज्ञात ज्ञान ते विज्ञ हो, ज्ञान शून अज्ञानि।।

अर्थ : 'ज्ञ' 'ज्' और 'ञ' के संयोग से बना हुआ संयुक्त अक्षर है। व्यक्ति ज्ञान प्राप्त कर लेने पर ज्ञानी और सब वस्तुओं व विषयों का जानकार हो जाता है। ज्ञानमान होकर वही व्यक्ति विज्ञ हो जाता है। जाने हुए प्राप्त ज्ञान से बुद्धिमान पण्डित बन जाता है। ज्ञान हीन व्यक्ति अनाड़ी व अज्ञानी बना रहता है। कविरत्न दरबारी लाल हिन्दी वर्णमाला के अन्तिम अक्षर 'ज्ञ' के वर्णन से ज्ञानमान होकर विज्ञ व विद्वान् बनने की शिक्षा देते हैं। वे किसी व्यक्ति को अनाड़ी व अज्ञानी नहीं देखना चाहते। **(समाप्त)** ■

सम्पूर्ण मानव जाति पर देव दयानन्द के अनन्त उपकार

● पं. उम्मेदसिंह विशारद
गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड)
चलभाष : ९४११५१२०१९, ९५५७६४१८००

युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्य ईश्वरीय ज्ञान व वेदों के सत्य अर्थों के मार्ग से हजारों वर्षों से सुषुप्त करोड़ों मानवों की आत्माओं में आत्म ज्ञान के दीप जलाने वाले पहले ऋषि थे।

जब-जब सृष्टि से ईश्वरीय वाणी वेद ज्ञान का सत्य अर्थों के अभाव से मानव जगत् में अनेक बुराइयाँ होती हैं तब-तब मोक्ष से लौटकर महापुरुषों का जन्म होता है। ऐसे महापुरुष विश्वात्मा के वाहन होते हैं। किन्तु वह परमात्मा के अवतार नहीं होते, अपितु उनमें समाज की बुराइयों को मिटा देने के लिए आत्मिक शक्ति का संचार होता है। अठारहवीं व उन्नीसवीं सदी में भारत की जनता की आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनैतिक बुराइयों को दूर करने के लिए विषम परिस्थितियों में प्रत्येक चुनौतियों को स्वीकार करके रणक्षेत्र में महर्षि दयानन्द उतर पड़े थे।

महर्षि दयानन्द समय के दास बनकर नहीं आए थे, किन्तु समय को अपना दास बनाने के लिए आए थे। जमाने की गर्दन पकड़कर सत्य मार्ग पर चलाने आए थे। महर्षि दयानन्दजी जब रणक्षेत्र में उतरे तो उन्हें चारों तरफ ललकार ही ललकार सुनाई दी, चारों ओर चुनौतियाँ ही चुनौतियाँ नजर आ रही थीं। पाँच चुनौतियाँ उनके सामने मुख्य थी जो निम्न प्रकार से है।

आश्चर्य होता है

युग में एक ऐसा ऋषि दुनिया को मिला, जिसने संसार की तमाम बुराइयों को दूर करने का बीड़ा उठाया था। इतिहास में एक ऐसा महापुरुष को हम देव कहें या ऋत देव कहें। मेरे ऋषि ने ईश्वरीय व्यवस्था व ईश्वरीय शिक्षा वेदों की ओर संसार को लौटाया और संसार के हित के लिए अपने प्राणों को भी आहुति दे दी। संसार के मनीषियों को निपक्ष चिन्तन करना चाहिए।

प्रथम चुनौती भारत को विदेशियों से मुक्त कराने की थी

महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी ने पहली चुनौती पर विचार किया कि दयानन्द तुम अपनी मातृभूमि को विदेशियों का गुलाम रहने दोगे? अन्तर से आवाज आई मैं विदेशी राज्य को बर्दाश्त नहीं करूँगा। उन्होंने राजस्थान के राजाओं को अंग्रेजी शासन के प्रति विद्रोह करने के लिए तैयार करना शुरू कर दिया। दयानन्दजी के जीवन का बड़ा भाग भारत माता को स्वतन्त्र कराने की योजना में बीता। उन्होंने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा **'स्वराज्य सर्वोपरि होता है'** और महर्षि दयानन्दजी द्वारा निर्मित आर्य समाज के लिए व सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि **'जो उन्नति करना चाहो तो आर्य समाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा। क्योंकि हम और आपको उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना और भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन,मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। इसलिए जैसा आर्य समाज आर्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता।'** राष्ट्र को विदेशियों से मुक्त कराने की जिस चिंगारी का बीजारोपण महर्षि दयानन्दजी ने किया था उसकी प्रेरणा से लाखों-लाखों वीरों ने भारत माता के लिए अपना बलिदान देकर भारत माता को बेड़ियों से मुक्त कराया था।

महाभारत काल के पाँच हजार वर्षों बाद समस्त बुराइयों को दूर करने वाले एक मात्र महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी पहले ऋषि हुए। सन् १८८३ के दीपावली के दिन अनन्त यात्रा में जाते हुए करोड़ों मानवों में आत्मिक ऊर्जा के करोड़ों दीप जला गए। धन्य हो ऋषि दयानन्द जी।

द्वितीय चुनौती वेदों के रूढ़ी अर्थों को शुद्ध करने की थी

भारत का धर्म वेदों से बन्धा हुआ था, क्योंकि महर्षि दयानन्दजी से पूर्व विद्वानों ने वेदों के मन्त्रों के अर्थ इतिहास परक किए थे। शंकराचार्य, सायणाचार्य, महीधर, जेकोवी, मैक्समूलर आदि विद्वानों ने वेदों के अर्थ किए कि वेद स्त्रियों को नहीं पढ़ाना चाहिए, शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं है। वर्ण व्यवस्था जन्म से होनी चाहिए। दलित वर्ग को समाज में दास के रूप में रहना चाहिए। कल्पित देवताओं की पूजा करनी चाहिए और देवी-देवताओं के नाम पर पशु बलि देनी चाहिए। भूत-प्रेत, जादू-टोना वेदों में लिखा है। उन्होंने वेदों के रूढ़ी अर्थ करके सम्पूर्ण समाजवादी व्यवस्था को अन्धविश्वास के कुएँ में ढकेल रखा था। महर्षि दयानन्दजी ने वेदों के रूढ़ी अर्थों पर प्रहार किया और निरूक्त शास्त्र के अनुसार उन्होंने सिद्ध किया कि वेदों में जो कुछ लिखा है उसी को ईश्वर विधान मानते थे, क्योंकि वेद ईश्वरीय ज्ञान है। वे संस्कृत के अगाध पण्डित थे। उन्होंने सिद्ध किया कि वेदों में स्त्री और शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार है, वेदों में मूर्ति पूजा नहीं है, वेदों में पशुबलि नहीं है, वेदों में तन्त्र-मन्त्र प्रेत पूजा नहीं है, वेदों में जाति व्यवस्था नहीं है। वर्ण व्यवस्था है। वेदों में कोई भी धार्मिक, सामाजिक,

अन्धविश्वास नहीं है। उन्होंने सिद्ध किया कि ईश्वर ने सृष्टि आदि में ऋषियों की आत्मा में वेदों का ज्ञान, सृष्टि क्रमानुसार विज्ञान के अनुसार दिया है। इसलिए वेदों के मन्त्रों के अर्थ भी ईश्वरीय विधान के अनुसार है। वेद पहले बने और इतिहास बाद में, इसलिए वेदों के अर्थ रूढ़ि नहीं है।

तृतीय चुनौती धार्मिक अन्धविश्वासों द्वारा हानि की थी

तथाकथित हिन्दू धर्म की आधारशिला वेद थे। महर्षि दयानन्दजी ने वेदों के रूढ़ीवादी अर्थों पर प्रहार कर सारे दृष्टिकोण को बदल दिया। ऋषि अपने ग्रन्थों में लिखते हैं कि धर्म परमात्मा द्वारा बनाया है और मत मनुष्यों द्वारा बनाए जाते हैं। वास्तव में जिन्हें समाज धर्म का नाम देता है वह मत है और प्रत्येक मतों में भिन्नता है, किन्तु ईश्वरीय धर्म एक ही रहता है। ईश्वरीय धर्म जैसे सूर्य, चन्द्रमा, ऋतुएँ, पृथ्वी तत्व, रात–दिन, जन्म–मरण, वनस्पति, प्रत्येक पदार्थ नियम में सदैव रहते हैं और अपने स्वरूप को कभी नहीं बदलते जैसे आँख का देखना, कान का सुनना कभी नहीं बदलता और मृत्यु के उपरान्त दूसरे जन्म में वही प्रतिक्रिया होती है, उसी को ईश्वरीय धर्म कहते हैं और मत, देश, काल, परिस्थिति से बनते और मिटते रहते हैं। आर्य समाज और वैदिक धर्म को छोड़कर आज सारा संसार मतों को धर्म मानकर धार्मिक अन्धविश्वास के पाटों में पिस रहा है। महर्षि दयानन्दजी ने धर्म का वास्तविक स्वरूप सबके सामने रखा और तमाम धार्मिक अन्धविश्वासों को समाप्त करने के लिए सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ लिखा और आर्य समाज रूपी क्रान्तिकारी संगठन बनाया।

चतुर्थ चुनौती सामाजिक रूढ़िवाद को समाप्त करने की थी

हजारों वर्षों की गुलामी के कारण भारतीय समाज में मानवता की भावना समाप्त हो रही थी, फलस्वरूप घूँघट प्रथा, देवदासी प्रथा, बाल विवाह प्रथा, दास प्रथा, दहेज प्रथा, सती प्रथा, जाति–पाति प्रथा, छुआछूत प्रथा, काल्पनिक देवताओं की पूजा प्रथा, शूद्रों और नारियों को न पढ़ाने की प्रथा, मृत्यु भोज, पिण्डदान, मृतक श्राद्ध तर्पण प्रथा आदि अनेक घातक सामाजिक बुराइयों से भारत की जनता त्रस्त थी। महर्षिजी ने इस वेदना को समझा और उक्त तमाम बुराइयों के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया। उन्होंने हिन्दू को आर्य बनाते हुए वेदों के रंग में रंग दिया और सभ्य समाज की रूप रेखा बना दी। उसी को लेकर २०वीं शताब्दी के अनेक राजनैतिक व सामाजिक नेताओं ने कार्य किया तथा भारत सरकार ने कानून का रूप दिया।

पंचम चुनौती राजनैतिक क्षेत्र में रूढ़िवाद पर प्रहार किया

राजनैतिक क्षेत्र में जिसका राज चला आ रहा था वही ठीक है। यह रूढ़ी विचार थे। महर्षि दुःखी मन से सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि **अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर विरोध से अन्य देशों में राज्य करने की कथा ही क्या कहनी किन्तु आर्यावर्त में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है जो कुछ है सभी विदेशियों से पदाक्रान्त हो रहा है, जब दुर्दिन आता है तब देशवासियों को अनेक प्रकार का दुःख भोगना पड़ता है। कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। मतमतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराए का पक्षपात शून्य प्रजा हितकर माता–पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं हो सकता।** 'जो है सो ठीक है' इसी रूढ़िवादी भावना पर ऋषि दयानन्दजी ने धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक क्षेत्र में सीधी चोट की। इसलिए वह तमाम बुराइयों को मिटाने वाले पहले ऋषि हुए।

नोट : आज महर्षि दयानदजी द्वारा स्थापित वैचारिक क्रान्ति को समर्पित आर्य समाज सम्पूर्ण विश्व में अपना परचम फहरा रहा है। एक दीप करोड़ों–करोड़ों दीपों को प्रज्ज्वलित कर गया।

बलिदान (निर्वाण) दिवस

आई दीपावली की रात निराली कितनी उजली कितनी काली।
उस कालजयी युगद्रष्टा ने वैदिक सम्पत्ति का संग्रह किया।
वेदों के उद्धारक बन विश्व का था उपकार किया।
राजाओं की समस्त सम्पदाओं को नकार दिया।
वेदों का मन्थन कर केवल ईश्वर के अस्तित्व को ही स्वीकारा था।
शास्त्रार्थ हेतु पण्डित मुल्ला पादरियों को भी ललकारा था।
सत्य ही उसका अस्त्र था, वेद ही उसका शस्त्र था।
वेदोमय ही जीवन था। कथनी करनी में न कुछ अन्तर था।
अन्धकारमयी रात्रि में लुटा रहा था ज्ञान की प्याली,
बारम्बार विषपान किया। पर अमृत घट हुआ न खाली
मृत्यु का कर आह्वान विश्व को था सन्देश दिया।
मिटाकर स्वयं को, आलोकित वह हर दीप में हुआ।
आत्मा का परमात्मा से साक्षात् संवाद किया।
सुनकर गुरुदत्त विद्यार्थी को भी ईश्वर पर विश्वास हुआ।
ऋषि की शिक्षाओं को धारण कर वेदों का सारी उम्र प्रचार किया।
योग तप-बल की अनुपम शक्ति से विश्व में था चमत्कार किया।
निर्वाण की अन्तिम वेला में निराकार का ध्यान किया।
प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो कह जग से प्रस्थान किया।
जग रोया, ऋषि हंसकर चल दिया अकेला।
अपनी अनुपम कृतियों से अमर हो गया वह महामानव अलबेला।
ध्येय आर्यों का हो ऋषिवर की शिक्षाओं को आदर्श बना।
मनसा, वाचा, कर्मणा से हर कर्त्तव्य का पालन करना।
वेदों का प्रचार-प्रसार पावन धर्म हों। आर्यों का सत्य-निरूपण हेतु उद्यत रहो।
बलिदान भी हो स्वयं प्राणों का सत्यार्थ प्रकाश ही माध्यम हो।
विश्व के अन्धकार मिटाने का **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** ही सूत्र हो।
सबको एकमंच पर लाने का **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** ही नारा हो।
सब भेदभाव मिटाने का **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'**
का स्मरण करें। मन से द्वेष हटाने का।

● सुश्री आदर्श आर्या
निकट आर्य समाज साकेत, मेरठ (उ.प्र.)
चलभाष : ९५५७८७३६३३

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय

गतांक पृष्ठ १५ से आगे

● ई. चन्द्रप्रकाश महाजन
प्रधान : आर्य समाज नूरपुर, जसूर (हि.प्र.)
चलभाष : ८६२७०४१०४४, ९४१८००८०४४

ध्यान देकर सुनिये की जैसा दुःख-सुख अपने को होता है, वैसा ही औरों को भी समझा कीजिए और यह भी ध्यान में रखिए कि वे पशु आदि और उनके स्वामी तथा खेती आदि कर्म करने वाले प्रजा के पशु आदि और मनुष्यों के अधिक पुरुषार्थ ही से राजा का ऐश्वर्य अधिक बढ़ता और न्यून से नष्ट हो जाता है।

इसीलिए राजा प्रजा से कर लेता है कि उनकी रक्षा यथावत् करे, न की राजा और प्रजा के जो सुख के कारण गाय आदि पशु हैं उनका नाश किया जाये। इसलिए आज तक जो हुआ सो हुआ, आगे आँखें खोलकर सबके हानिकारक कर्मों को न कीजिए ओर न करने दीजिए। हाँ, हम लोगों का यही काम है कि आप लोगों को भलाई और बुराई के कामों को जता दें, और आप लोगों का यही काम है कि पक्षपात छोड़ सबकी रक्षा और बढ़ती करने में तत्पर रहें। सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर हम और आप पर पूर्ण कृपा करें कि जिससे हम और आप लोग विश्व के हानिकारक कर्मों को छोड़कर सर्वोपकारक कर्मों को करके सब लोग आनन्द में रहें। इन सब बातों को सुन कर मत भूला डालना, किन्तु सुन रखना, इन अनाथ पशुओं के प्राणों को शीघ्र बचाना।

हे महाराधिराज जगदीश्वर! जो इनको कोई न बचाये तो आप इनकी रक्षा करने और हम से कराने में शीघ्र उद्यत होवे।

२७. वेदांगप्रकाश

संस्कृत व्याकरण का सरल-सुबोध रीति से ज्ञान कराने के लिए ऋषि दयानन्द ने चौदह भागों में वेदांग प्रकाश शीर्षक से ग्रन्थमाला का प्रकाशन किया। ऋषि दयानन्द ने सर्वसाधारण को संस्कृत का ज्ञान कराने के लिए पाणिनीय व्याकरण की प्रक्रिया के ढंग पर आर्यभाषा (हिन्दी) में व्याख्या कराई और उनमें शिक्षा तथा निघण्टु का समावेश करके उनका ''**वेदांगप्रकाश**'' साधारण नाम रखा। स्वामी जी वैसे तो वेदों का संस्कृत और आर्यभाषा में भाष्य कर ही रहे थे, परन्तु अब उन्होंने आर्यसमाजों के कहने से वेदों के अंग शिक्षा व्याकरणादि और उपांगादि को भी अति सुलभ आर्यभाषा में प्रकाश करने का कार्य आरम्भ किया। जिस से मनुष्य शीघ्र संस्कृत विद्या को पढ़कर मनुष्य जन्म के आनन्द को भोगे।

उस समय संस्कृत भाषा को पढ़ाने के लिए हिन्दी में रचना करने वाला दूसरा कोई व्यक्ति नहीं था। ऋषि दयानन्द ही पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने आर्यभाषा में संस्कृत व्याकरण के ग्रन्थों की रचना की। वेदांगप्रकाश के सभी भागों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है:-

१. वर्णोच्चारण शिक्षाः- (१८७९ ई.) स्वामी जी क्योंकि स्वयं महान् वैयाकरण थे, अतः उनकी कामना थी कि प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक शब्द का शुद्ध उच्चारण करे। पुस्तक के उपसंहार में स्वामीजी लिखते हैं **''सब मनुष्यों के लिए जो-जो बात लिखी है, उसका ठीक-ठीक ज्ञान विद्यार्थियों को कराकरके शब्दाक्षरों के प्रयोग ज्यों के त्यों कर प्रशंसित हों...''** ऋषि ने पाणिनीय शिक्षा की आर्यभाषा में व्याख्या की है।

२. संधिविषय - (१८८० ई.) पुस्तक में ११९ पृष्ठ हैं। इसके उद्देश्य के विषय में स्वामीजी ने लिखा है– **''मैने यह पुस्तक इसलिए बनाया है कि जिससे व्याकरण में जितना संधि का विषय है उसको पढ़ने हारे सुख से समझ लेवें। इस ग्रन्थ में लोक और वेद का विषय सम्पूर्ण रखा है।''** इसमें तीन प्रकरण हैं (१) संज्ञा, (२) परिभाषा (३) साधन प्रकरण।

(क्रमशः आगामी अंक में)

हृदय विदारक दो घटनाएँ

सीकर (राजस्थान) निवासी मेरे भतीजे हरिराम जांगिड निवासी विकास कॉलोनी, पिपराली रोड) के ज्येष्ठ सुपुत्र **सुमित जांगिड** का ३५ वर्ष की अल्पायु में दिनांक १३.१०.२०२३ को अपने कार्य स्थल पर मोटर साईकल से जाते समय एक पिक अप (लोडिंग) की चपेट में आने से दु:खद निधन हो गया। आप अपने पीछे माता–पिता, धर्मपत्नी श्रीमती निहारिका, छोटा भाई अमित अनुज वधु तथा दो छोटे–छोटे पुत्रों कृष्णा व रोहन को रोता–बिलखता छोड़ गए।

इसी प्रकार ग्राम बहिन, जिला पलवल (हरियाणा) निवासी आर्य जगत् के सुविख्यात भजनोपदेशक पं. नन्दलाल निर्भय के सुपुत्र **जयदेव आर्य** जो कि एक दुर्घटना में दिनांक २४ जून २०१४ को घायल हो गए थे, तब से आपका निरन्तर उपचार चल रहा था। दिनांक १२.१०.२०२३ को अचानक हृदयाघात से ३८ वर्ष की अल्पायु में आपका दु:खद निधन हो गया। आप अपने पीछे वयोवृद्ध माता–पिता, धर्मपत्नी श्रीमती स्नेहलता, एक पुत्र उत्तमप्रकाश तथा एक पुत्री कु. मान्यता को रोता–बिलखता छोड़ गए हैं।

दोनों दिवंगत आत्माओं के प्रति वैदिक संसार परिवार गहन संवेदना के साथ अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता है तथा दोनों परिवार के परिजनों को इस वज्रपात को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना परमपिता परमात्मा से करता है।

–सुखदेव शर्मा (प्रकाशक वैदिक संसार)

शोक संवेदना

दिल्ली की समस्त आर्य समाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं की शिरोमणि संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत कार्यरत प्रतिष्ठानों एवं प्रकल्पों के समस्त अधिकारी, कार्यकर्ता एवं सदस्यगण आर्य समाज के वरिष्ठ भजनोपदेशक, कविहृदय, हरियाणा सहित दिल्ली में भी प्रचार कार्यों में संलग्न श्री नन्दलाल निर्भय के सुपुत्र श्री जयदेव आर्य जी के अकस्मात देहावसान पर गहरा दु:ख एवं शोक व्यक्त करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्रदान करें तथा उनके वियोग में दु:खी आर्य परिवारों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति तथा सामर्थ्य प्रदान करे।

गहरी शोक संवेदनाओं के साथ...

–विनय आर्य
महामन्त्री : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली
चलभाष : ९९५८१७४४४१

दीपावली- महर्षि दयानन्द और आर्य समाजी

● पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य
आर्य सदन बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा)
चलभाष : ९८१३८४५७७४

आर्यावर्त्त (भारत) पर्वों एवं त्योहारों का देश है। भारत में समय–समय पर ऋतु अनुसार सैकड़ों पर्व मनाए जाते हैं। इतने पर्व संसार के किसी भी देश में नहीं मनाए जाते। इन पर्वों के मनाने के पीछे भारी रहस्य छिपा हुआ है। इन पर्वों में वेदश्रावणी उपाकर्म (सलोजा) अर्थात् रक्षा बन्धन, विजय दशमी, दीपावली, नव संस्येष्टि यज्ञ (होली) का विशेष महत्व है। ये पर्व आर्य पर्व है और ये आदिकाल से मनाए जाते हैं। आज हम केवल वैश्य पर्व दीपावली पर ही प्रकाश डालते हैं।

दीपावली का अर्थ है दीपों की माला अर्थात् दीपों की कतार। यह पर्व कार्तिक मास की अमावस्या को बड़ी धूमधाम से सकल विश्व में मनाया जाता है। इस दिन आर्यजन जगह–जगह बड़े–बड़े यज्ञ (हवन) करते हैं तथा वैदिक विद्वानों द्वारा जन कल्याण के लिए भजन–प्रवचन कराए जाते हैं। कुछ नादान व्यक्ति इस दिन जुआ खेलते हैं, चोरी करते हैं और मद्य–मांस का सेवन करते हैं जो वेद विरुद्ध अनैतिक कर्म हैं। हमें ऐसे समाज विरोधी तत्वों से सावधान रहते हुए समाज को बुराइयों से बचाना चाहिए।

दीपावली पर्व मनाने के पीछे व्यक्तियों के अलग–अलग विचार हैं। कुछ लोग कहते हैं कि विजय दशमी (दशहरा) के दिन वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र ने लंका के राजा राक्षसराज रावण को युद्ध क्षेत्र में मारा था तथा वे दीपावली के दिन वापस सीता तथा लक्ष्मण सहित अयोध्या लौटे थे तथा अयोध्या वासियों ने उनके वापस आने की खुशी में घी के दीप जलाए थे तभी से यह महापर्व मनाया जाता है। वास्तव में यह विचार सच्चाई के विरुद्ध है क्योंकि श्रीराम का वनवास गमन चैत्र मास में हुआ था तथा श्रीराम ने वाल्मीकि रामायण के अनुसार रावण का वध चैत्र शुक्ल अमावस्या को किया था। सन्त तुलसीदास जी ने अपने रचित ग्रन्थ रामचरित मानस में रावण का वध दिवस चैत्र शुक्ल चौदस लिखा है। इसलिए श्री राम का दीपावली के दिन अयोध्या लौटने का विचार निराधार है। दीपावली पर्व को तो श्री रामचन्द्रजी के पूर्वज महाराजा रघु तथा महाराजा दिलीप भी मनाते थे। कुछ व्यक्ति कहते हैं कि जैन मत के प्रवर्तक महावीर स्वामी का निधन दीपावली के दिन हुआ था, उनकी याद में यह पर्व मनाया जाता है। हमारे सिख भाई कहते हैं कि गुरु अर्जुनदेवजी इस दिन मुगलों की जेल से छूटकर आए थे तथा इस खुशी में यह त्यौहार मनाया जाता है। कुछ व्यक्ति कहते हैं कि भगवान रामतीर्थजी का दीपावली को स्वर्गवास हुआ था। उनकी याद में यह त्योहार मनाया जाता है।

वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् जगत् गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी ने संसार को वैदिक ज्ञान सिखाया था। योगिराज श्री कृष्णचन्द्र महाराज के पश्चात् महर्षि दयानन्द जैसा त्यागी–तपस्वी, परोपकारी, ईश्वरभक्त, धर्मात्मा, देशभक्त, वैदिक विद्वान् संसार में दूसरा व्यक्ति कोई पैदा नहीं हुआ। महर्षि दयानन्द ने धर्म का सच्चा स्वरूप संसार के सामने रखा था। उन्होंने संसार को कर्म प्रधानता का पाठ पढ़ाकर जन्म–जाति, छुआछूत, ऊँच–नीच का भेद मिटाया था। नारियों और शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार दिलाया था। सबसे पहले भारतवासियों को आजादी का पाठ सर्वप्रथम महर्षि दयानन्दजी ने ही पढ़ाया था तथा गोकरुणानिधि पुस्तक लिखकर गऊ को माता बताकर गौसेवा करने की शिक्षा सारी दुनिया को दी थी।

महर्षि दयानन्द महाराज को वेद प्रचार का पवित्र कार्य करने में भारी कष्टों का सामना करना पड़ा था। वे भारत की दुर्दशा को देखकर रो पड़ते थे तथा रात को ठीक तरह सोते भी नहीं थे। विरोधी दुष्ट लोगों ने उन पर गोबर, ईंटें, फेंकी तथा अनेक बार हलाहल विष पिलाया फिर भी वे मुस्कराते रहे। अंतिम बार तो अंग्रेज शासकों ने तथा पाखण्डी लोगों ने नन्ही जान वेश्या से मिलकर उनके रसोइया जगन्नाथ को लालच देकर महर्षि दयानन्द को दूध में मिलाकर पिसा हुआ शीशा पिलवा दिया फिर भी वे घबराए नहीं तथा जगन्नाथ को बुलाकर कहा बेटे मुझे केवल एक ही दु:ख है कि मैंने जो वेद प्रचार एवं विश्व जागृति का पावन कार्य प्रारम्भ किया था वह अधूरा रह गया। तूने लालच में आकर यह कार्य किया है, लेकिन तुझे कुछ भी नहीं मिलेगा। मैं तुझे पाँच सौ रुपए दे रहा हूँ, तू यहाँ से दूर नेपाल देश में चला जा। तेरे प्राण बच जाएँगे। अन्यथा सवेरे पता चलने पर लोग तुझे जान से मार देंगे।' ऐसे दयालु थे, देव गुरु दयानन्द। संसार में ऐसा महान् व्यक्ति कहीं भी नहीं मिलेगा।

आर्यो! महर्षि दयानन्दजी का हम पर भारी ऋण है जिसे हम सौ जन्म में भी नहीं चुका सकते। सच्चाई तो यह है —

सुनो आर्यो! भारत में यदि, देव दयानन्द ना आते।
राम, कृष्ण के प्यारे वंशज, कहीं नहीं जग में पाते।।
वह वीर साहसी योगी था, जीवन में कभी न घबराया।
वह जग को अमृत पिला गया, था मात यशोदा का जाया।।

आर्यो! महर्षि दयानन्द देव पुरुष युगनायक थे, तुम अपने सच्चे हित चिन्तक महान् गुरु को मत भूलो। गुरुदेव को उपकारों को याद करो और वेद प्रचार में पण्डित लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय, स्वामी दयानन्द सरस्वती बनकर कर्म क्षेत्र में कूद पड़ो। जरा विचार करो महर्षि दयानन्दजी ने दीपावली के दिन हँसते हुए अपने प्राण धर्म रक्षा में त्यागे थे। स्वामीजी ने अकेले होते हुए भी कभी किसी से भय नहीं खाया था। वे लालच से, कोसों दूर थे गलत बातों से। उन्होंने कभी समझौता नहीं किया था और तुम आर्य समाजी पदों–सम्पत्तियों के लालच में आपस में लड़ रहे हो। याद रखो, यह धन–दौलत तुम्हारे साथ नहीं जाएगी। अगर अपना भला चाहते हो तो मेरी बात ध्यान से सुन लो-

जो मानव संसार में, करते उलटे काम।
मिट जाते हैं एक दिन, हो करके बदनाम।।
जगत पिता जगदीश को, रखो हमेशा याद।
मानव तन अनमोल है, करो न तुम बर्बाद।।
सत्य सादगी धार लो, करो भलाई मीत।
धर्मवीर बन विश्व को लोगे निश्चित जीत।।
नारायण स्वामी बनो, करो वेद प्रचार।
'नन्दलाल' होगी सुनो, जीवन नौका पार।।

'ऋषि को अश्रुपूरित अन्तिम विदाई'

● सत्यकेतु आर्य (शास्त्रीजी)
२३/३, शास्त्री नगर,
निकट काली मठिया मन्दिर, कानपुर (उ.प्र.)
चलभाष : ९८३९१११६८३, ९१९८१६०३२८

ऋषि दयानन्द ने भयंकर विपरीत परिस्थितियों में सत्य का मण्डन और पाखण्ड का खण्डन किया इसलिए सभी उनके विरोधी हो गए। उनके प्राण हरण की भयंकर चेष्टा की गई। जो उनके भरोसेमन्द थे वे सब निकम्मे निकले।

२९ सितम्बर १८८३ को रात में शाहपुरा निवासी घौड़ मिश्र रसोइया द्वारा दिए गए दूध को पीकर सोए। उसी रात में उन्हें उदर शूल व वमन हुआ। फिर डॉक्टर अलिमर्दान खां की चिकित्सा आरम्भ हुई, लेकिन रोग बढ़ता गया। उनके इलाज से दस्त अधिक आने लगे, लेकिन इससे भी बड़ी बात यह कि किसी आर्य समाज या अन्य को ऋषि की बीमारी की सूचना नहीं दी गई।

बाद में १२ अक्टूबर १८८३ को अजमेर के आर्य सभासद ने राजपूताना गजट में रोग का समाचार पढ़ा। तब दूसरे लोगों को पता लगा।

लेकिन १५ अक्टूबर तक स्वामीजी की दशा पूर्णत: निराशाजनक हो गई। वहाँ से उन्हें आबू और फिर अन्त में भक्तों के आग्रह करने पर उन्हें अजमेर पहुँचाया गया। अजमेर पहुँचने पर डॉक्टर लछमन दास ने चिकित्सा आरम्भ की, लेकिन कोई लाभ न हुआ। २९ अक्टूबर को हालत और खराब हो गई उनके पूरे शरीर पर फफोले पड़ गए। जी घबराने लगा। बैठना चाहते थे, लेकिन बैठा न गया।

अन्त में आखिर वह दिन आया ३० अक्टूबर १८८३ अमावस्या संवत १९४० मंगलवार दीपावली का दिन। दूसरा डॉक्टर बुलाया गया पीर इमाम अली हकीम अजमेर से बुलाए गए। बड़े डॉक्टर न्यूटन साहब ने भी इलाज किया। लेकिन लाभ न हुआ। कहते हैं उनका मूत्र कोयले के समान काला हो गया था। स्वामीजी ने अपने आप पानी लिया हाथ धोये, दातुन की और बोले हमें पलंग पर ले चलो। पलंग पर थोड़ी देर बैठे फिर लेट गए।

श्वास तेज चल रही थी जिन्हें रोककर वे ईश्वर का ध्यान करते थे। फिर लोगों ने हाल पूछा तो कहने लगे एक मास बाद आज आराम का दिन है। इस तरह चार बज गए। स्वामीजी ने आत्मानन्द से कहा हमारे पीछे आकर खड़े हो जाओ या बैठ जाओ। फिर आत्मानन्द से पूछा क्या चाहते हो? उन्होंने कहा सब यही चाहते हैं कि आप ठीक हो जाएँ। स्वामीजी ठहर कर बोले कि ये शरीर है इसका क्या अच्छा होगा और हाथ बढ़ाकर उसके सिर पर धरा और कहा आनन्द से रहना।

फिर स्वामीजी ने काशी से आए संन्यासी गोपाल गिरि से भी पूछा। उसने भी यही उत्तर दिया। जब यह हाल अन्य बाहर अलीगढ़, मेरठ, कानपुर आदि से आए लोगों ने देखा तो वे स्वामीजी के सामने आकर खड़े हो गए। आँखों से आँसू बह रहे थे तब स्वामीजी ने उन्हें ऐसी कृपा दृष्टि से देखा कि उसको बोलना या लिखना असम्भव है। मानो ईश्वर से कह रहे हो कि हे ईश्वर! मैं अपने इन बच्चों को तेरे सहारे छोड़कर जा रहा हूँ और उनसे कह रहे हो उदास मत हो, धीरज रखो। दो दुशाले और दो सौ रु. भीमसेन और आत्मानन्द को देने को कहा, किन्तु उन्होंने न लिए।

लोगों ने पूछा आपका चित्त कैसा है। कहने लगे अच्छा है तेज व अन्धकार का भाव है। इस तरह साढ़े पाँच बज गए। स्वामीजी बोले सब आर्यजनों को बुलाओ और मेरे पीछे खड़ा कर दो, केवल आज्ञा की देर थी, तुरंत सब आ गए। तब स्वामीजी बोले चारों ओर के द्वार खोल दो, छत के दोनों द्वार भी खोल दिए। फिर रामलाल पाण्डे से पूछा आज कौनसा पक्ष, तिथि व वार है? किसी ने कहा आज कृष्ण पक्ष का अन्त और शुक्ल पक्ष का आदि अमावस्या, मंगलवार है। यह सुनकर कोठे की छत और दीवारों पर नजर डाली फिर वेदमन्त्र पढ़े, उसके बाद संस्कृत में ईश्वर की उपासना की।

फिर ईश्वर का गुणगान करके बड़ी प्रसन्नता से गायत्री का पाठ करने लगे। फिर कुछ समय तक समाधि में रहकर आँख खोलकर बोले—

'हे दयामय, हे सर्वशाक्तिमान ईश्वर,
तेरी यही इच्छा है, तेरी यही इच्छा है,
तेरी इच्छा पूर्ण हो, अहा! तैने अच्छी लीला की।'

बस इतना कह स्वामीजी महाराज ने जो सीधा लेट रहे थे, स्वयं करवट ली और एक झटके से श्वास रोककर बाहर निकाल दिया। इस तरह कलयुग का यह महामानव शरीर रूपी पिंजरा छोड़कर आर्यों को रोता, बिलखता छोड़कर परलोक की यात्रा पर चल दिया। उस समय शाम के छ: बजे दिवाली का दिन ३० अक्टूबर १८८३ का समय था। बाहर पंक्तिबद्ध दीपक जलते हुए मानो इस वेद रूपी ज्ञान का प्रकाश करने वाले अस्त होते सूर्य को अन्तिम विदाई दे रहे हो। चमकेंगे जब तक ये सूरज–चाँद और तारे। हम हैं ऋषि दयानन्द तब तक ऋणी तुम्हारे।।

ऋषिवर को कोटि–कोटि नमन।

चित्त

जैसे खेत खाली
खरपतवारों से भर जाते हैं।
हो न प्रकाश वहाँ
अन्धकार छा जाते हैं।
निरजन बस्ती कोई वहाँ
वीराने पसर जाते हैं।
वैसा ही है चित्त मेरा
दृढ़ कोई विश्वास नहीं तो
अन्धविश्वास पनप जाते हैं।
न हो ज्ञान तो अज्ञान पूज जाते हैं।
सत्य ज्ञान तत्वों पर तर्कों से
इन्सान के जीवन बदल जाते हैं
करनी कथनी एक दे दिखाई
तो साधारण में भद्र नजर आते हैं।
चित्त कोरा कागज है हमारा
नहीं छपा हितकारी लेख तो
चित्त विक्षिप्त हो जाते हैं।

● ओम फक्कड़

यदि देव दयानन्द न आते

अज्ञान, पाखण्ड के अन्धकार से, हो रहा देश बर्बाद था।
यदि देव दयानन्द न आते, तो न होता देश आजाद था।।

राम, कृष्ण की इस पावन भूमि में लग गई अनेकों बीमारी थी।
सीता, सावित्री, गार्गी को न पढ़ाने से रखी जाती भीतर चार दिवारी थी।।
तेरह वर्ष की कन्या, अस्सी वर्ष के बूढ़े से, विवाह की हो जाती तैयारी थी।
जल्दी ही विधवा हो जाने से बाकी उम्र काटनी हो जाती बड़ी भारी थी।।
घर में इज्जत न होने से, नारकीय जीवन जीने को हो जाती उसे लाचारी थी।
नारी ही क्यों, शूद्र भाइयों को प्रेम की जगह घृणा-द्वेष की चोट जाती मारी थी।।
जिससे दु:खित होकर, वे अपने ही भाई विधर्मी बनने तक की कर लेते तैयारी थी।
घटते जाते थे हमारे हिन्दू भाई समाप्त हो जाने की आ रही जल्दी ही बारी थी।।
ऋषि दयानन्द ने आकर किया इलाज शुद्धि दवा से उस फोड़े का जिसमें पड़ गया मवाद था।
यदि देव दयानन्द न आते...।।१।।

हमारी वैदिक संस्कृति में गाय, गायत्री, ब्राह्मण की इज्जत होती सब से न्यारी थी।
गऊ माता की तो बात न पूछो, उसके ऊपर तो चल रही जालिम की तेज कटारी थी।।
वेदों का पठन-पाठन बहुत वर्षों से बन्द होने से, गायत्री माता भी फिर रही मारी-मारी थी।
ब्राह्मण वैदिक मार्ग छोड़ स्वार्थी हो गए, कर दी अनेकों अवैदिक प्रथाएँ जारी थी।।
स्वार्थ सिद्धि मुख्य ध्येय हो गया, लगा दी पेट भरने में ही अपनी बुद्धि सारी थी।
मूर्ति पूजा, मृतक-श्राद्ध तो थे ही, कई देवी-देवताओं की कथा पढ़ी जाने लगी न्यारी थी।।
वैदिक आधार पंच महायज्ञों, वर्ण-आश्रमों, संस्कारों की हालत होती जा रही अति बीमारू थी।
ऐसे में देव दयानन्द आए किया वेदों का प्रचार, तब से वेदों को किया जाने लगा याद था।।
यदि देव दयानन्द न आते...।।२।।

वेदों के प्रचार से अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड का अन्धेरा दूर भाग गया।
इस वैदिक ज्ञान के दिव्य प्रकाश से केवल भारत ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व जाग गया।।
अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड प्राय: नष्ट हो जाने से मानो जल रोशनी का चिराग गया।
जिससे आई नव जागृति, तब कुटिल अंग्रेज १५ अगस्त १९४७ को भारत छोड़ भाग गया।।
लेकिन जाते-जाते बनाकर पाकिस्तान, लगाकर हिन्दू-मुस्लिम में झगड़ा लगा, देश में आग लगाया।
भारत की छाती पर मूँग दलने के लिए पाकिस्तान रूपी छोड़ जहरीला नाग गया।।
आज सैनिक शक्ति व मोदीजी के कुशल प्रशासन से पाक समेत सभी विदेशों से भय भाग गया,
अब जल्दी ही 'खुशहाल' देखना चाहता है भारत को वैसा ही जैसा वैदिक काल में उन्नत व आबाद था।
यदि देव दयानन्द न आते...।।३।।

● खुशहालचन्द्र आर्य
द्वारा- गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स
१८०, महात्मा गान्धी मार्ग, कोलकाता
चलभाष : ९८३०१३५७९४

भक्ति संग ज्ञान

(तर्ज- जातो रो डाबाड़ी म्हाने छाने...)

भक्ति के संग वेद ज्ञान की, ज्योति अगर जला लोगे।
ईश्वर का सही रूप जानकर, मोक्ष मार्ग को पा लोगे।।१।।

बिना ज्ञान के कोरी भक्ति, अन्ध श्रद्धा बन जाती है।
मृग मरीचिका सी जीवों को, रास्ते से भटकाती है।।२।।

मुँह से राम भजो प्राणी तो, मर्यादा का ध्यान धरो।
मारो रावण अपने मन का, अहंकार को दूर करो।।३।।

कृष्ण भजे कुछ ना पाओगे, उनके जैसा योग करो।
गीता ज्ञान को कर्म बनाकर, अपना जीवन धन्य करो।।४।।

सत्यनारायण कथा को सुनकर, क्या झूठे तर जायेंगे।
सत्य वचन ईश्वर का प्यारा, जब तक ना अपनायेंगे।।५।।

बेईमान-ठग-चोर उचक्के, जब मन्दिर में जायेंगे।
उनकी रक्षा की क्या भगवान, रिश्वत को अपनायेंगे।।६।।

त्याग ऐश्वर्य करो तपस्या, बोध दयानन्द सा पा लोगे।
व्रत धरकर मध्यम मार्ग का, जीवन सफल बना लोगे।।७।।

कह रमेश ईश्वर पाने को, काम सभी निष्काम करो।
वेद ज्ञान की ज्योति जलाकर, फिर ईश्वर का ध्यान करो।।८।।

● रमेशचन्द्र भाट
कोषाध्यक्ष : आर्य समाज रावतभाटा
जनपद : चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
चलभाष : ९४१३३५६७२८

यज्ञ वैज्ञानिक शोध पर आधारित घातक रोगों से सुरक्षित करने की थैरेपी है: डॉ. श्वेतकेतु

बेंगलौर। कर्नाटक की राजधानी बंगलौर के सुप्रसिद्ध आर्य समाज मारतहल्ली द्वारा आयोजित यज्ञ पर विशेष संगोष्ठी में बतौर मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित राजनैतिक विश्लेषक व सुविख्यात विद्वान् डॉ. श्वेतकेतु शर्मा, वैदिक प्रवक्ता ने **'यज्ञ का वैज्ञानिक व सामाजिक परिप्रेक्ष्य'** विषय पर व्याख्यान प्रदान किया। इस अवसर पर डॉ. श्वेतकेतु ने कहा कि आज के विज्ञान के क्षेत्रों में असाधारण प्रगति, देश में विभिन्न धातक रोगों के सरकारी दावें तथा देश में फैल रहे प्लेग, तपेदिक, कोढ़, स्वाइन फ्लू, डेंगू, मलेरिया, वायरल फीवर, एड्स, चर्मरोग, हृदय रोग, गुर्दा रोग, कोरोना वायरस आदि जैसी भयंकर बीमारियों की उपस्थिति व निरंतर प्रसार से विश्व सकते में हैं। दिनोंदिन बढ़ता चला जा रहा है। इन रोगों के पीछे गन्दगी, गरीबी, आबादी, औद्योगिकीकरण, वैभव, विलासिता, अदूरदर्शी योजनाएँ व अव्यावहारिक नीतियाँ, आपसी सामन्जस्य का अभाव व दृढ़ इच्छाशक्ति का न होना भी है।

भारतीय ऋषि-मुनियों के वैदिक चिन्तन पर आधारित यज्ञ मानव समुदाय के लिए महत्वपूर्ण हो रहा है। वेदों के परिप्रेक्ष्य में यज्ञ वैदिक संस्कृति व आयुर्वेद के प्राण हैं। वेदों में **'यज्ञौ वै श्रैष्ठतम कर्म आयुर्यज्ञेन कल्पताम्'** कहा गया है। अर्थात् यज्ञ जीवन का श्रेष्ठतम कर्म है, यज्ञ से जीवन की रक्षा करें। यज्ञ को कर्मकांड की परिधि के साथ वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में देखने की जरूरत है। विभिन्न रोगों की रोकथाम व शारीरिक, मानसिक, पर्यावरण विशुद्ध करने तथा मनोकामनाओं को पूर्ण करने के लिये यज्ञ थैरेपी या यज्ञ महत्त्वपूर्ण है। यज्ञ से प्रदूषण को अल्प करने तथा वायुमंडल को आध्यात्मिक रूप से शुद्ध करने हेतु किया जाता है। अपितु यज्ञ के इस रहस्य के साथ शारीरिक स्वास्थ्य व वातावरण में व्यापक रूप से व्याप्त विभिन्न प्रकार के वायरल, बैक्टेरियल, फंगस व शरीर के विभिन्न अंग-प्रत्यंगों में व्याप्त रोगों को निष्क्रिय करने की वैदिक दार्शनिक वैज्ञानिक प्रामाणिक विधि भी है।

डॉ. शर्मा ने कहा शरीर को चलाने के लिए रस, रक्त, स्नायु विहीन नाड़ियाँ होती हैं। इसको प्रभावित करने के लिये आधुनिक चिकित्सा में इन्जेक्शन जो इन्ट्रावेनस, सबकुटेनियस, मस्कुलर आदि के द्वारा औषधि के माध्यम से चिकित्सा की जाती है व की जा रही है, परन्तु इससे भी कहीं सूक्ष्म वायु में मिश्रित हो कर शरीर में पहुँचाने वाली यदि कोई विधि है तो वह आयुर्वेदीय वैदिक यज्ञ थैरेपी ही है। यज्ञ का वैज्ञानिक आधार भी यही है कि अग्नि अपने में जलाई गई वस्तु को करोड़ों गुना अधिक सूक्ष्म बना देती है। प्रयोग के रूप में देखें तो एक लाल मिर्च अपने में उतनी तीखी नहीं होती परन्तु अग्नि में डाल कर जलाया जाये तो उसका प्रभाव दूर-दूर तक फैलता है। वैज्ञानिक स्तर पर फ्रांस के वैज्ञानिक डॉ. हाफकिन व डॉ. कर्नल किंग ने **अग्नि के सूक्ष्मीकरण सामर्थ्य** सिद्धांत के आधार पर प्रमाणित भी किया है। उन्होंने आग में घी जलाने व चावल, केसर के धुएँ से वातावरण की शुद्धता को प्रमुखता से प्रमाणित किया। यही यज्ञ थैरेपी का प्रारम्भिक स्वरूप है।

यज्ञ की वैज्ञानिकता पर बोलते हुए कहा कि आयुर्वेदीय यज्ञ से अग्नि में पदार्थ डालने पर स्थूल रूप सूक्ष्म रूप में परिवर्तित हो जाता है व होम द्रव्यों को परमाणु रूप करके वायु व जल के साथ मिलकर शुद्ध करती है। अग्नि में डालने पर सैकड़ों लोगों को प्रभावित करती है। ग्राह्य के गैसीय व्यापनशील नियम के अनुसार निश्चित ताप व दाब पर गैसों की व्यापन गतियाँ उसके धनत्व के वर्गमूल के विपरीत अनुपाती होती है। अर्थात् गैस जितनी हल्की होगी, वह उतनी ही शीघ्र वायु में मिल सकेगी। इसी को अथर्ववेद में कहा है- **'स्वाहा कृतेउर्धवनम्रसं मारूतं गच्छतम्'** यज्ञ में स्वाहा पूर्वक आहुति देने से वायु आकाश में व्याप्त होती है। इसी सिद्धांत के आधार पर अग्नि में डाला गया पदार्थ सूक्ष्म होकर दुर्गन्ध को दूर करता है व शरीर में प्रविष्ट होकर विभिन्न जीवाणुओं से सुरक्षित रखता है।

आपने कहा कि यज्ञ में कपूर,आम की समिधा, घृत, हवन सामग्री का प्रयोग किया जाता है, (१) कपूर आसानी से जलता हुआ अग्नि को प्रज्ज्वलित करने के लिये

आर्य समाज राजोदा, जिला देवास (म.प्र.) के तत्वावधान में
संगीतमयी रामकथा (वाल्मीकि रामायण आधारित)
दिनांक : १५ से १९ जनवरी २०२४
स्थान : ग्राम राजोदा, जिला देवास
वैदिक प्रवक्ता : **सुश्री अंजलि आर्या,** करनाल (हरियाणा)
चतुर्वेद शतकम यज्ञ
यज्ञ ब्रह्मा : **आचार्य विश्वामित्र आर्य**
सम्पर्क : **प्रधान हरिसिंह ठाकुर** (९४२५०४८११९)

प्रयोग किया जाता है, इसका कुछ भाग बिना किसी रासायनिक परिवर्तन के उड़ जाता है व वायु को सुगंधित करता है। शेष भाग सुगंध से दुर्गन्ध को छुपाने में सहयोगी होता है।

(२) आम या अन्य लकड़ियाँ जलने पर ५०० डिग्री तापांश देता है। लकड़ी का मुख्य भाग सैलुलोज व लिग्रोसेलुलोज में हाईड्रोजन ४७.६२ प्रतिशत, कार्बन २८.५७ प्रतिशत, ऑक्सीजन २३.८१ प्रतिशत होती है। सेलुलोज व लिग्रोसेलुलोज के आक्सीजन से हाईड्रोजन बनती है। सैलुलोज व लिग्रोसेलुलोज के साथ पानी मिल कर कार्बन डाई आक्साईड व पानी बनती है। यदि वायु निकलने का प्रवेश द्वार बन्द हो तो कुछ मात्रा में कार्बनमोनो ऑक्साइड निकलती है। इसलिए यज्ञ खुले स्थान पर होना चाहिए जिससे कार्बन मोनोऑक्साइड कम बने व वायु में मिल जाये। यज्ञ कुण्ड की बनावट, समिधाओं की लम्बाई, उसमें रखने की विधि तथा तापांश वायु की समुचित मात्रा देता है, जिससे कार्बन मोनोआक्साईड वायु में विलुप्त हो जाती है, और कोई हानि नहीं होती है। लकड़ी की आसवन क्रिया से कैल्शियम, पोटैशियम, मैग्नीशियम, एल्मोनियम, लोहा, मैगजीन, सोडियम, फास्फेट, गन्धक बनते हैं।

(३) घृत–ग्लिसराल व कार्बोक्सिलिक अम्लों के मेल से बना है। इसके जलने से कैप्रोनियम ऐल्डीहाइड, नार्मल आप्टिकल ऐल्डीहाइड तथा कई उड़नशील ऐल्डीहाइड व कई वाष्पशील वसीय अम्ल बनते हैं, जो वातावरण को शुद्ध व सुगंधित करते हैं।

(४) हवन सामग्री अग्नि में भलीभाँति प्रज्वलित हो जाती है। इसमें विभिन्न प्रकार की वनौषधियाँ होती है। अग्नि में जलने पर वायु में व्याप्त व शरीर में क्रियाशील वायरस व बैक्टेरिया को निष्क्रियता प्रदान करती है। इससे शरीर की प्रतिरोधक क्षमता का विकास भी होता है, नकारात्मक ऊर्जा समाप्त होती है।

डॉ. शर्मा ने व्याख्यान में यज्ञ पर वैज्ञानिक शोध में स्पष्ट किया कि डब्लू.एच.ओ. ने विश्व सर्वेक्षण में स्पष्ट किया है कि मानव जीवन के हितार्थ वैज्ञानिक जगत् में आ रही एन्टीबायोटिक, एन्टीपायरेटिक, पेन किलर तथा विभिन्न रोगों पर आ रही इन दवाओं का प्रभाव आगे आने वाले समय में प्रभावहीन हो रहा है। यदि डब्लू.एच.ओ. के इस सर्वेक्षण को मान लिया जाये तो आगे आने वाले समय में स्थिति भयंकर हो सकती है। जो अभी भी विभिन्न कोरोना वायरस रोगों की चिकित्सा में एन्टीबायोटिक के निष्प्रभावित होने का संकेत दिये हैं। इसीलिए वेद में सृष्टि के आदिकाल में ही कहा है **'आयुर्यज्ञेन कल्पताम्'** जीवन की यज्ञ से रक्षा करो, क्योंकि यज्ञ में ही वह शक्तियाँ हैं जो सूक्ष्म से सूक्ष्म जीवाणुओं को निष्क्रिय कर सकती है। उन्होंने वैज्ञानिकों में डॉ. फुन्दनलालजी, डॉ. सत्यप्रकाश सरस्वती, डॉ. रामप्रकाश, डॉ. टेले, डॉ. टोकीन, राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान लखनऊ, उप्र प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, डॉ. कर्नल हाफकिन, डॉ. किंग आदि ने अनेकों प्रयोगों व अनुसंधान ने स्पष्ट किया है कि **'यज्ञ में डाली गई विभिन्न वनौषधियाँ सूक्ष्म वायु में मिश्रित हो दूषित पर्यावरण को विशुद्ध करती है व शरीर को स्वस्थ रखती है तथा यज्ञ में डाली गई वस्तुयें करोड़ों गुना सूक्ष्म होकर विभिन्न वायरस बैक्टीरिया को निष्क्रिय करके शरीर को खतरनाक वायरस से सुरक्षित करती है।'** अन्तरिक्ष वैज्ञानिकों ने अपने अनेकों प्रयोगों से यह सिद्ध किया है कि एक दिन यज्ञ करने से १०० यार्ड क्षेत्र में एक माह तक प्रदूषण नहीं हो सकता है।

इस प्रकार वैज्ञानिकों ने यह भी प्रमाणित किया है कि यज्ञ से शरीर के ऊर्जावान डब्ल्यू.बी.सी. नष्ट नहीं होते हैं, अपितु बढ़ जाते हैं तथा शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। यज्ञ में प्रयोग करने के लिये कपूर, आम या अन्य समिधाएँ, गाय का शुद्ध घृत, हवन सामग्री से वातावरण शुद्ध व शरीर नीरोगी व सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होती है। यज्ञ खुले स्थान पर या कमरे में करना हो तो खिड़कियाँ खुली होनी चाहिए तथा दर्शन, श्रवण, गन्ध इन्द्रियों से सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती है। यज्ञ में वेदमंत्रों के उच्चारण से शरीर में सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती है। यज्ञ शाला में ताम्बे के पात्र से निकलने वाली तरंगों से सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती है। यज्ञ में विशेष वनौषधियों से बचाव से वायरल रोगों में निम्न वनौषधियों को एक किलो सामग्री में मिलाकर दैनिक यज्ञ करने से वातावरण को प्रदूषित होने से बचाता है।

डॉ. शर्मा ने आयुर्वेदिक वनौषधियों में गूगल ५० ग्राम, सफेद चंदन २५ ग्राम, लाल चंदन २५ ग्राम, अगर व तगर ५० ग्राम, चिरौंजी व खोपड ५० ग्राम, नारियल का बुरादा ७५ ग्राम, जायफल व लौंग ५० ग्राम, मुन्नक्का ५० ग्राम, किशमिश व छुआरा ७५ ग्राम, बड़ी इलायची ५० ग्राम, गुलाब के फूल सूखे ५० ग्राम, बड़ी हर्र ५० ग्राम, गिलोय १०० ग्राम , साठी के चावल ५० ग्राम, सहदेव व जटामासी व सतावर १०० ग्राम, कूट ५० ग्राम, ब्राह्मी ७५ ग्राम, काले तिल ७५ ग्राम, अश्वगंधा २५ ग्राम, चिरायता २५ ग्राम , हूपकला २५ ग्राम, सुदर्शन के पत्ते २५ ग्राम से यज्ञ करने से वर्तमान परिस्थितियों व परिप्रेक्ष्य में विभिन्न वायरस, बैक्टेरिया व कोरोना वायरस को वातावरण से समूल नष्ट करने के लिये ऋषि–मुनियों के द्वारा प्रतिपादित यज्ञ विधि से सम्पूर्ण विश्व को बचा सकते हैं। घर–घर यज्ञ से वातावरण को विशुद्ध करने का प्रयास करें, शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएँ, मानसिक तनाव को दूर करें, सकारात्मक सोच उत्पन्न करें, विश्व, देश, समाज, परिवार को सुख-शान्ति, सफलता व शारीरिक–मानसिक वातावरण के पर्यावरण को शुद्ध करने के लिए यज्ञ को जीवन्त करें और जीवन व विभिन्न वायरस बैक्टेरिया व रोगों से जीवन को सुरक्षित करते हुए वातावरण को प्रदूषणमुक्त करें जिससे स्वच्छ ऑक्सीजन मिलेगी, रोग मुक्त रहेंगे। यह यज्ञ थैरेपी से ही संभव है। यही यज्ञ का वैज्ञानिक व सामाजिक परिप्रेक्ष्य है।

इस अवसर पर आर्य समाज मारतहल्ली बंगलौर के संस्थापक संरक्षक समाजसेवी फकीरे दयानंद एस.पी. कुमार ने डॉ. श्वेतकेतु का स्वागत, अभिनन्दन व आभार व्यक्त करते हुए का कि यज्ञ के वैज्ञानिक शोध–चिन्तन को आत्मसात करते हुए घर–घर यज्ञ करेंगे तभी भयानक प्रदूषण से अपने को और परिवार को वातावरण में व्याप्त विभिन्न वायरस से बचाते हुये रोगों से मुक्त हो पायेंगे। इस अवसर पर इससे पूर्व विशेष यज्ञ का आयोजन भी किया गया तथा भजनोपदेश से मन्त्रमुग्ध कर दिया। आर्य समाज के मंत्री कुमार अभिनंदन ने सबका आभार व्यक्त किया तथा प्रधान कर्नल एच.पी. शर्मा ने सबका धन्यवाद दिया। इस अवसर पर बंगलौर के सैकड़ों प्रबुद्ध जन उपस्थित रहे। संचालन एस.पी. कुमार ने किया।

'आर्य राष्ट्र पुरोधा' ठाकुर विक्रमसिंह जी का ८०वाँ जन्मोत्सव हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न

(विस्तृत विवरण पृष्ठ ३३ पर)

स्वामी आर्यवेश जी, डॉ. आनन्द कुमारजी अध्यक्ष राष्ट्र निर्माण पार्टी, समारोह अध्यक्ष व ठाकुर विक्रमसिंहजी एवं मंचस्थ अतिथि अभिनन्दन ग्रन्थ का लोकार्पण करते हुए

परिजनों के साथ ठाकुर विक्रमसिंह जी

सा.आ.प्र.सभा के प्रधान श्रीमान् सुरेशचन्द्र जी आर्य द्वारा शुभकामनाओं की अभिव्यक्ति

बाबा रामदेव द्वारा अन्तर्जालीय उपस्थिति के साथ उद्बोधन

सुदर्शन न्यूज चैनल के सुरेश जी चव्हाण द्वारा बधाई व शुभकामना ओजस्वी उद्बोधन द्वारा

समारोह संयोजक आचार्य ज्वलन्त कुमारजी शास्त्री अभिनन्दन ग्रन्थ पर प्रकाश डालते हुए

अविस्मरणीय पल : ठाकुर विक्रमसिंहजी के संग वैदिक संसार प्रकाशक सुखदेव शर्मा

स्वामी आर्यवेश जी, ठाकुर विक्रमसिंह जी, आ. भानुप्रताप इन्दौर के संग सुखदेव शर्मा वैदिक संसार प्रकाशक

ऐतिहासिक विलक्षण क्षण : भव्य वातानुकूलित तालकटोरा स्टेडियम, दिल्ली में ठाकुर विक्रमसिंह जी के परिजन एवं सम्पूर्ण भारत से उपस्थित अपार जन समूह

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आयोजित ऐतिहासिक भव्य आर्य महासम्मेलन

उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष राजीव जी गुलाटी, चेयरमैन एम.डी.एच. मसाले के करकमलों द्वारा ध्वजारोहण

उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि महामहिम आचार्य देवव्रत जी राज्यपाल गुजरात उद्बोधन देते हुए

अध्यक्षीय उद्बोधन प्रदान करते हुए श्रीमान् राजीव जी गुलाटी

ऐतिहासिक आर्य महासम्मेलन के ध्वजारोहण का विहंगम दृश्य

श्रीमान् राजीव जी गुलाटी व धर्मपत्नी श्रीमती ज्योति गुलाटी को प्रतीक चिन्ह प्रदान कर सम्मान करते हुए प्रधान किशनलाल जी गहलोत, मन्त्री जीववर्धन जी शास्त्री, कोषाध्यक्ष जयसिंह जी पालड़ी एवं जितेन्द्र जी भाटिया

श्रीमान् राजीव जी गुलाटी को पुष्पगुच्छ भेंट कर अभिनन्दन करते प्रधान किशनलाल जी गहलोत

श्रीमती ज्योति जी गुलाटी का भावभीना अभिनन्दन करते हुए श्रीमती सौम्या गुर्जर, महापौर जयपुर ग्रेटर नगर निगम

सम्पूर्ण भारत से आयोजन के साक्षी बने वृहद् संख्या में उपस्थित आर्यजन

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आयोजित ऐतिहासिक भव्य आर्य महासम्मेलन

विश्ववारा कन्या गुरुकुल, रुड़की की आचार्या पद्मश्री सुकामा जी के ब्रह्मत्व में एवं आचार्य ओमप्रकाश जी आबू व आचार्य अवनीश मैत्रि के संयोजन में २०० कुण्डीय यज्ञायोजन का विहंगम दृश्य

वृहद् संख्या में उपस्थित यति मण्डल के संन्यासी वृन्द एवं वानप्रस्थीगण

श्री जितेन्द्र जी भाटिया अध्यक्ष सर्वे भवन्तु सुखिनः ट्रस्ट, दिल्ली का भावभीना अभिनन्दन करते सभा मन्त्री श्री जीववर्धन जी शास्त्री

डॉ. रमेशचन्द्र जी गुप्ता पूर्व अध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका, न्यूजर्सी का अभिनन्दन आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रतिनिधियों द्वारा; साथ में हैं श्री विनय जी आर्य, दिल्ली

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सतीश जी चड्ढा द्वारा राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री किशनलाल जी को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित करते हुए, साथ हैं म.भा.आ.प्र.सभा प्रधान प्रकाश जी आर्य, आर्य नरेश जी, अशोक जी, मोक्षराज जी व अन्य

वैदिक संसार सम्पादक ओमप्रकाश आर्य के नेतृत्व में आर्य समाज रावतभाटा और सवाई माधोपुर के सदस्यों की भागीदारी

आर्य वीर दल राजस्थान के नेतृत्व में सम्पूर्ण राजस्थान से आयोजन में पहुँचे आर्य वीर-वीरांगनाओं का शौर्य प्रदर्शन

वैदिक विद्वान् पण्डित नन्दलाल निर्भय 'कविरत्न' को पुत्रशोक

पण्डित जयदेव आर्य भजनोपदेशक दिवंगत

जगत् पिता जगदीश का, बड़ा निराला खेल।
उसके आगे हो गए, अच्छे-अच्छे फेल।।
भला इसी में साथियो! जपो प्रभु का नाम।
वेदों के पथ पर चलो, करो भले सब काम।।

आर्य जगत् के प्रख्यात वैदिक विद्वान् पं. नन्दलाल निर्भय 'कविरत्न' के एकमात्र पुत्र श्री जयदेव आर्य भजनोपदेशक आर्य सदन बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा) का हृदयाघात के कारण दिनांक १२.१०.२०२३ गुरुवार को दुःखद निधन हो गया। शवयात्रा में हजारों व्यक्तियों ने भाग लेकर संवेदना प्रकट की। विशेष बात इस संस्कार में यह रही कि अंत्येष्टि संस्कार पिता पं. नन्दलाल निर्भय ने वैदिक रीति के अनुसार स्वयं कराया तथा इस अवसर पर उन्होंने परमात्मा का विशेष ध्यान करते हुए गायत्री मन्त्र का जाप सभी उपस्थित महानुभावों से कराया तथा बताया कि जगत्पिता जगदीश्वर न्यायकारी, दयालु सारे संसार का पालन करने वाला है। हमें उस प्यारे प्रभु को कभी नहीं भूलना चाहिये तथा सदैव शुभ कर्म करके मानवता का परिचय देना चाहिए। पंडितजी ने सभी महानुभावों का इस अवसर पर उपस्थित होने पर आभार व्यक्त किया तथा शान्ति पाठ कराया। यह देख सब हैरान थे।

दिनांक २२.१०.२०२३ को शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। शान्ति यज्ञ वैदिक विद्वान् एवं आचार्य तरुण कुमार शास्त्री महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल भादस (मेवात) जनपद नूंह (हरियाणा) ने सम्पन्न कराया। यज्ञ में सैकड़ों व्यक्तियों ने भाग लिया।

आचार्य तरुण कुमार शास्त्रीजी ने बताया कि परमात्मा सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, निराकार, सर्वान्तर्यामी, अजन्मा, न्यायकारी, दयालु है। वह जीव के कर्मों के अनुसार उचित फल देता है। अर्थात् जो व्यक्ति शुभ कर्म करता है, उसे परमात्मा निहाल कर देता है। ईश्वर ने हमें यह मानव तन शुभ कर्म करने के उपरान्त ही प्रदान किया है। इसलिए हमें सदैव वेद पथ पर चलना चाहिये। जो व्यक्ति इस मानव चोले को पाकर शुभ कर्म नहीं करता वह अभागा है। अतः अपना भला चाहते हो तो परोपकारी बनो। श्रीमती स्नेहलता आर्या, उत्तम प्रकाश आर्य, मान्यता देवी आर्य ने यजमान की भूमिका भली प्रकार निभाई।

इस अवसर पर श्री हर्ष कुमार, पूर्व सिंचाई मन्त्री हरियाणा सरकार, श्री उदयभान (अध्यक्ष हरियाणा कांग्रेस चंडीगढ़), श्री वेदप्रकाश परमार्थी (वैदिक गौशाला, मरोडा नूंह), श्री दिव्य मुनि संन्यास आश्रम बहरोड (राज.), श्री शमशेर गोस्वामी शिक्षाविद् पुन्हाना मेवात, श्री उमेश आर्य अध्यक्ष वेद प्रचार मण्डल मेवात, श्री राम अवतार आर्य (पुन्हाना), श्री वेदप्रकाश आर्य सी.ए. गुरुग्राम, श्री सोहनलाल रावत बहीन, श्री दीपक मंगला विधायक पलवल ने भी श्री जयदेव आर्य को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए ईश्वर से सद्गति प्रदान करने तथा उनके परिवार को इस कठिन वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की।

अन्त में पं. नन्दलाल निर्भय ने सभी महानुभावों का शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा में भाग लेने पर धन्यवाद दिया। शान्ति पाठ करने के पश्चात् समारोह का समापन किया गया।

● सत्यप्रकाश आर्य
ग्राम बहीन (पलवल), हरियाणा

जयदेव आर्य के वयोवृद्ध पिता पं. नन्दलाल निर्भय एवं माता श्रीमती सावित्री देवी

सेवा भावी, कर्मठ, संघर्षशील जयदेव आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती स्नेहलता आर्या

जयदेव आर्य के सुपुत्र चिरंजीव उत्तम प्रकाश आर्य एवं सुपुत्री कुमारी मान्यता देवी आर्या

उदारमना, सहयोगी, दानी महानुभावों से विनम्र अनुरोध

वैदिक संसार : वेद मन्त्र मन्तव्य चित्र विशेषांक

सत्य सनातन वैदिक धर्म-संस्कृति निष्ठ महानुभावों से विनम्र अनुरोध है कि ईश्वर कृपा एवं आप समस्त सहयोगी महानुभावों के सहयोग, साथ तथा सम्बल से वैदिक संसार पत्रिका अपने जीवन काल के सफलतापूर्वक १२ वर्ष पूर्ण कर १३ वें वर्ष में प्रवेश कर गई हैं।

जैसा कि आप सभी महानुभावों को विदित ही है कि आगामी वर्ष २०२४ वेदों की महत्ता के पुनर्स्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्म के २०० वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं। इस कारण यह वर्ष वेदों एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा वेदों के प्रचार-प्रसार निमित्त स्थापित संगठन आर्य समाज के प्रति निष्ठावान् एवं समर्पित बन्धुओं के लिए अत्यन्त हर्षोल्लास का वर्ष है। राष्ट्र की स्वतन्त्रता तथा सनातन धर्म की रक्षार्थ महर्षि दयानन्दजी के दिए गए योगदान को दृष्टिगत रखकर भारत सरकार भी महर्षि दयानन्द सरस्वती के द्विजन्मशताब्दी वर्ष को ज्ञान ज्योति पर्व के रूप में विश्व स्तर पर उच्च स्तरीय समिति भारत के यशस्वी प्रधानमन्त्री माननीय नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में गठित कर मना रही है। इस कारण से भारत के प्रत्येक नागरिक के साथ-साथ ईश्वर में अटूट आस्था और मानवता में विश्वास रखने वाले समूचे संसार के व्यक्तियों के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती की द्विजन्मशताब्दी वर्ष का प्रत्येक दिवस एक पर्व के अनुरूप है।

इस पुनीत पावन बेला में वैदिक संसार महर्षि दयानन्द सरस्वती की स्मृति को समर्पित श्रद्धांजलि स्वरुप वेद प्रचारकों, प्रशिक्षकों को जनसामान्य को वैदिक सिद्धान्त/मन्तव्य सिखाने-बताने-समझाने की दृष्टि से अति बहुउपयोगी **'वेद मन्त्र मन्तव्य चित्र विशेषांक'** प्रकाशित करने जा रहा है।

यह विशेषांक वृहदाकार (लगभग ११×१७ इंच) का होकर इस अंक के सम्पूर्ण पृष्ठ (अनुमानित लगभग १२०) रंगीन होंगे। जिसमें वैदिक मन्तव्य के ५१ चित्र होंगे।

इस विशेषांक में वैदिक मन्तव्य चित्र पृष्ठ के पीछे की ओर विज्ञापन, शुभकामना सन्देश आदि के द्वारा इस विलक्षण, अद्भुत, संग्रहणीय विशेषांक का लागत व्यय जुटाने के साथ इसे सुसज्जित किया जावेगा और इसे व्यक्तिगत स्तर पर भी उपयोगी बनाया जावेगा।

अत: आप सभी महानुभावों से विनम्र अनुरोध है कि आप अपने-अपने आर्य समाजों, संस्थानों, व्यावसायिक प्रतिष्ठानों तथा व्यक्तिगत शुभकामना सन्देश, विज्ञापन आदि तथा दान स्वरूप मुक्त हस्त से सहयोग राशि प्रदान करने की कृपा करें।

निर्धारित सहयोग राशि

पूर्ण रंगीन पृष्ठ : रु. २५०००
१/२ (आधा) पृष्ठ : रु. १३०००
१/४ (चौथाई) पृष्ठ : रु. ७०००
एक प्रति : रु. ९००
अन्य सहयोग स्वेच्छानुसार

● सुखदेव शर्मा
(प्रकाशक : वैदिक संसार)
चलभाष : ९४२५०६९४९१

दुनिया कर्मक्षेत्र है, कोई सैरगाह नहीं

हाँ, वैदिक धर्म की जय... आर्य समाज की जय... पुकारने वाले मिलेंगे, न वेदों को देखा, न पढ़ा। जय पुकार दो बेड़ा पार हो गया। प्राय: आर्य पुरुषों ने स्वयं वेदों को नहीं देखा होगा। उनकी सन्तान फिर क्या जाने वेद क्या चीज है। प्राय: यह भी सच है।

प्रभु भक्त कभी भी कोई कामना, भावना मन में रख के कोई कार्य नहीं करेगा। वह प्रभु का यन्त्र बन कार्य करता हुआ सफलता-असफलता उसी को अर्पण करता जाएगा। यदि वह वर्तमान काल में विद्वान् प्रभु भक्त होकर और उसी का यन्त्र बनकर लेखनी का कार्य करे तो उसकी विचार शक्ति तीव्र और हृदय में प्रकाश ऐसे-ऐसे अनुभव प्रकट होंगे कि उनसे स्वयं चकित हो जाएगा और पुस्तक निष्काम भाव से लिखकर जिसकी पूँजी उसके अर्पण की भाँति समर्पण करेगा। तो नि:सन्देह उसे किसी के आगे हाथ पसारना नहीं होगा। स्वयं प्रभु देव शुद्ध पवित्र कमाई इस मंगल कार्यार्थ अपने प्यारों द्वारा भिजवाएगा। उसकी लिखी पुस्तक पढ़ने वाले, त्याग भावना वाले होकर संसार के अन्दर होकर संसार में सुख-शान्ति का प्रचार-प्रसार करेंगे, जिससे घट-घट में राम राज्य अनुभव करेंगे, कर्मों को नि:शंक होकर सदा किया करें। ऐसे कार्यों को तू अपने सम्पूर्ण सौ वर्षों तक करता जा। अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक करता जा।

एक भूख-दूसरा नंग

मनुष्य से दो त्रुटियों को दूर करना है। एक भूख-एक नंग जो अपनी ही भूख और नंग मिटाता है वह पशु है। जो दूसरों की मिटाता वह मनुष्य है। शारीरिक भूख, नंग को मिटाने वाला मनुष्य कहलाता है। आध्यात्मिक भूख-नंग को मिटाने वाला देवता कहलाता है। शरीर की भूख पेट में और आत्मा की भूख हृदय में। शरीर की भूख रोटी से और नंग कपड़े से दूर होता है। और आत्मिक भूख भक्ति से, नंग ज्ञान सदाचार से दूर होती है।

● देवकुमार प्रसाद आर्य
भूतपूर्व प्रधान : आर्य समाज,
५०, फौजा बगान, वारीडीह, जमशेदपुर (झारखण्ड)
चलभाष : ८९६९५४२३३९

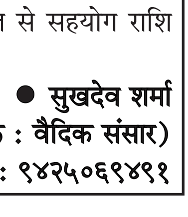

कौन कहता है, कि हम हो गए आजाद...?

● **ओमदीप आर्य**
गोविन्दगढ़, अलवर (राज.)
चलभाष : ९६१०३०२७०१, ७७९२०१८६००

कौन कहता है,कि हम हो गए आजाद... ?
कौन कहता है,कि हम हो गए आजाद... ?
कभी सोचा है गंभीरता से...!
क्या तोड़ डाली है बेड़ियाँ हमने,
झूठ के उसूलों की...!
सच...!
सच तो कड़वा होता है,
तभी तो चुभता है जनाब.....!
कौन कहता है कि हम हो गए आजाद... ?
क्या हम मुक्त हो गए हैं, नशे,धूम्रपान से.... ?
कुछ ही दिनों पहले,
अखबार में छपा था...,
एक माँ लाचार हो गई है,
खोकर अपने चार बेटे जवान से...!
क्योंकि नशे के आदी थे वे,
और बर्बादी का कारण बन गए हैं...!
अपनी बूढ़ी माँ, और दृष्टिहीन बहन के...!
कुछ सपने, माँ और बेटी ने भी,
संजोए तो होंगे...!
सब के सब बदरंग हो गए,
नशे के गमगीन रंगों में...!
अब माँ को बेटों की,
और बहन को भाइयों की,
आ रही है याद...!
कौन कहता है कि,
हम हो गए आजाद... ?
एक और बात,मैं तुम्हें बता दूँ...!
क्या हम मुक्त हो गए,भ्रष्टाचार से... ?
या फिर हम नजर आते हैं, लाचार से... ?
जरा फरमाओ इस बात पर गौर...!
हर दिन लपेटे में आ रहे हैं, रिश्वतखोर...!
कुछ अफसर, कुछ नेता तक,
बन बैठे हैं चोर...!
चारों तरफ से,ऐसे ही माहौल का,
मच रहा है शोर....!
अगर नहीं लगी रोक,
तो इनकी,बढ़ती रहेगी तादाद...!
कौन कहता है कि,
हम हो गए आजाद... ?
अगर नहीं करोगे,
इन गलत कामों पर चोट..!
और नशे और भ्रष्टाचार को,
करोगे मौन सपोट....!
तो सुन लो मेरे यह बोल...!
जो आपकी आंखों को देंगे खोल...!
अगर चुभ जाए मेरी बात,
तो दिल पर मत लेना...!
कह रहा है 'ओमदीप',
क्या गलत है मेरा कहना... ?
अगर सहते रहे ये गुलामियाँ,
तो हो जाएंगे बर्बाद...!
कौन कहता है, कि हम हो गए आजाद... ?
कौन कहता है, कि हम हो गए आजाद... ?
कहिए, अपने दिल पर रखकर हाथ...!
क्या सच में, हम हो गए आजाद... ?
क्या सच में, हम हो गए आजाद... ?

हे इसरो! तुझे प्रणाम

अच्छा है चाँद पर चंद्रयान गया है,
न हिन्दू, न कोई मुसलमान गया है।
न कोई राम, न कोई रहमान गया है,
दरअसल चाँद पर विज्ञान गया है।।
शुक्र है वहाँ न कोई धर्म गया है,
न ही जात–पात का कुकर्म गया है।
न ही राजनीति का षडयंत्र गया है,
वहाँ वैज्ञानिकों का परिश्रम गया है।।

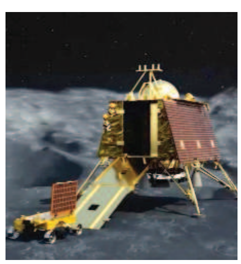

वैज्ञानिकों तुम ही अन्तिम विश्वास हो,
बेशक प्रगति की लाजवाब आस हो।
और तुम्हीं हमारी उम्मीद–ए–खास हो,
कुछ भी करो पर न देश निराश हो।।
हे इसरो! तुझे दिल से प्रणाम है अपना,
तूने पूरा किया देश के गौरव का सपना।
तुम इस जज्बे को यूँ ही बरकरार रखना,
न किसी अन्धश्रद्धा का कर्जदार करना।।

● **अशोक शर्मा महाराज**
(वरिष्ठ धारा शास्त्री)
(साभार : सोशल मीडिया)

किसकी करूँ पुछाड़ी बोलो!

किसकी करूँ पुछाड़ी बोलो! कोई नहीं अपना लगता है,
कहाँ गये वे लोग पुराने, बीते दिन सपना लगता है।
जाएँ कहाँ-कहाँ हम बैठें, काँटों का जंगल लगता है,
घर-घर देखा, एक लेखा, सभी जगह दंगल लगता है।
हर घर है अब बना अखाड़ा, मार-काट होती रहती है,
धन-दौलत के लिए लड़ाई, चैन वहाँ रोती रहती है।
बूढ़े लोग, लाचार बने हैं, अपना घर भी हुआ बेगाना,
तरस रहे हैं घर के मालिक, मिले न मुट्ठी भर भी दाना।
यह कैसा आ गया जमाना, बेटा बाप की करे धुनाई,
बहू करे सास की चुगली, बुढ़िया की हो गई पिटायी।
धक्का खाये, जायें कहाँ हम, घर-घर का अब यही हाल है,
बेटे ही जब बने कसाई, बचने का अब कहाँ ढाल है।
घर-घर की अब यही कहानी, अब वैसा संसार कहाँ है,
नदिया सूख गई हैं सारी, उनमें वैसी धार नहीं है।

● **डॉ. लक्ष्मी निधि**
'निधि विहार', १७२, न्यू बारादारी, ह्यूम पाइप रोड
नया कोर्ट रोड, पो. साकची, जमशेदपुर–१ (झारखंड)
चलभाष : ९९३४५२१९५४

भर्तृहरि नीति शतक और वृद्धावस्था

● शिवनारायण उपाध्याय
७३, शास्त्री नगर, दादावाड़ी, कोटा (राज.)
दूरभाष : ०७४४-२५०१७८५

भर्तृहरि संस्कृत साहित्य के शीर्षस्थ लेखकों में गिने जाते हैं, यद्यपि उन्होंने संस्कृत साहित्य की अधिक रचना नहीं की है, परन्तु उन्होंने अपनी साहित्य की रचना में जो कुछ भी लिखा है वह संस्कृत साहित्य की अनमोल धरोहर है। भर्तृहरि ने श्रृंगार नीति और वैराग्य शतक में जो रचना की है वह बेजोड़ है। प्रत्येक श्लोक में उनके पाण्डित्य और अनुभव की झलक स्पष्ट झलकती है। वृद्धावस्था में व्यक्ति की क्या स्थिति होती है? इस पर हम नीति शतक के आधार पर विचार करते हैं।

गात्रं संकुचितं गतिर्विगलिता भ्रष्टा च दन्तावलि।
ईष्टिर्नश्यति वर्धते बधिरता वक्त्रं च लालायते।
वाक्यं नाद्रियते च बान्धवजनो भार्या न शुश्रूषते हा।
कष्टं पुरुषस्य जीर्णवियस पुत्रोऽप्यमित्रायते।। भर्तृ. वैराग्य १०४

अर्थ– वृद्धावस्था में मनुष्य की बड़ी बुरी दशा होती है। कमर झुक जाती है, चाल धीमी पड़ जाती है, दाँत टूट जाते हैं, आँखों से कम दिखाई देने लगता है, बहरापन आ जाता है। मुख से लार टपकने लगती है कोई भी आदर-सम्मान नहीं करता है। पत्नी भी नहीं पूछती। पुत्र भी शत्रु मानने लगता है। पुरुष का वृद्धावस्था में कष्टमय समय व्यतीत होने लगता है।

वर्ण सितं शिरसि वीक्ष्यं द्विरोरुहाणां स्थानं जरापरिभषस्य तदा पुमांसम्।
आरोपितांस्थि शकलं परिहृत्य यान्ति चण्डाल कूपमिव दूरत रं तरुण्यः।।
भर्तृ. वैराग्य १३७

तरुण स्त्रियाँ जब पुरुष के सफेद बाल देखती है तो समझ जाती है कि यह पुरुष सुखी नहीं है। भला इसमें क्या धरा है? वह तो उसे चण्डाल का कुआँ समझकर किनारा काटकर निकल जाती है। तरुणियाँ वृद्ध को छोड़ देती है।

इस स्थिति से बचने के लिए पुरुष को चाहिए कि वृद्धावस्था के पूर्व अपने को आध्यात्म मार्ग का पथिक बना लें। वैदिक आश्रम व्यवस्था में इसीलिए वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम की व्यवस्था की गई है। यदि व्यक्ति बुढ़ापा आने से पूर्व ही वानप्रस्थी बन जाए तो वह समाज में सम्मान की दृष्टि से देखा जाने लगता है। ७५ वर्ष की आयु में यदि संन्यास ले लेता है तो वह समाज में और भी अधिक सम्मान प्राप्त कर लेता है?

यावत्स्यस्यमिदं शरीरमरुजं यावच्च दूरे जरा
यावच्चेन्द्रिय शक्तिरप्रतिहता यावत्क्षयो नायुषः।
आत्म ऊग्रसितावदेव विदुषा कार्यः प्रयत्यो महान्
सन्दीप्ते भवने तु कूपखननं प्रत्युद्यमः कीदृशः।

अर्थ– जब तक आयु का नाश नहीं होता तब तक व्यक्ति सावधान रहे। आत्म कल्याण के लिए कार्य करे। जब तक व्यक्ति बुढ़ापे से दूर है तब तक यह करें। क्या कोई भी व्यक्ति घर में आग लग जाने पर कुआँ खोदता है? इसीलिए यौवन काल में श्रेष्ठ कार्य न करके जो उन्हें बुढ़ापे में करना चाहते हैं। वे मूर्खता के अतिरिक्त कुछ नहीं करते हैं।

मनुष्य को अपने मन को नियंत्रण में रखना चाहिए। इन्द्रियों को इधर-उधर भटकने से रोकना चाहिए। मृगतृष्णा से बच कर रहना चाहिए।

दुराराध्याश्चामी तुरगचलचित्ताः क्षिति भुजो वयं
तु स्थूलेच्छाः सुमहति फले बद्धमनसः।
जरादेहं मृत्युर्हरति दयितं जीविदमिदं सखे।
नान्यच्छेयो जगति विदुषेऽन्यत्र तपसः।।

अर्थ– मृगतृष्णा से बचाकर हमें मन को नियंत्रण में रखना चाहिए। वृद्धावस्था और मृत्यु का डर हमारे शरीर को प्रतिदिन जीर्ण-शीर्ण करता चला जा रहा है। वृद्धावस्था में भी हम फल की आशा रखकर व्यर्थ ही दिन-रात परिश्रम करने में लगे रहते हैं। ज्ञानी जन इस समय भगवान् की उपासना करना श्रेष्ठ मानते हैं।

वृद्धावस्था की स्थिति को विस्तार देते हुए भर्तृहरि लिखते हैं-

जीर्णा एव मनोरथाश्च हृदये यातं च तद्योवनं
हन्ताङ्गेषु गुणाश्च बन्ध्यफलतां यातागुण ज्ञैर्विना।
किं युक्तं सहसाऽभ्युपैति बलवान् काल कृतान्तोऽक्षमी हा।
ज्ञातं मदनान्तकाङ्घ्रियुगलं मुक्तवास्ति नान्यो गतिः।।

अर्थ– वृद्धावस्था का वर्णन करते हुए भर्तृहरि लिखते हैं- हृदय की कामनाएँ मन में ही लुप्त हो गई, वह यौवन भी चला गया। गुण ग्राहकी के अभाव में विद्या, विनय आदि गुण शरीर में ही निष्फल हो गए। यह अत्यन्त खेद की बाद है। बलवान् काल स्वरूप, प्राण लेने के लिए आ पहुँचा है।

फिर अब क्या उचित है? हाँ ध्यान में आया कि काम को मार देने वाले शिवजी की शरण में जाने के अतिरिक्त कोई दूसरा विकल्प नहीं है। संसार से उद्धार पाने के लिए भगवान् शिव की शरण में ही जाना चाहिए। वहीं मुक्ति प्राप्त हो सकती है। परमात्मा ही सर्वरक्षक हैं।

भर्तृहरि का कहना है कि अन्तकाल के पूर्व गंगा किनारे पर रहकर भगवान की उपासना करना ही सर्वश्रेष्ठ कार्य है।

माने म्लायिनि खण्डिते च वसुनि व्यर्थे प्रयातेऽथिनि
क्षीणे बन्धुजने गते परिजने नष्टे शनैर्यौवने।
युक्तं केवलमेतदेव सुधियां यज्जन्ह कन्यापयः पूताग्राव
गिरीन्द्रकन्दनदरीकुब्जे निवासः क्वचित्।।

अर्थ– सम्मान के कम हो जाने पर, धन के नष्ट हो जाने पर, याचक के निराश होकर चले जाने पर, अन्न के अभाव में, सेवकजनों के चले जाने पर, बन्धुजनों के कम रह जाने पर, परिजनों के चले जाने पर, यौवन के नष्ट हो जाने पर मुक्ति का एक ही उपाय बचा रहता है कि गंगा के किनारे पर जाकर निवास कर परमात्मा की उपासना करना। वास्तव में बुद्धिमानी का कार्य केवल यही है।

भर्तृहरि के युग से वर्तमान युग में बड़ा अन्तर आ गया है वर्तमान काल में सुसंस्कृत परिवारों में वृद्ध पुरुषों की सेवा बड़ी तन्मयता से की जा रही है। अब वृद्ध की कमर भी कम झुकती है, दाँतों से भी कष्ट नहीं होता है। आँखें भी अन्तिम समय तक काम करती है क्योंकि समय पर आँखों के डॉक्टर ऑपरेशन कर आँखों की रोशनी दे देते हैं। आजकल तो अन्धे को भी आँखें लगा दी जाती है। यंत्रों द्वारा कानों की श्रवण शक्ति की रक्षा कर ली जाती है। **इतिशम्।**

परिवार में वृद्धजनों की स्थिति

भारतीय वैदिक समाज में वृद्धजन यथा दादा-दादी, नाना-नानी, माता-पिता परिवार के ढाँचे के मूल स्तम्भ होते थे। उनकी आज्ञा, मार्गदर्शन और सलाह के बिना कोई काम न होता था। वृद्धजन समाज परिवार में रीढ़ व ढाँचा थे। संयुक्त परिवार, जिनमें चालीस से साठ तक सदस्य होते थे। समाज में स्थान व धाक होती थी। सबका साथ सबका विकास एक मन्त्र था। जिसमें सभी सदस्य अनुशासित और संतुष्ट रहते थे। आज परिवार यानि पति-पत्नी और एक या दो बच्चे बस। छोटा परिवार सुख का आधार। समय का तकाजा और पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव। अर्थवाद की दौड़ में बुजुर्ग वर्ग माता-पिता दरकिनार गौण हो गए। संयुक्त परिवार बिखर गए, टूट गए। अब तो माता-पिता या अकेले पिता या माता भी धक्के खाने में रह गए। इधर निराश्रित पेंशन और वृद्धाश्रम भी निकम्मी सन्तानों को सहयोग कर रहे हैं। साठ-साठ बीघा जमीन और चार-चार लट्ठ जैसे बेटों के माँ व बाप निराश्रित पेंशन के लिए लाइनों में धक्के खा रहे हैं या वृद्धाश्रम में धकेले जा रहे हैं। माता-पिता या वृद्धजनों की जवाबदारी अब शासन पर कपूतों की मानसिकता। वृद्धजन अब वरिष्ठ नागरिक या घर के मुखिया नहीं वरन आश्रित बेगार, भार या अनुपयोगी कबाड़। लोक लाज या अच्छे संस्कार होने से कुछ सपूत अपने माता-पिता के प्रति श्रद्धा, सहानुभूति, सेवा और सम्मान का निर्वाह कर रहे हैं। वर्ना माता-पिता वरिष्ठजनों की दुर्दशा हम देख, सुन, पढ़ ही रहे हैं। प्रतिवर्ष फादर्स डे, मदर्स डे, पेरेंट्स डे, वरिष्ठ नागरिक सम्मान दिवस हम मनाते हैं, परन्तु औपचारिकता मात्र। उसी प्रकार जैसे रावण दहन बुराइयों के प्रतीक का अंत परन्तु समाज में बुराइयों की प्रतिवर्ष वृद्धि उसी प्रकार जैसे ज्यों-ज्यों दवा की गई दर्द बढ़ता ही गया। इलाज पर भारी बीमारियाँ। सत्य है आज का बुजुर्ग आर्थिक तंगी, अभाव ग्रस्त, बीमार, कमजोर है, सेवा, आदर, सम्मान का कायल है तो उसे पग-पग पर मरना पड़ता है। जीते जी नर्क।

समाज में जीविका मूलक शिक्षा है। जीवन मूलक शिक्षा और प्राचीन वैदिक संस्कारों तथा नैतिक व्यावहारिक शिक्षा की कमी होने से पाश्चात्य हावी है। अर्थवाद का मोह भंग कर आध्यात्म आधारित जीवन शैली अपनाना ही स्थायी हल हो सकेगा।

फर्ज-माता पिता के प्रति

आज की संतान को क्या हो गया।
माँ-बाप का वह प्यार कहाँ खो गया।।
खुद गीले में सोकर तुझे सूखे में सुलाया।
अपने मुँह का कोर प्यारे तुझे खिलाया।।
आज घर में जब तुम्हारा चलन आया।
बुढ़ापे में तू उनकी सेवा न कर पाया।।
घर मकान बनाया,लिखाया नाम मातृछाया।
पर सदा है घर में तेरी पत्नी की ही माया।।
आज माँ-बाप तेरे निराश्रित हो गए।
तुम अन्दर के वे बाहर के हो गये।।
जीते जी तुम उनके कानूनी वारिस हो गये।
परन्तु बेचारे माँ-बाप तुम्हारे लावारिस हो गये।।
न दया, न दवा, न श्रद्धा, न सेवा।
न पूछ, न परख, बस मुफ्त में सेवा है।।
जीते जी उनके लिए कुछ कर न पायेगा।
मरने पर श्राद्ध करेगा, जात जिमायेगा।।
चित्र पर अगरबत्ती व माला चढ़ायेगा।
कभी उनको नमन न किया, क्या आशीर्वाद पायेगा।।
याद रख जैसा करेगा तू वैसा ही भरेगा।
वृद्ध होने पर तू भी बिन सेवा के ही मरेगा।।
बच्चे तेरे देख रहे वे भी क्या कम है।
उनसे कुछ करा लेगा क्या? तुझमें दम है।।
दुनिया का यही चलन है दस्तूर है प्यारे।
इस हाथ करो, उस हाथ भरो, आ होश में प्यारे।।
धन्य वे माँ-बाप जो बेटों से सेवा पाते हैं।
धन्य बेटे जो सेवा कर आशीर्वाद पाते हैं।।

● **मोहनलाल दशौरा 'आर्य'**
नारायणगढ़, जनपद : मन्दसौर (म.प्र.)
चलभाष : ९५७५७९८४१२

दुःखद निधन—विनम्र श्रद्धांजलि

अत्यन्त ही कर्तव्यनिष्ठ, मृदुभाषी, मिलनसार सामाजिक कार्यों में सदैव अग्रणी रहने वाले स्व. रविशंकरजी मुकाती का दिनांक २५/९/२०२३ को अल्प आयु में हमारे बीच से चले जाना अत्यन्त ही दुःखद एवं समाज के लिए अपूरणीय क्षति है। श्री मुकाती राऊ, रंगवासा की संस्थाओं, आर्यसमाज राऊ में महामंत्री, पाटीदार समाज धर्मशाला में सचिव तथा सेवानिवृत्त एवं वरिष्ठ नागरिक मित्र मण्डल राऊ के सक्रिय कार्यकर्ता थे। श्री उमियाधाम रंगवासा (राऊ) की सांस्कृतिक गतिविधियों में आपकी महती भागीदारी रही है। इनके पिता श्री कन्हैयालालजी मुकाती जो पेशे से शा. सेवा में होकर शिक्षक थे जिन्होंने राऊ, रंगवासा क्षेत्र के सेवानिवृत्त एवं वरिष्ठ नागरिकों का एक संगठन बनाया। उनके निधन के पश्चात् इस संगठन को मजबूती प्रदान करने एवं गतिविधि को संचालित रखने में आपने महत्वपूर्ण भागीदारी निभाई। स्व. श्री रविशंकर मुकाती भी इस संगठन के सचिव थे। जिसके सदस्य किसी धार्मिक या सामाजिक स्थान पर एकत्रित होकर अपना जन्म दिन मनाते हैं। यह संयोग ही है कि इसी तारतम्य में आपने भी निधन से १५ दिन पूर्व आर्य समाज मन्दिर राऊ में अपना जन्मदिन मनाया, जिसमें राऊ नगर के गणमान्य नागरिकों तथा महिलाओं की उपस्थिति रही। कार्यक्रम की झलकियाँ आपके जीवन की अन्तिम यादगार के रूप में सभी साथियों के मानस पटल पर अंकित है। अचानक हृदयाघात से हुए आकस्मिक निधन से सभी साथीगण स्तब्ध रह गए। आप अपने पीछे दो बेटियाँ, पत्नी तथा पूजनीय माताश्री को असहाय छोड़ गए हैं। हम उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि के साथ परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि परिवार पर जो वज्रघात हुआ है उसे सहन करने की शक्ति प्रदान करे। दिवंगत आत्मा के लिए आर्य समाज राऊ, रंगवासा एवं अन्य सामाजिक संस्थाओं ने शोक श्रद्धांजलि अर्पित की।

● **प्रेषक- लक्ष्मीनारायण मुकाती,** *आर्य समाज राऊ (इन्दौर) (म.प्र.)*

वैदिक शिक्षा के अभाव में बदलता परिवेश मानव का दानवीय व्यवहार

● सुखदेव शर्मा
प्रकाशक : वैदिक संसार, इन्दौर एवं
संचालक : महर्षि दयानन्द सरस्वती विद्यार्थी
आवास आश्रम, बड़वानी (म.प्र.)
चलभाष : ९४२५०६९४९१

धनानि भूमौ पशवश्च गोष्ठे भार्या गृहद्वारि जनः श्मशाने ।
देहश्चितायां परलोकमार्गे धर्मानुगो गच्छति जीव एकः ।।

भावार्थ : धन भूमि में गड़ा रह जाता है। पशु पशुशाला में बन्धे रह जाते हैं। पत्नी घर के द्वार तक और लोग श्मशान तक जाते हैं। शरीर चिता तक रह जाता है। परलोक में जीव अकेला जाता है। केवल उसके धर्म-कर्म साथ होते हैं।

नीतिकार का यह वचन मानव जीवन दर्शन करवा रहा है। वैदिक शिक्षा के काल में जिनके पास राजपाट, धन-वैभव की कोई कमी नहीं होती थी। वे भी उक्त श्लोक को अपने जीवन में चरितार्थ कर समस्त ऐषणाओं (लौकेषणा, वितैषणा, पुत्रेषणा) से ऊपर उठकर सब कुछ त्याग कर मात्र और मात्र परमपिता परमेश्वर को प्राप्त करने को जीवन का ध्येय बनाते थे और धर्म मार्ग पर चल पड़ते थे।

किन्तु वर्तमान का मनुष्य थोड़ी सी भी पद-प्रतिष्ठा, धन-सम्पदा, पुत्र-पौत्रादि प्राप्त हो जाने पर अपने जीवन के चरम और परम ध्येय को भूल जाता है अथवा भूला देता है और अपना अनुपम मानव जीवन विनष्ट ही नहीं करता अपितु दुर्गति को भी प्राप्त होता है।

दिनांक २१ सितम्बर को प्रात: ७:१३ बजे मैंने **'भगवान ऐसी औलाद किसी को न दे!'** शीर्षक से एक पोस्ट मेरे द्वारा संचालित व्हाट्सएप समूहों में प्रेषित की थी। इस पोस्ट में एक सेना से सेवानिवृत्त मेजर की अत्यन्त झकझोर देने वाली गाथा है। मेजर महोदय के तीन पुत्र थे। आपने तीनों को उच्च शिक्षा दिलवाई। तीनों उच्च पदों पर पदस्थ हो गए। एक बार तीनों ने अपने-अपने परिवारों के साथ विदेश भ्रमण का मन बनाया। पिताजी अस्वस्थ होने से बोलने तथा चलने में समर्थ नहीं थे। पुत्रों ने पिताजी को नौकर के भरोसे छोड़ दिया। नौकर ब्रेड लाने के लिए दरवाजे पर ताला लगाकर बाजार गया और वहाँ किसी दुर्घटना से ग्रसित होने पर कोमा में चला गया। ३ महीने पश्चात् जब पुत्र लौटे तो ताला तोड़कर प्रवेश किया तो पिताजी का कंकाल बिस्तर पर पड़ा हुआ था। जिसका चित्र सहित समाचार किसी समाचार पत्र में प्रकाशित हुआ था जिसे सोशल मीडिया पर किसी ने प्रेषित किया था। मुझे सोशल मीडिया पर यह समाचार प्राप्त होने पर मैंने इसे अन्यत्र समूहों में फॉरवर्ड किया था। समाचार की वास्तविकता संदिग्ध है किन्तु वर्तमान में ऐसा अधिकांश हो भी रहा है और इस समाचार को काल्पनिक कथानक भी मान लिया जाए और ऐसी स्थिति किसी के साथ वास्तविक रूप में उपस्थित होती है तो यह अत्यन्त मर्मान्तक और पीड़ादायक है।

इसी प्रकार उत्तरप्रदेश के किसी महानगर में भी एक घटना पूर्व में घटित होने की जानकारी प्राप्त होती है। जिसमें सेना से सेवानिवृत्त मेजर महोदय के दो पुत्र थे। आपने दोनों को उच्च शिक्षा दिलवाई। दोनों बेटे विदेश नौकरी करने चले गए और वहीं पर अपनी गृहस्थी बसा ली। यहाँ मेजर महोदय अपनी पत्नी के साथ रहते थे। शुरू-शुरू में तो बेटों का आना-जाना बना रहा किन्तु धीरे-धीरे आवागमन कम होता चला गया। जब माता जी का देहान्त हुआ तो मेजर महोदय ने पुत्रों को सूचना दी और पत्नी का शव किसी अस्पताल के शवगृह में रखवा कर पुत्रों की प्रतीक्षा करने लगे। तीसरे दिन छोटा बेटा आया पिताजी ने उससे पूछा तुम्हारा बड़ा भाई नहीं आया? उसने बताया भाई के पास व्यस्तता अधिक थी इसलिए उन्होंने कहा कि अभी तू चला जा, जब पिताजी का देहान्त होगा तब मैं चला जाऊंगा। मेजर को यह बात सुनकर अत्यन्त मानसिक आघात पहुँचा। मेजर महोदय अपने कमरे में गए और एक पत्र अपने सुपुत्रों के नाम लिखा कि हमसे भूल हुई जो हमने बच्चों को जो शिक्षा देना थी वह नहीं दे पाए। आज अपनी जन्म देने वाली माता की मृत्यु पर भी उनके पास समय नहीं है। बेटा अब तू आ गया है तो तेरी माँ के साथ मेरा भी अन्तिम संस्कार करता जा, बाद में तू तो आयेगा नहीं और तेरे भाई को समय नहीं मिला तो मेरा क्या होगा? इससे अच्छा है मेरा भी अन्तिम संस्कार तेरी माँ के साथ ही हो जाये। पत्र पूर्ण कर मेजर जी ने अपनी लायसेंसी रिवाल्वर निकाली और अपनी कनपटी पर गोली मार ली।

वर्तमान में वैदिक शिक्षा के अभाव में यह कोई एक-दो मेजरों की घटना नहीं अपितु संसार के समस्त मेजरों की यही दिशा-दशा है। मेजर से तात्पर्य सेना के ही मेजर नहीं होता। मेजर अर्थात् बड़ा। बड़ा अर्थात् परिवार के बड़े-बूढ़े, जिन्होंने बच्चों का जीवन बनाने में अपना जीवन खपा दिया। वर्तमान काल में कुछ अपवाद छोड़कर लगभग चहुँ ओर यही हो रहा है। कहीं कम तो कहीं अधिक और यह स्थिति वहाँ अधिक दिखाई दे रही है जहाँ उच्च शिक्षा और सम्पन्नता अधिक है।

संयोगवश दिनांक २१ की रात्रि को ही मेरा मेरठ जाना हुआ। वहाँ एक ७६ वर्षीय सज्जन से मेरी प्रथम भेंट हुई जो शासकीय बैंक से सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रबन्धक है। जिनके पत्नी, एक पुत्र और दो पुत्री हैं किन्तु उनके पास कोई नहीं रहता। विगत ढाई साल से अकेले रह रहे हैं। सुपुत्रियों का विवाह होकर वे मस्कट (ओमान) व सियाटल (अमेरिका) विदेश में कार्यरत हैं। पुत्र और पुत्रवधू दोनों उच्च शिक्षित होकर अन्यत्र नगर में सेवारत हैं। उनकी माताजी भी उनके साथ है। इन सज्जन के पास एक बड़ा सा मकान है, जिसमें आप अकेले रहते हैं। एक मकान नहीं कोठी कहो गाजियाबाद के सभ्रान्त क्षेत्र में भी है। जिसमें कोई नहीं रहता। पुत्र और

पत्नी इसे बेचने भी नहीं देते और न ही किराए पर देने देते हैं। जिस कारण इसके रखरखाव पर होने वाला ४००० रु. मासिक व्यय भी आपको भुगतान करना होता है। आपकी शारीरिक अवस्था ऐसी है कि आपको कार की ड्राइविंग सीट पर बैठने में ५ मिनट का समय लगता है। गाड़ी को पीछे लेने में मुड़कर देखने में आपको कठिनाई होती है। कुल मिलाकर जिस अवस्था में अपनों की आवश्यकता होती है। उस अवस्था में अपनों द्वारा दी गई मानसिक वेदना के साथ जीवन व्यतीत करने को आदमी विवश है। सज्जन इतने हैं कि प्रथम परिचय होने पर भी रात्रि को लगभग १०:०० बजे मेरे मना करने के उपरान्त भी मेरठ बस स्थानक तक मुझे छोड़ने के लिए आए।

मैंने उक्त वृत्तान्त को उनके अवलोकन और सार्वजनिक प्रकाशन हेतु उनकी अनुमति हेतु उन्हें भेजा आपकी ओर से जो प्रत्युत्तर प्राप्त हुआ उन्हीं के शब्दों में पाठक बन्धुओं के सम्मुख प्रस्तुत है-

परम आदरणीय शर्मा जी

मेरा सौभाग्य है कि अचानक आपसे परिचय हुआ और कुछ ही पलों में इतनी निकटता। मैंने जो किया वह तो मेरा फ़र्ज़ था।

अपने बारे में पढ़कर आधा घण्टा अश्रु रोक नहीं पाया। इसे प्रकाशित कर एक कापी मुझे भेज दें। कुछ संशोधन चाहूँगा। (१) मेरा एक पुत्र व दो पुत्रियाँ मस्कट (ओमान)व सियाटल (अमेरिका) में है। (२) मैं ७६ वर्ष पूरे कर चुका हूँ व ढ़ाई साल से अकेला हूँ। (३) मेरी सारी सम्पत्ति बैंक खाते व एफडी (६० लाख), फ्लैट (९५) लाख का बेटे ने पत्नी के द्वारा ब्लॉग कर रखा है। मैं सिर्फ पेंशन ४१००० रु. पर निर्भर हूँ। (४) बीमारी में इलाज के लिए भी पैसा नही है। (५) पत्नी को ७५ लाख देकर साथ रखना चाहता हूँ। पर वे बेटे के दबाव में नहीं आ रही।

सिर्फ मेरे मरने का इन्तजार है ताकि सारा इन्हें मिल जाए। इसके छपने से औरों को भी शिक्षा मिलेगी। -आपका ही

वैदिक शिक्षा होती तो वैदिक वर्ण व्यवस्था और वैदिक आश्रम व्यवस्था होती। सन्तानादि से दूरी होना शाश्वत् नियम है। वैदिक आश्रम व्यवस्था पूर्वक होगी तो मान-सम्मान, प्रेम बना रहेगा। आश्रम व्यवस्था अनुकूल नहीं होगी तो अप्रिय स्थिति उत्पन्न होकर पारिवारिक सुख-शान्ति, मान-सम्मान, प्रेम भंग तो होगा ही सभी परिजनों का जीवन मानसिक रूप से संतप्त होगा। वैदिक आश्रम व्यवस्था में सात वर्ष का बालक गुरुकुल चला जाता। शिक्षा पूर्ण कर घर लौटता दो-चार वर्ष में विवाह किया जाता। दो-चार वर्ष में पुत्र के पुत्र हो जाता ओर महाशय जी वानप्रस्थाश्रम को प्रवेश कर जाते। इस प्रकार बाल्यकाल के सात वर्ष और युवा काल के लगभग सात आठ वर्ष कुल मिलाकर १४-१५ वर्ष तक का पिता-पुत्र का साथ था और इतना ही लगभग अब भी है किन्तु सनातन संस्कृति सम्मत प्रथम स्थिती आनन्ददायक है और लॉर्ड मैकाले व जन्मना नामधारी तथाकथित ब्राह्मण वर्ग द्वारा थोपित द्वितीय स्थिति पीड़ादायक।

अभी अवैदिक श्राद्ध पक्ष चल रहा है। जिसके विषय में किसी विद्वान् ने कितना सटीक कहा है- **'जितम जी दंगम दंगा, मरत पीछे ले जाये गंगा।'** श्रद्धा का तात्पर्य है श्रद्धापूर्वक की गई सेवा। जो कुछ अपवाद छोड़कर कहीं दिखाई नहीं देती किन्तु मरने के पश्चात् कुछ अपवाद छोड़कर सभी ओर दिखाई देती है जिसका कोई औचित्य नहीं है।

आओ लौट चलें वेदों की ओर...।

चन्द्रयान-३ भारत का स्वर्ण दिवस

(दिनांक २३ अगस्त २०२३)

चन्द्रमा के भाल पर भारत के तिरंगे का तिलक से सम्मान है।
हिन्द के समस्त वैज्ञानिकों व अन्तरराष्ट्रीय सराहनीय योगदान है।।
भारत की १४० करोड़ भाई-बहनों के, गौरव का स्वाभिमान है।
जप तप यज्ञ पूजा सभी साधकों की, सफल तपस्या ईश को कबूल है।।
सहर्ष कोटिश: सादर नमन श्री सोमनाथजी, इसरो अध्यक्ष कुशल नेतृत्व है।
पूज्य हो सज्जन डॉ. माहल स्वामीजी अन्नादुराई वैज्ञानिक का विशेष ज्ञान है।।
सदा नमस्कार श्री रमेशचन्द्र कपूरजी को, अंतरिक्ष वैज्ञानिक का श्रेष्ठ ध्यान है।
आपकी सम्पूर्ण टीम का विशेष भारी श्रेष्ठ, सराहनीय दिव्य अनूठा कार्य है।।
सत्यसंकल्प भव्य लक्ष्य से जय होती, विश्व आरती उतारना है।
ब्रह्माण्ड नायक परमात्मा, कर्मठों के हौसलों को सफलता का वरदान है।।
मन वाणी कर्म की दिव्यता सर्वहितैषी अभियान को विश्व सम्मान है।
ज्ञान विज्ञान की ऊँचाई ऋषि आविष्कारों का बेजोड़ अनुसंधान है।।
चौदह जुलाई से तेईस अगस्त दो हजार तेईस, स्वर्ण अक्षरों में मान है।
महामहीम राष्ट्रपति परम वन्दनीय द्रौपदी मुर्मू, की तपोनिष्ठ शुभ कामना है।।
माननीय श्री नरेन्द्र मोदीजी प्र.मं. भारत की, बधाई अति सुखदाई है।
'सुन्दर' दक्षिण ध्रुव विजय तिरंगा वंदे मातरम् गान, से जग रोशन हिन्दुस्तान है।।

● **सुन्दरलाल प्रहलाद चौधरी**
अधीक्षक : पोस्ट मैट्रिक अनुसूचित जाति बालक छात्रावास
बुरहानपुर (म.प्र.), चलभाष : ९९२६७६११४३

वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ (गुजरात) की आगामी गतिविधियाँ

नवनिर्मित गुरुकुल भवन का उद्‌घाटन

दिनांक : ८ दिसम्बर २०२३ । **सम्पर्क :** ९४२७०५९५५०

परोपकारिणी सभा, अजमेर की आगामी गतिविधियाँ

ऋषि मेला

दिनांक : १७ से १९ नवम्बर २०२३ तक

सृष्टि सम्वत् की एकरूपता हेतु सम्वाद

दिनांक : १६ व १७ दिसम्बर २०२३

आयोजन स्थल : ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड, अजमेर (राज.)

सम्पर्क

परोपकारिणी सभा कार्यालय : ०१४५-२४६०१६४

चलभाष : ८८९०३१६९६१

ऋषि उद्यान : ०४५-२९४८६९८

हर सनातनी को सन्तान को वैदिक शिक्षा देना होगी

मैं अरविन्द पुरोहित, अहमदाबाद (९३२८११८४७२) इस लेख के माध्यम से आपसे कुछ विचार साझा करना चाहता हूँ। मेरा जन्म एक पौराणिक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। १५ वर्ष तक कई संप्रदायों में भटकने के बाद भी मेरे मन में उठ रहे प्रश्नों के उत्तर नहीं मिल रहे थे। फिर एक दिन ईश्वर की महती कृपा हुई। कोरोना काल अप्रैल २०२० के प्रथम लॉकडाउन में एक सज्जन की कृपा से महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। मैंने पढ़ना चालू किया, सत्यार्थ प्रकाश मेरी हर जिज्ञासा को शांत कर रहा था और मन में उठ रहे एक-एक प्रश्न का उत्तर मानो एक-एक पृष्ठ दे रहा था। मैंने ४० दिनों में धीरे-धीरे १४ समुल्लास पूर्ण किए। ऐसा लगा जैसे ज्ञान का अमूल्य खजाना हाथ लगा हो। सत्यार्थ प्रकाश को पूर्ण करने के साथ ही मैं आर्य समाजी बन गया। उसके बाद १ वर्ष में ऋषि कृत काफी ग्रंथ पढ़ दिए और वैदिक विचारधारा से ओत-प्रोत हो गया था।

एक दिन ईश्वर की कृपा से मैंने ये निर्णय लिया कि मैं अपनी संतानों को वैदिक शिक्षा प्रदान करूँगा मेरी ३ पुत्रियाँ हैं। कुछ आर्य विद्वानों के मार्गदर्शन से मुझे आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज के बारे में जानने का अवसर मिला। मैं मेरी बड़ी पुत्री के लिए ऐसे ही आदर्श गुरुकुल की खोज कर रहा था, जिसमें ऋषि दयानन्द कृत वैदिक पठन-पाठन व्यवस्था और वैदिक शिक्षा हों। मेरी बड़ी पुत्री सुमन पुरोहित जो कक्षा ६ तक अहमदाबाद में अंग्रेजी माध्यम में पढ़ाई की है। फिर मैंने जून २०२२ को आर्ष कन्या गुरुकुल शिवगंज में प्रवेश करवाया। यहाँ के गुरुकुल की प्रधानाचार्य श्रीमती सूर्यादेवी चतुर्वेदा वेद और संस्कृत व्याकरण की महान् विदुषी हैं जो सभी कन्याओं को प्रतिदिन स्वयं शिक्षा प्रदान करती हैं। इस गुरुकुल का पाठ्यक्रम अतिउत्तम है और वैदिक वांङ्मय, उपनिषद्, दर्शन, पाणिनी व्याकरण, आदि सभी विषय उत्कृष्ट शैली से पढ़ाए जाते हैं, और साथ ही साथ आधुनिक शिक्षा से भी वंचित नहीं रखा जाता है। यहाँ पर कन्याओं (ब्रह्मचारिणी) की शिक्षा, चिकित्सा, योग शारीरिक व्यायाम खेलकूद, लाठी, भाला, कराटे, संगीत, यज्ञ, संध्या,आदि का प्रतिदिन अभ्यास करवाता जाता है। यहाँ पर कन्याओं की योग्यता का विशेष ध्यान रखा जाता है और प्रतियोगिता के लिए बाहर भी भेजा जाता है।

इस गुरुकुल की शिक्षा प्राप्त करके छात्राएँ बड़े-बड़े सरकारी पदों पर भी पहुँची हैं। ये सभी आचार्या सूर्यादेवी जी की कड़ी मेहनत, संघर्ष, लगन और आत्मविश्वास से ही संभव हो पाया है। शुद्ध वातावरण, शुद्ध खानपान आहार, शुद्ध संस्कार, शुद्ध वैदिक ज्ञान, शुद्ध आचरण, हर व्यवस्था यहाँ उपलब्ध है। यहाँ की हर छात्रा अलग योग्यता रखती है। मैं सच कहूँ तो बहुत भाग्यशाली हूँ कि मेरी पुत्री ऐसे आदर्श गुरुकुल में अध्ययन कर रही हैं। मैं तो कहता हूँ हर सनातनी को अपनी संतान के अंदर वैदिक शिक्षा का बीज बोना ही होगा और इसके लिए आर्य कन्या गुरुकुल जैसे आदर्श गुरुकुल ही एक मात्र विकल्प है।

।।ओ३म्।।

बांगरमऊ के इतिहास में पहली बार

राष्ट्र पितामह महर्षि दयानन्द सरस्वती की २००वीं जन्म जयन्ती एवं आर्य समाज बांगरमऊ की स्वर्ण जयन्ती के पावन अवसर पर आर्यवीर दल उ.प्र. के आह्वान पर एवं आर्य समाज बांगरमऊ के तत्वावधान में

आध्यात्मिक वैदिक दिव्य सत्संग एवं २०० कुण्डीय महायज्ञ व ऋषि चर्चा का विशाल आयोजन

२३ दिसम्बर दिन शनिवार से २६ दिसम्बर दिन मंगलवार तक

स्थान : शान्ति निकेतन गेस्ट हाउस, बांगरमऊ, उन्नाव (उ.प्र.)

नोट : २०० कुण्डीय महायज्ञ का स्थान इ. गाँधी डिग्री कॉलेज बांगरमऊ

अत: आप सपरिवार इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।
यज्ञ के यजमान बनकर पुण्य के भागी बनें।
मान्यवर! कार्यक्रम की सफलता हेतु आप अपनी सामर्थ्यानुसार भोजन सामग्री, यज्ञ सामग्री या सात्विक दान
'आर्य समाज बांगरमऊ' के खाता संख्या
७३१२१०११०००८७८१ (आईएफएससी BKID0007312)
में डालकर या चेक देकर कृतार्थ करें।

आमन्त्रित विद्वान्

आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री महोपदेशक (यज्ञ के ब्रह्मा)
पं. कुलदीप विद्यार्थी, भजनोपदेशक बिजनौर
आचार्य पंकज आर्य, संचालक आर्य वीर दल उत्तरप्रदेश

निवेदक

आर्य समाज बांगरमऊ के पदाधिकारी एवं सदस्यगण

सम्पर्क सूत्र : रामगोपाल आर्य (प्रधान)
८१८१८१५४०३
सुशील कुमार आर्य (मन्त्री)
९७९४२९०६५३
रामस्वरूप आर्य (कोषाध्यक्ष)
९४५०८४१२७३

महर्षि दयानन्द सरस्वती आश्रम बड़वानी की मेरी यात्रा की कुछ आँखों देखी तथा अनुभूत स्मृतियाँ

● **स्वामी हरीश्वरानन्द सरस्वती**
८/५४, तेजेन्द्र नगर भाग-७,
चाँदखेड़ा, अहमदाबाद, गुजरात
चलभाष : ८१५५०५५२६०

मास जुलाई २०२३ की मासिक पत्रिका **'वैदिक संसार'** जिसका मैं भी नियमित पाठक हूँ। मैंने पत्रिका में प्रकाशित प्रकाशक की कलम से लेख जिसका शीर्षक **'जीवन में प्रथम बार ६४वाँ जन्मदिवस वैदिक विधि से हर्षोल्लासपूर्वक क्यों मनाया गया ?'** जो वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा की जीवन गाथा से सम्बन्धित था को पढ़ा। तत्काल मैंने शर्मा जी को शुभकामनाएँ देने हेतु चलभाष पर सम्पर्क स्थापित किया और नमस्ते आदि के पश्चात् मैंने उन्हें आप चिरायु हों, नीरोगी/ स्वस्थ रहें और इसी प्रकार ऋषि कार्य को आगे बढ़ाते रहे आदि शुभकामनाएँ प्रदान की।

वार्ता के मध्य मैंने शर्मा जी से कहा कि मैं आपके द्वारा अपने निवास पर संचालित आश्रम पर आना चाहता हूँ। तत्काल उन्होंने मुझे बड़वानी आने का निमन्त्रण दिया और अवश्य पधारने का आग्रह किया। आपने कहा कि आपका बस के द्वारा आरक्षण मिलने पर मुझे सूचित कर देंगे और व्हाट्सएप पर टिकट भी भेज देंगे। मैंने भी अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी। मैं इसके पूर्व भी एक बार शर्मा जी के इन्दौर स्थित निवास पर जा चुका हूँ।

यात्रा टिकट की व्यवस्था श्री शर्मा जी के द्वारा कर दी गई और मैंने दिनांक १४ सितम्बर २०२३ को बस द्वारा बड़वानी के लिए अहमदाबाद से रात्रि ७:०० बजे प्रस्थान किया। रात्रि ३:०० बजे के लगभग में बड़वानी पहुँचा जहाँ बस स्थानक पर मुझे सुखदेव शर्मा जी प्रतीक्षा करते हुए मिले। मोटरसाइकिल के द्वारा हम शीघ्र शर्मा जी के निवास (आश्रम) पर पहुँच गये। आपने जलपान का आग्रह किया मगर मैंने प्रात:काल की बेला में कुछ ग्रहण करना उचित नहीं जानकर मना कर दिया और विश्राम के लिए जो सुन्दर व्यवस्था की गई थी वहीं विश्राम किया।

प्रात: ६ बजे शर्मा जी ने मुझे निद्रा से जगा दिया क्योंकि उनके यहाँ नियमित सभी परिवारजनों का व्यक्तिश: सन्ध्या करने का नियम है। मैंने भी नित्यक्रिया से निवृत्त होकर सन्ध्या की। सुस्वादिष्ट प्रात:राश पश्चात् शर्मा जी व शर्मा जी के परिजनों और आश्रम के कुछ विद्यार्थियों के साथ हमने दैनिक यज्ञ सम्पन्न किया। यज्ञ पश्चात् मेरे द्वारा **'जड़-चेतन देवताओं के वैदिक स्वरूप'** पर प्रकाश डाला गया। भोजन ग्रहण कर कुछ वार्ता पश्चात् दुग्धपान कर विश्राम किया। सायंकाल ६ बजे मध्यप्रदेश के जिला-शाजापुर स्थित ग्राम बेरछा के आर्य समाज के प्रधान आर्य श्री आनन्दीलाल जी नाहर एवं ग्राम झोकर स्थित आर्य समाज के वरिष्ठ सदस्य आर्य श्री रमेशचन्द्र जी इन्द्रिया व अधिवक्ता श्री रमेशचन्द्र जी पाटीदार पधार गए। शर्माजी द्वारा पूर्व से सूचित कर दिया गया था कि आश्रम पर सायंकालीन सन्ध्योपासना सामूहिक रूप से ठीक समय ६:३० पर की जाती है अत: अतिथियों के जलपान पश्चात् हम सभी सन्ध्योपासना सभागार में पहुँचे वहाँ पूरे सभागार में शान्तचित्त विद्यार्थी पंक्तिबद्ध बैठे हुए थे। हम सबने मिलकर सन्ध्योपासना के मन्त्रों का पाठ किया। रात्रि ९ बजे भूतल स्थित विशाल कक्ष में प्रवचन की सूचना के साथ समापन कर शर्मा जी के आवास कक्ष में हमने भोजन ग्रहण किया।

ठीक समय पर आश्रम निवासरत विद्यार्थी उपस्थित हो गये। मेरे तथा अन्य उपस्थित अतिथियों के द्वारा **काकचेष्टा बकोध्यानम् श्वान निद्रा अल्पआहारी गृह त्यागी पंचलक्षणम्...** नीतिवचन को सम्मुख रखकर विद्यार्थियों का ध्यानाकर्षित किया कि विद्यार्थी जीवन निर्माण का काल है। इस काल में विद्यार्थी को अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए कौवे की भांति प्रयासशील तथा अपने लक्ष्य के प्रति बगुले की भांति स्थिरप्रज्ञ व सजगता कुत्ते की भांति एवं अल्प आहारी के साथ विद्या प्राप्ति के लिए घर त्याग करने को तत्पर रहना चाहिए। शर्मा जी द्वारा बताया गया कि आश्रम निवासरत बच्चों का जन्मदिवस यज्ञ द्वारा मनाया जाता है और कल बेटी प्रज्ञा का जन्म दिवस है अत: कल जन्म दिवस विषयक विशेष यज्ञ ९ बजे किया जावेगा। शयनकालीन मन्त्रों के साथ शान्ति पाठ कर शयन किया गया।

आश्रम भवन जिला मुख्यालय बड़वानी नगर के मध्य चार मंजिला होकर भवन में ६ कक्ष शौचालय स्नानागार युक्त व १२ कक्ष ४ शौचालय स्नानागार के आम उपयोगार्थ हैं। किसी कक्ष में दो तो किसी कक्ष में तीन विद्यार्थी निवास करते हैं। अल्प व्यवस्था शुल्क लिया जाता है।भूतल पूर्णत: शर्माजी व अतिथियों के उपयोगार्थ पृथक् है। यहाँ पर निवासरत २५ बालिकाएँ व कुछ बालिकाओं के ४ भाई जो दूरस्थ ग्रामीण अंचल के कृषक आदिवासी परिवारों से विभिन्न महाविद्यालयों में उच्च शिक्षा एवं प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रशिक्षण हेतु निवास कर रहे हैं। सभी विद्यार्थी अपना-अपना भोजन स्वयं के द्वारा व्यय वहन कर बनाते हैं। लगभग १०-१५ विद्यार्थीयों के और निवास हेतु व्यवस्था है। आश्रम से निवास छोड़कर जा चुके और आश्रम में निवास नहीं करने वाले विद्यार्थीयों के लिए भी वैदिक ज्ञानार्जन कर आध्यात्मिक उन्नति हेतु आश्रम के द्वार सदैव खुले हैं। आश्रम निवासी-अनिवासी के किसी भेदभाव के बिना सभी का आश्रम के व्यय पर जन्मदिवस मनाया जाता है। उपहारार्थ उन्हें वैदिक साहित्य भेंट किया जाता हैं। आर्य वीर-वीरांगना प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने हेतु प्रोत्साहित कर उनकी यात्रादि की पूर्ण व्यवस्था व्यय वहन कर की जाती है। विद्वानों को आमन्त्रित कर अतिथि यज्ञ, आश्रम पर नित्य प्रति दैनिक यज्ञ-सन्ध्या, सत्संग, साप्ताहिक

सत्संग, पर्व विशेष यज्ञ के साथ वैदिक साहित्य का पठन-पाठन करवाया जाता है। समस्त विद्यार्थी शहरी चकाचौंध से दूर सादगीपूर्ण अनुशासित हैं। वैदिक अभिवादन नमस्ते करते हैं तथा शर्मा जी को एवं उनकी धर्मपत्नी को दादाजी-दादीजी कहकर सम्बोधित करते हैं। कोई भी अंकल-आण्टी नहीं बोलता। आर्य समाज की गतिविधियों से विहीन सतपुड़ा पर्वत की तलहटी के इस वनवासी अंचल में वैदिक संस्कृति को पुनर्जीवित करने का एक उत्कृष्ट प्रयास शर्मा जी द्वारा किया जा रहा है।

दिनांक १६ सितम्बर को रात्रि से ही भारी बारिश हो रही थी जो लगभग दिनभर जारी रही इस कारण आश्रम के नियत यज्ञ स्थल जो छत पर कुछ खुला हुआ होने से वहाँ पर यज्ञ किया जाना सम्भव नहीं होने से सन्ध्योपासना सभागार में शर्मा जी ने यज्ञ की व्यवस्था की। नित्यकर्म स्नानादि और सन्ध्योपासना व प्रात:राश के पश्चात् ठीक ९ बजे हम यज्ञ स्थल पर पहुँचे।

वर्तमान में महाविद्यालयीन शिक्षा में रत बालिकाओं द्वारा चित्रपट्ट अभिनेत्रियों और व्यवसाय विज्ञापन में रत व्यावसायिक महिलाओं द्वारा परोसी जा रही अर्द्धनग्नता, शारीरिक प्रदर्शन व शृंगार के नाम पर सौन्दर्य प्रसाधनों का अतिउपयोग का अन्धानुकरण किया जा रहा है। किन्तु इस सबसे परे आश्रम निवासरत बेटियों द्वारा बेटी प्रज्ञा का उसके कक्ष में सादगीपूर्ण शृंगार कर माल्यार्पण कर ईश्वर स्तुति-प्रार्थना-उपासना के मन्त्रों का उच्चारण व पुष्पवर्षा करते हुए यज्ञ स्थल पर लाकर मुख्य यजमान के आसन पर विराजित किया गया। साथ में उसकी बहन पद्मावती व अन्य स्थानों पर अन्य बालिकाओं ने स्थान ग्रहण किया।

बेटी प्रज्ञा द्वारा पितवस्त्र भेंटकर यज्ञब्रह्मा के रूप में मेरा ऋत्विक् वरण व अन्य अतिथियों का सम्मान कर स्थान ग्रहण करवाया गया। प्रज्ञा के समीप सहयोगार्थ शर्मा जी की धर्मपत्नी श्रीमती दुर्गा शर्मा उपस्थित थीं। अतिरिक्त स्थान पर बालक-बालिकाएँ व शर्माजी के सुपुत्र-पुत्रवधुओं ने स्थान ग्रहण किया। शर्माजी के जयेष्ठ सुपुत्र नीलेश शर्मा भी सपरिवार पधार चुके थे। जो शामगढ़, जिला-मन्दसौर (म.प्र.) स्थित शासकीय चिकित्सालय में पदस्थ है।

संकल्प पाठ, दैनिक यज्ञाहुतियों पश्चात् जन्मदिवस विषयक विशेष मन्त्रों की आहुतियाँ प्रदान की गई। मन्त्रों के अर्थ का वाचन बेटी प्रज्ञा द्वारा किया गया। पूर्णाहुति पश्चात् शुभ मंगलकारी वचनों के साथ पुष्पवर्षा करते हुए बेटी प्रज्ञा को उपस्थित महानुभावों एवं विद्यार्थियों द्वारा शुभाशीष तथा शुभकामनाएँ प्रदान की गई। आश्रम की ओर से हम सभी महानुभावों का शॉल ओढ़ाकर आत्मीय अभिनन्दन किया गया। मेरे द्वारा **'मनुष्य जीवन में अनुशासन का महत्व'** विषय पर प्रकाश डाला गया। अन्य अतिथियों द्वारा भी प्रेरक उद्बोधन प्रदान किया गया। शान्ति पाठ के द्वारा समापन किया गया।

भोजन ग्रहण कर हमें वेदयोग महाविद्यालय गुरुकुल केहलारी, जिला-खण्डवा प्रस्थान करना था जहाँ नवनिर्मित गुरुकुल भवन का अवलोकन व एक रात्रि विश्राम कर इन्दौर होते हुए अहमदाबाद लौटना था। अत: शीघ्रतापूर्वक हमने दाल-बाटी और चूरमा का भोजन कर आश्रम से शर्माजी के साथ उनके बेटे के चार पहिया वाहन से प्रस्थान किया। बस स्थानक छोड़ने से पूर्व शर्मा जी हमें बड़वानी से दक्षिण दिशा में ८ किलोमीटर दूर रमणीय पर्वतीय स्थल स्थित जैन तीर्थ बावनगजा ले गए। वहाँ से लौटकर हम बस स्थानक बड़वानी आये। जहाँ पर पता चला कि अत्यधिक वर्षा के कारण सड़क यातायात बाधित है और बसे नहीं जा रही है। खण्डवा जाने का विचार त्यागकर हम बड़वानी के उत्तर दिशा में लगभग ६ किलोमीटर दूर पावन सलिला नर्मदा पहुँचे। वर्षाकाल और सरदार सरोवर बाँध के कारण विहंगम दृश्य का अवलोकन खण्डवा-बड़ौदा राजमार्ग पर स्थित लगभग डेढ़ किलोमीटर सेतु से किया। वर्षा के साथ-साथ तेज हवा भी चल रही थी। वहाँ से लौटकर बड़वानी बाईपास से होते हुए बड़वानी नगर के छोर पर अत्यन्त ऊँचाई पर एक पहाड़ी पर नवनिर्मित जिलाधीश कार्यालय होते हुए उससे और अधिक ऊँचाई पर नवनिर्मित विश्रामगृह पर पहुँचे। वर्षा और अत्यधिक ऊँचाई पर हवा के तेज थपेड़ों के साथ सम्पूर्ण बड़वानी नगर के साथ-साथ समीपवर्ती हरे भरे खेतों का दृश्यावलोकन रोमांचकारी रहा। वहाँ से लौटकर पुन: आश्रम आ गये। फलाहार ग्रहण किया।

सायंकालीन सन्ध्योपासना मन्त्र पाठ ठीक ६:३० पर सामूहिक रूप से किया। **'सन्ध्या करने से हमारे बल में वृद्धि'** विषय पर प्रकाश डालते हुए प्रत्येक व्यक्ति के लिये सन्ध्या आवश्यक कर्तव्य कर्म बताया। अन्य अतिथियों ने भी प्रेरक उद्बोधन प्रदान

अच्छा नहीं हुआ

क्या कहे किसको दोष दे अच्छा नहीं हुआ,
अब तक जो हुआ देश में अच्छा नहीं हुआ।
स्वतंत्रता के बाद भी गुलामी जा नहीं सकी,
हर शाख पे बैठे हैं उल्लू अच्छा नहीं हुआ।
आकांक्षाओं की चाह में संस्कृति बिसार दी,
जीने की कला भूल गए अच्छा नहीं हुआ।
स्वार्थ और जज़्बात हमारे इस कदर बढ़े,
घर में ही धोखा कर गए अच्छा नहीं हुआ।
विश्वास करके जिनको बनाया था रहनुमा,
बदनुमा से हो गए अच्छा नहीं हुआ।
किससे करे शिकायत कोई तो साफ हो,
रग-रग में कालिख पुत गई अच्छा नहीं हुआ।
मज़हब व जातिवाद, प्रांतवाद छा गया,
राष्ट्रवाद भूल गए अच्छा नहीं हुआ।
सोने की चिड़िया था कभी देश ये मेरा,
कथिल बनके रह गया अच्छा नहीं हुआ।
एक आग जो ऐसी लगी आतंकवाद की,
पूरा ही विश्व जल रहा अच्छा नहीं हुआ।
अपराधीकरण के जाल में सत्ता उलझ गई,
राष्ट्र प्रेम खो गया अच्छा नहीं हुआ।
अब तक जो हुआ देश में अच्छा नहीं हुआ।

● **राधेश्याम गोयल**
न्यू कॉलोनी, कोदरिया (महू)
चलभाष : ९६१७५९७९१०

किया।

भोजन की बिल्कुल इच्छा नहीं होने से हम सभी ने शर्मा जी को भोजन के लिए मना कर दिया किन्तु शर्मा जी ने हमें खाने को ऐसी वस्तु दी जो मैंने अपने जीवन में कभी नहीं खाई। बेसन, पालक, मैथी और मिर्च के पकोड़े तो बहुत खाए किन्तु शर्मा जी की पत्नी और बहूओं के द्वारा बड़ी-बड़ी, मोटी-मोटी मिर्चों को बेसन में इस प्रकार लपेटकर मूंगफली के तेल में बनाया गया कि मिर्च का एक हिस्सा खुला दिखाई दे रहा था जो गर्म तेल में अच्छी तरह भून कर स्वादिष्ट हो गया था। ऊपर से शर्माजी ने हमारे पास बैठकर अत्यन्त आत्मीयतापूर्वक उन बेसन लपेटी तली हुई मिर्चियों को जो बिल्कुल भी तीक्ष्ण नहीं थी पर नीबू-नमक लगाकर और अधिक स्वादिष्ट बना दिया। पेट में जगह और मन में इच्छा नहीं होने के उपरान्त भी हम खाते चले गये। इसके पश्चात् हम सभी शर्माजी की भानजी श्रीमती निर्मला कैलाश शर्मा के वहाँ गये। वहाँ सत्संग-वार्ता उपरान्त लौटकर दुग्धपान कर शयन किया।

दिनांक १७ सितम्बर को रविवार होने से नित्यप्रति साप्ताहिक यज्ञ-सत्संग के साथ बेटी मोनिका डॉवर एवं शर्मा जी की सुपौत्री स्वस्ति का जन्मदिवस विषयक विशेष यज्ञ भी जुड़ गया।

प्रात:काल नित्य कर्म स्नानादि से निवृत हो सन्ध्योपासना पश्चात् प्रात:राश ग्रहण कर यज्ञ स्थल सभागार में ९ बजे पहुँचे। आज भी वर्षा हो रही थी। बेटी मोनिका को उसके कक्ष से माल्यार्पण कर ईश्वर स्तुति-प्रार्थना-उपासना मन्त्रों का पाठ करते तथा पुष्पवर्षा करते हुए यज्ञ स्थल पर लाया गया और मुख्य यजमान आसन पर विराजित किया गया। इसी प्रकार बेटी स्वस्ति को शर्मा जी के आवास से आश्रम निवासरत बेटियों व परिजनों द्वारा माल्यार्पण कर ईश्वर स्तुति-प्रार्थना-उपासना के मन्त्रों का उच्चारण करते हुए पुष्पवर्षा के साथ यज्ञ स्थल पर लाया गया और पूर्वाभिमुख विराजित किया गया।

यज्ञ वेदी के समीप यजमान स्वरूप आश्रम की बेटियों व शासकीय कन्या छात्रावास बड़वानी से पधारी बालिका कु. ललिता ने स्थान ग्रहण किया। अन्य रिक्त स्थान पर आश्रम के बालक-बालिकाएँ और शर्मा जी के परिजन व शर्मा जी के साले श्री जगदीश शर्मा अपनी धर्मपत्नी श्रीमती अंजना शर्मा के साथ विराजित हुए। मैने व अतिथियों ने नियत स्थान ग्रहण किया। मेरे ब्रह्मत्व में दैनिक यज्ञाहुतियाँ प्रदान की जाकर जन्म दिवस विषयक विशेष मन्त्रों की आहुतियाँ प्रदान की गई। मन्त्रों का अर्थ वाचन बारी-बारी से मोनिका और स्वस्ति द्वारा किया गया। पूर्णाहुति प्रकरण की आहुतियाँ प्रदान कर वृहद यज्ञ सम्पन्न किया गया।

यज्ञ पश्चात् मेरे द्वारा **'ईश्वर के गौणिक नाम ब्रह्मा, विष्णु, महेश'** की व्याख्या प्रस्तुत की गई तथा अतिथि रूप में उपस्थित श्री रमेशचन्द्र जी इन्द्रिया द्वारा **'समाज व संसार में मातृशक्ति का स्थान और मानव जीवन निर्माण में भूमिका'** पर प्रकाश डाला गया। श्री आनन्दीलाल की नाहर ने **'परतन्त्रता के इतिहास'** पर प्रकाश डालते हुए सजग नागरिक बनने का आह्वान किया, अधिवक्ता श्री रमेशचन्द्र जी ने **'अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्य निर्वहन'** पर बल दिया। उपस्थित महानुभाव तथा विद्यार्थियों द्वारा मंगल वचनों के साथ पुष्प वर्षा करते हुए तथा वैदिक साहित्य भेंट कर दोनों बेटियों को शुभाशीष/शुभकामनाएँ प्रदान की गई।

विशेष : शर्मा जी के परिवार में पौत्र का जन्म हुआ है। अभी शिशु मात्र २०-२२ दिवस का ही है। नामकरण संस्कार तो होना शेष है मगर परिवार ने उसका सम्भावित नाम **'देवप्रज्ञ'** का मानस बनाया है। इस नाम की पुष्टि हम सभी से करवाई गई तथा शिशु को सर्वप्रथम मेरी गोदी में दिया गया। मेरा मन प्रसन्नता से भर गया। बालक स्वस्थ तथा सुन्दर है। मैंने व अन्य अतिथियों ने बालक को खूब-खूब आशीर्वाद प्रदान किया।

महत्वपूर्ण अनुभव : जैसा कि मैंने पूर्व में उल्लेख किया है कि शर्मा जी से मेरा पुराना परिचय है और मैं शर्मा जी के इन्दौर निवास पर भी पूर्व में आ चुका हूँ किन्तु अबकी बार बड़वानी में सभी पारिवारिक सदस्यों का परिचय तथा दर्शन का लाभ मिला। परिवारजनों से वार्ता करने तथा व्यवहार से मुझे यह अनुभव हुआ कि ऐसा वैदिक संस्कारी परिवार मैंने जीवन में पहली बार देखा। यहाँ पर परिवारजन एवं आश्रम निवासरत विद्यार्थी सभी प्रतिदिन सायंकाल की सन्ध्या एक साथ बैठकर करते हैं। सायंकालिन सन्ध्या का समय ६:३० का निश्चित है। संध्या के पश्चात शर्मा जी द्वारा बौद्धिक उपदेश व शंका समाधान किया जाता है। शर्मा जी की अनुपस्थिति में सत्यार्थ प्रकाश का वाचन किया जाता है। दैनिक यज्ञ प्रात: एक समय नियमित किया जाता है समय सुविधा अनुसार सदस्य भाग लेते हैं। प्रत्येक रविवार को साप्ताहिक यज्ञ-सत्संग होता है। विशेष प्रसंग पर भी विशेष यज्ञ होता है जिसमें परिवारजन तथा छात्र-छात्राएँ भी भाग लेते हैं। छात्र-छात्राओं के साथ पारिवारिक सदस्य जैसा ही व्यवहार किया जाता है। एक विशेष बात यह अनुभव की कि सभी पुत्र और वधुएँ मिलजुल कर रहते हैं। सभी कार्य मिलजुल कर करते हैं। श्रीमती शर्मा जी बहुओं के साथ मिलकर कार्य करती हैं। माता-पुत्री का सा प्रेम सास-बहुओं में हैं। घर की साफ-सफाई देखकर मन प्रफुल्लित हो गया। अतिथि सत्कार उच्च कोटि का देखने को मिला। प्रेम से खिलाया-पिलाया,सेवा की। इस परिवार को बहुत-बहुत आशीर्वाद देता हूँ यह परिवार धन-धान्य से फले-फूले। पूरी तरह शरीर से स्वस्थ और नीरोगी रहे।

भोजन ग्रहण करने के पश्चात् साथियों ने भी खण्डवा जाने का विचार त्यागकर इन्दौर जाने हेतु बस स्थानक के लिए प्रस्थान किया। शर्माजी भी हमारे साथ हो लिए क्योंकि आपको भी दिल्ली प्रस्थान करना था। बस स्थानक पर पहुँच कर ज्ञात हुआ कि इन्दौर सड़क मार्ग अवरुद्ध है। लगभग २ घण्टे प्रतीक्षा करने के पश्चात् हम धार होते हुए इन्दौर के लिए बड़वानी से रवाना हुए। शर्मा जी की ट्रेन इन्दौर से ३ घण्टे विलम्ब से होने से रात्रि १०:३० बजे सुलभ हुई और शर्मा जी दिल्ली के लिए प्रस्थान किये। मैं रात्रि ११:३० बजे गांधीधाम साप्ताहिक ट्रेन से इन्दौर से रवाना हुआ। रतलाम पहुँचकर ज्ञात हुआ कि रतलाम-दाहोद रेल मार्ग अवरूद्ध है इस परिस्थिति में रेलवे प्रशासन द्वारा वाया चित्तौड़गढ़-उदयपुर होते हुए ट्रेन को अहमदाबाद पहुँचाया गया। इस प्रकार मैं बड़वानी से अहमदाबाद ७ घण्टे की यात्रा को लगभग ३० घण्टे में अविस्मरणीय रोमांचकारी यात्रा पूर्ण कर ईश्वर कृपा से सकुशल अपने निवास स्थान अहमदाबाद पहुँचा।

(चित्रावली देखें सितम्बर अंक पृष्ठ २ पर)

आर्य रत्न ठाकुर विक्रमसिंहजी ने वैदिक सनातन संस्कृति की रक्षा में अतुलनीय योगदान दिया है : योगऋषि बाबा रामदेव

'आर्य राष्ट्र पुरोधा', आर्य जगत् के मूर्धन्य वैदिक विद्वान्, प्रखर वक्ता,भामाशाह, राष्ट्रभक्त राजनेता, राष्ट्र निर्माण पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष ठाकुर विक्रमसिंह जी के जीवन के ८० वसन्त पूर्ण होने के अवसर पर दिनांक १९ सितम्बर २०२३ को **'आयुष्काम यज्ञ'** डॉ. प्रियम्वदा वेदभारती के ब्रह्मत्व में भव्य वातानुकूलित ताल कटोरा स्टेडियम, दिल्ली में सम्पन्न किया गया। यज्ञ उपरान्त आर्ष गुरुकुल, नर्मदापुरम (होशंगाबाद), म.प्र. के कुलपिता श्रद्धेय स्वामी ऋतस्पति जी द्वारा अपने आशीर्वचनों से ठा. विक्रमसिंह जी के लिए दीर्घ, स्वस्थ एवं संस्कारित जीवन की कामना की गई।

जन्मोत्सव अभिनन्दन समारोह **'वेद निधि ट्रस्ट'** स्थापना समारोह के रूप में गुरुकुल चोटीपुरा, दिल्ली की आचार्या सुमेधा जी की अध्यक्षता में सम्पूर्ण देशभर से पधारे आर्य संन्यासियों, वैदिक विद्वानों, गुरुकुल के आचार्यों, ब्रह्मचारियों-ब्रह्मचारिणियों, सुविख्यात उद्योगपतियों, राजनेताओं,आर्य समाज के पदाधिकारियों, आर्य वीरों-वीरांगनाओं व आर्यों की उपस्थिति में गायिका सुकृति जी के द्वारा ठाकुर विक्रमसिंह जी के जीवन वृत्त से युक्त बधाई गीत के साथ प्रात: ठीक १०:४० पर प्रारम्भ हुआ।

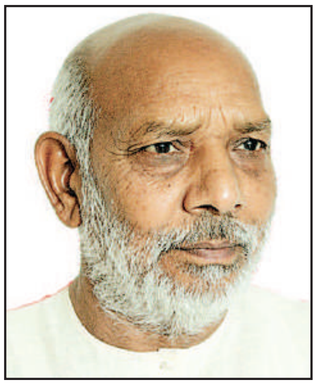

हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के संरक्षक कन्हैयालाल जी आर्य द्वारा ठाकुर विक्रमसिंह जी को पगड़ी पहनाकर तथा आर्य वीर दल की ओर से तलवार भेंटकर अभिनन्दन किया गया। केन्द्रीय आर्य युवा परिषद्, भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद्, राष्ट्र निर्माण पार्टी की गुजरात, मध्यप्रदेश, राजस्थान व अन्य इकाइयों के प्रमुखों, वेद प्रचार मण्डल दिल्ली, दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल, आर्य समाज जगतपुरी, आर्य समाज मेरठ, आर्य केन्द्रीय युवा सभा फरीदाबाद, आर्य समाज सेक्टर १९ फरीदाबाद, वेद प्रचार सभा रोहतक के आचार्य सत्यव्रत जी, गुरु वीरजानन्द सांगोपांग गुरुकुल बरेली, गुरुकुल विश्वम्भरी भैयापुर लाढ़ौत, कन्या गुरुकुल नरेला, पातंजल योग धाम हरिद्वार, वेद विद्या गुरुकुल के स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, खेड़ा खूर्द से आचार्य सुधांशु जी, अध्यात्म पत्रिका के सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखर जी शास्त्री, गोशाला नांगलिया रणमोख के स्वामी जीवानन्द जी, श्रीमती उषा आर्या जी, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के अर्जुनदेव जी चड्ढा तथा अनेक आर्य समाजों, विद्वानों और गणमान्य महानुभावों की ओर से ठाकुर विक्रमसिंह जी का भावभीना अभिनन्दन पगड़ी पहनाकर, अभिनन्दन पत्र व पुष्पगुच्छ भेंटकर किया गया। आर्य केन्द्रीय परिषद सभा की ओर से यज्ञ कुण्ड तथा इन्द्रप्रस्थ मानव मिशन के श्री शरद श्रीवास्तव जी द्वारा ओम् ध्वज प्रदान कर अभिनन्दन किया गया।

वेदनिधि ट्रस्ट की ओर से संस्कृत भाषा में आचार्य डॉ. रविन्द्र जी द्वारा तैयार किया गया विशालकाय अभिनन्दन पत्र मंचासिन गणमान्य महानुभावों के करकमलों द्वारा ठाकुर विक्रमसिंह जी को भेंट किया गया।

गुरुकुल गौतम नगर, दिल्ली तथा अनेक गुरुकुलों के अधिष्ठाता स्वामी प्रणवानन्द जी के मार्गदर्शन में तथा समारोह संयोजक डॉ. ज्वलन्त कुमार जी शास्त्री के सम्पादन में ठाकुर विक्रमसिंह जी के जीवन वृत्त पर प्रकाश डालते चित्र, आर्य जगत् के विद्वान् व कवियों की ठाकुर विक्रमसिंह जी के जीवन की विशिष्टताओं व स्मृतियों से युक्त काव्य रचनाओं तथा लेखादि से सुसज्जित अभिनन्दन ग्रन्थ का विमोचन मंचासीन गणमान्य महानुभावों द्वारा किया गया। जिसमें उनके द्वारा राष्ट्र एवं समाज हित में की गई सेवाओं को देखते हुए ठा. विक्रमसिंह जी के व्यक्तित्व को **'आर्य राष्ट्र के पुरोधा'** के रूप में रेखांकित किया गया है। अभिनन्दन ग्रन्थ की विशेषताओं पर डॉ. ज्वलन्त कुमार जी शास्त्री द्वारा प्रकाश डाला गया।

शुभकामना उद्बोधन गीत गुरुकुल चोटीपुरा की आचार्या सुमेधाजी तथा ब्रह्मचारिणियों द्वारा प्रस्तुत किया गया। समारोह के संरक्षक स्वामी आर्यवेश जी ने ठाकुर विक्रमसिंहजी को महर्षि दयानन्द का सच्चा अनुयायी बताते हुए कहा कि उन्होंने व उनके पारिवारिक सदस्यों ने अपना तन-मन-धन अर्थात् अपना सर्वस्व वैदिक सनातन संस्कृति के संरक्षण के लिए समर्पित किया हुआ है।

भगवा ध्वज वाहक, वर्तमान में १८२७ एफ.आई.आर. का सामना कर रहे सुदर्शन न्यूज चेनल के अध्यक्ष सुरेश चव्हाण जी ने अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त करते हुए परमात्मा से प्रार्थना करते हुए कहा कि ठा. विक्रमसिंह का शताब्दी वर्ष का अभिनन्दन समारोह **'भारत मण्डपम्'** में मनाने का अवसर प्राप्त हो। साथ ही उन्होंने कहा कि आर्य समाज के विद्वानों में ही ऐसी क्षमता है कि वे सनातन विरोधियों को तार्किक रूप से परास्त कर सकते हैं।

अपरिहार्य कारणों से उपस्थित न हो पाने पर योग गुरु बाबा रामदेव जी द्वारा १२:३७ बजे ऑनलाइन जुड़कर अपना उद्बोधन तथा शुभकामनाएँ प्रदान की गई। अभिनन्दन समारोह को सम्बोधित करते हुए योग गुरु बाबा रामदेव जी ने उनके दीर्घायुष्य की कामना करते हुए वैदिक सनातन संस्कृति के केन्द्र आर्ष गुरुकुलों की उन्नति के लिए ठा. विक्रमसिंहजी द्वारा दी जाने वाली आर्थिक सहायता की प्रशंसा करते हुए इसे वैदिक सनातन संस्कृति की रक्षा में एक सराहनीय कदम बताया। स्वामी जी ने कहा कि उनका स्पष्ट मत है यदि गुरुकुलों की रक्षा होगी तभी सनातन संस्कृति भी बच पाएगी। इसलिए उन्होंने सभी उद्योगपतियों से आह्वान किया कि ठा. विक्रमसिंह की तरह वे भी गुरुकुलों की रक्षा के लिए आगे आएं। नव स्थापित वेद निधि ट्रस्ट को आवश्यक आर्थिक सहयोग देकर गुरुकुलीय परम्परा को सुदृढ़ बनाने में अपना-अपना योगदान अवश्य देंवे। बाबा रामदेव जी ने आश्वासन दिया कि जितने भी रुपए की आवश्यकता हो वह पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार के खाते में डाल देना, किसी प्रकार की कमी नहीं होने दी जाएगी।

गुरुकुल एटा के आचार्य प्रेमपाल जी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान सुरेशचन्द्र जी आर्य, मन्त्री विठ्ठलराव जी, दयानन्द एंग्लो वैदिक विद्यालय के प्रकाशन विभाग के प्रमुख डॉ. एस. के. शर्मा जी, आर्य विचारों के क्रान्तिकारी कवि डॉ मोहन मनीषी जी सारस्वत ने क्रान्तिकारी विचारों से युक्त काव्य पाठ द्वारा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान धर्मपाल जी आर्य व मन्त्री श्री विनय जी आर्य , हीरो ग्रुप के अधिपति श्री योगेश जी मुंजाल ,परोपकारिणी सभा के अध्यक्ष सत्यानन्द आर्य, डा. राकेश कुमार आर्य, देवमुनि जी वानप्रस्थ, जे वी एम ग्रुप प्रमुख सुरेन्द्र कुमार जी, दिल्ली विधानसभा के पूर्व विधायक योगानन्द जी शास्त्री द्वारा संक्षिप्त उद्बोधन के साथ शुभकामनाएँ प्रदान की गई।

राष्ट्र निर्माण पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष समारोह के मुख्य संयोजक तथा वेद नीधि ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ. आनन्द कुमार जी आई पी एस द्वारा अपने उद्बोधन में बताया गया कि वेद निधि ट्रस्ट प्रमुख रूप से वैदिक शिक्षा एवं गुरुकुलों के उन्नयन के लिए कार्य करेगा। इस ट्रस्ट में ठाकुर विक्रमसिंह जी के परिवार का कोई भी सदस्य सम्मिलित नहीं है। हमारा लक्ष्य इस ट्रस्ट के लिए अब तक ८० लाख रुपए संगृहीत करने का था, जो ५० लाख रुपए अभी तक संगृहीत हो चुके हैं। वहाँ उपस्थित एमडीएच ग्रुप के महाशय जी के भतीजे श्री मनोज गुलाटी जी ने ३० लाख रुपए अपनी ओर से देने की घोषणा की तथा किन्हीं कारणों से उपस्थित न हो पाने पर एमडीएच प्रमुख महाशय राजीव जी गुलाटी द्वारा अपने शुभकामना सन्देश के साथ ११ लाख रुपए वेद निधि ट्रस्ट को दान स्वरूप भेजे गए। आर्य समाज जगतपुरी की ओर से एक लाख, गार्गी कन्या गुरुकुल के स्वामी जी द्वारा एक लाख, राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान किशनलाल जी गेहलोत द्वारा एक लाख तथा अनेक महानुभावों द्वारा भी सहयोग राशि मुक्त हस्त से प्रदान की गई।

इस अवसर पर ठाकुर विक्रमसिंह जी की धर्मपत्नी , चारों बेटे कुँवर प्राज्ञ आर्य, राहुल आर्य, इन्द्रवीर आर्य, डॉ.वरुणवीर आर्य, बेटी श्रीमती साधना आर्य, दामाद तथा पौत्र-पौत्री सहित पूरा परिवार मंच से नीचे प्रथम पंक्ति में उपस्थित था। वेद निधि ट्रस्ट की ओर से समस्त परिजनों एवं मंचस्थ गणमान्य महानुभावों का अभिनन्दन किया गया।

योग आयोग मध्यप्रदेश के अध्यक्ष डॉ वेदप्रकाश जी शर्मा पूर्व आई. जी. मध्यप्रदेश, साध्वी ऋतुम्भरा जी, आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा, माता उत्तमा यति जी, गुरुकुल माउण्ट आबू के आचार्य धनंजय जी, गुरुकुल झज्जर के आचार्य विजयपाल जी, परोपकारिणी सभा के मन्त्री तथा वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ के प्रमुख मुनि सत्यजित् जी, गुरुकुल कांगड़ी के पूर्व कुलपति डॉ सुरेन्द्र कुमार जी, दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के रजत कुमार जी गुप्ता तथा शुभकामना प्रदाता, अनेक गुरुकुलों के संचालक संन्यासी, आचार्य, विद्वान् मंचस्थ रहें।

ठाकुर विक्रमसिंह जी द्वारा अपने उद्बोधन में कहा गया कि मैं जन्म से आर्य समाजी हूँ मेरे दादा लटूरसिंह जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के प्रवचन सुने हैं। स्वामी रामदेव जी से मेरा पुराना सम्बन्ध है क्योंकि मैं स्वामी भीष्म जी का शिष्य हूँ और स्वामी रामदेव जी भी भीष्म जी के भक्त हैं। आजादी के बाद आर्य समाज की तेजस्वीता समाप्त हो गई है। आर्यों के पास बस एक ही काम आपसी लड़ाई-झगड़े का रह गया है। आपने आर्य समाज को सुदृढ़ बनाने व आगे बढ़ाने का आह्वान आर्य मुसाफिर कुँवरसिंह जी की पंक्तियाँ सुनाकर किया।

आपने यह भी कहा कि देश के हालात अच्छे नहीं है, वर्तमान में रिश्वत, भ्रष्टाचार और पाखण्ड में वृद्धि हुई है। आपने प्रख्यात पत्रकार सरदार खुशवन्त सिंह जी के द्वारा लिखी नेताओं के बारे में पंक्तियाँ सुनकर सचेत किया कि नेताओं के भरोसे मत रहो। देश की स्वतन्त्रता के पश्चात् देश के नेताओं ने स्वामी दयानन्द की उपेक्षा कर तीन व्यक्तियों को आगे बढ़ाया एक तो महात्मा गांधी, दूसरा विवेकानन्द और तीसरा अम्बेडकर जिनका सनातन वैदिक संस्कृति के लिए कोई योगदान नहीं है और ना ही उनका कोई विशिष्ट जीवन चरित्र है।

कार्यक्रम का संचालन पूर्ण ओज-तेज के साथ सफलतापूर्वक समारोह संयोजक वैदिक विद्वान् आचार्य धीरेन्द्र जी शास्त्री द्वारा किया गया। देवेश प्रकाश, सहसंयोजक, मनोज गुलाटी, दानवीर विद्यालंकार, चन्द्रमौली शर्मा, डा. गजराजसिंह, बृहस्पति आर्य, लालसिंह कुशवाहा, प्रशान्त कुमार, आचार्य दुष्यन्त, जयवीर योगाचार्य आदि ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रमुख भूमिका का निर्वहन किया।

(चित्र देखें रंगीन पृष्ठ क्रमांक ३९ पर)

दौहित्री आर्या का जन्मदिवस एवं मुण्डन संस्कार वेदोक्त विधि द्वारा सम्पन्न

ईश्वर की महती तथा असीम कृपा से दिनांक २१ सितम्बर, २०२३ को सबसे कनिष्ठ सुपुत्री भाग्यश्री धर्मपत्नी श्री अर्जुन जी शर्मा की कनिष्ठ सुपुत्री आर्या का जन्म दिवस एवं मुण्डन संस्कार आर्य जगत् के मूर्धन्य वैदिक विद्वान् भिवानी, हरियाणा से पधारे रामफलसिंह जी आर्य (सेवानिवृत्त अभियन्ता सिंचाई विभाग हिमाचल प्रदेश) के ब्रह्मत्व में

तथा गहन स्वाध्यायशील, वैदिक धर्म प्रचारक श्री मानसिंह जी धीमान, गाजियाबाद के मुख्य आतिथ्य में मोदीनगर (दिल्ली एन.सी.आर.), जिला गाजियाबाद (उ.प्र.) स्थित निज निवास पर सम्पन्न किया गया। वेदोक्त सोलह संस्कारों की अति सुन्दर व्याख्या मानसिंह जी द्वारा प्रस्तुत की गई। रामफलसिंह जी ने वर्तमान में संस्कारों के गिरते स्वरूप पर चिन्ता प्रकट करते हुए सन्तान निर्माण पर बल दिया। प्रपितामहि श्रीमती पुष्पा शर्मा द्वारा भी आर्य समाज के १० नियमों की व्याख्या परक एवं सन्तान निर्माण में माता-पिता की भूमिका परक काव्य रचना प्रस्तुत की गई।

आर्या के प्रपितामह आर्य समाज मोदीनगर के पूर्व मन्त्री श्यामलाल जी शर्मा, मेरठ से आपकी छोटी बहन श्रीमती विमला जी, आपके छोटे भाई डॉ. श्रद्धानन्द जी धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पा जी, आर्या के दादाजी श्री अशोक जी, दादीजी श्रीमती कमलेश जी, आर्या के नानाजी अर्थात् मैं, आर्या की बड़ी बहन आयुश्री तथा अन्य परिजन उपस्थित रहे और आर्या को एवं मुख्य यजमान अर्जुन जी तथा भाग्यश्री को अपना शुभाशीष प्रदान किया। **(चित्र देखें पृष्ठ ३९ पर)** ● **सुखदेव शर्मा**

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान द्वारा आयोजित विशाल आर्य महासम्मेलन भव्यता के साथ सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती की २००वीं जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान द्वारा दिनांक २३ एवं २४ सितम्बर को जयपुर महानगर में अवस्थित विश्वविद्यालय राजस्थान महाविद्यालय के खेल मैदान पर विशाल आर्य महासम्मेलन का आयोजन सम्पन्न हुआ। दो दिन के इस सम्मेलन में हजारों आर्य सज्जनों ने भाग लिया। सभा मन्त्री जीववर्धन शास्त्री ने बताया कि राजस्थान प्रांत में विगत चालीस वर्षों से इस प्रकार का सम्मेलन आयोजित नहीं किया गया था, आर्य समाजों में नवीन ऊर्जा के संचार करने हेतु बड़े सम्मेलनों की महती आवश्यकता है।

सम्मेलन के प्रथम दिवस प्रातः ७:०० बजे २०० कुण्डीय यज्ञ एवं २०० बालिकाओं का यज्ञोपवीत संस्कार विश्ववारा कन्या गुरुकुल रुड़की की आचार्या पद्मश्री सुकामा जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। ओ३म् ध्वजारोहण एम.डी.एच के चेयरमेन महाशय श्री राजीव गुलाटी जी एवं श्रीमती ज्योति गुलाटी जी के करकमलों से किया गया।

उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि आर्यसमाज के विश्वविश्रुत विद्वान् गुजरात राज्य के महामहिम राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी थे। इस अवसर पर आर्यन ग्रुप के चेयरमेन कैप्टन श्री रूद्रसेन जी, डॉलर ग्रुप के चेयरमेन श्री दीनदयाल गुप्त जी, प्रसिद्ध समाज सेवी एवं उद्योगपति श्री विजय शर्मा जी, राजस्थान के पूर्व लोकायुक्त श्री सज्जन सिंह जी कोठारी, अमेरिका से पधारे डॉ. रमेश जी गुप्ता, सर्वेभवन्तु सुखिनः ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री जितेन्द्र भाटिया जी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री किशनलाल गहलोत, मन्त्री जीववर्धन शास्त्री, कोषाध्यक्ष जयसिंह गहलोत, हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री राधाकिशन जी एवं श्रीमती ज्योति गुलाटी मंचासीन अतिथियों में सम्मिलित थे।

'उद्घाटन सत्र' की अध्यक्षता एमडीएच के चेयरमेन महाशय श्री राजीव गुलाटी ने की। मंचासीन अतिथियों का स्वागत गुरुकुल माउण्ट आबू के आचार्य श्री ओमप्रकाश, सभा के पूर्व मन्त्री डॉ. सुधीर शर्मा, प्रो. सन्दीपन आर्य, श्री अशोक कुमार शर्मा, जयपुर हेरिटेज नगर निगम की महापौर श्रीमती सौम्या गुर्जर, संजीव प्रकाशन से श्रीमती अंजू मित्तल, एवं आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के अतंरंग सदस्यों द्वारा किया गया। सत्र का संचालन सभा मत्री जीववर्धन शास्त्री ने किया।

सम्मेलन के द्वितीय सत्र में **'राष्ट्र अभ्युदय एवं युवा सम्मेलन'** के अन्तर्गत मुख्य वक्ता स्वामी धर्मबन्धु, विशिष्ट वक्ता आचार्य श्री आर्य नरेश, आचार्य श्री चन्द्रशेखर शर्मा ग्वालियर, पूर्व विधायक श्री ज्ञानदेव आहुजा थे। सत्र का संचालन प्रो. सन्दीपन आर्य द्वारा किया गया।

'महर्षि की मानवता को देन' विषयक तृतीय सत्र की अध्यक्षता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री धर्मपाल आर्य जी ने की। मुख्य अतिथि डॉलर ग्रुप के चेयरमैन श्री दीनदयाल गुप्त जी, विशिष्ट अतिथि श्री विजय शर्मा जी थे। सत्र के मुख्य वक्ता आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक रहे। सत्र में वनवासियों के प्रतिनिधि श्री देवीलाल जी गौण को सम्मानित किया गया। सत्र संयोजन डॉ. मोक्षराज आर्य द्वारा किया गया।

सायंकालीन सत्र में आर्यवीर दल राजस्थान द्वारा व्यायाम प्रदर्शन एवं शक्ति प्रदर्शन किया गया। इस सत्र में प्रान्तीय, संचालक श्री भवदेव शास्त्री, आचार्य नन्दकिशोर, श्री जितेन्द्र भाटिया एवं सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान संचालक श्री सत्यवीर आर्य उपस्थित रहे। आर्यवीरों के प्रदर्शन में कन्या गुरुकुल भुसावर, आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज, कन्या गुरुकुल दाधिया, आर्ष गुरुकुल आबू पर्वत, गुरुकुल लाढौत, हरियाणा, आर्यवीर दल पाली के कमांडो, आचार्य रामकृष्ण शास्त्री के नेतृत्व में महर्षि दयानन्द योगधाम के ब्रह्मचारियों ने भाग लिया। रात्रि ७:०० बजे से ८:०० बजे तक भजनोपदेश हुए। आचार्या श्रुति शास्त्री, प्रियंका शास्त्री, केशवदेव आर्य जी द्वारा मधुर भजनों की प्रस्तुतियां दी गई। ६ वर्षीय लघु बालिका जाह्नवी मित्तल द्वारा मधुर स्वर में स्वस्तिवाचन के मन्त्रों का गान किया गया। **'देश–देशान्तर में आर्यसमाज'** नामक सत्र में डॉ. रमेश गुप्ता जी, अमेरिका, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, उदयपुर के अध्यक्ष श्री. अशोक आर्य जी ने अपने विचार व्यक्त किये।

अन्तिम सत्र में सम्मान समारोह में सभा प्रधान श्री किशनलाल गहलोत, कोषाध्यक्ष श्री जयसिंह गहलोत, पुस्तकाध्यक्ष डॉ. मोक्षराज, प्रो. सन्दीपन आर्य, अशोक कुमार शर्मा, डॉ. सुधीर कुमार शर्मा, नरदेव आर्य, बलवन्त निडर, अशोक आर्य केकड़ी, रवि चड्ढा एवं सभा व अन्तरंग पदाधिकारी एवं सदस्यों द्वारा भारत के सभी प्रान्तों से पधारे प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के पदाधिकारियों का सम्मान किया गया। असम, हरियाणा, दिल्ली एवं छतीसगढ की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के पदाधिकारियों ने सम्मेलन में भाग लिया। सत्र का संयोजन सभा मन्त्री जीववर्धन शास्त्री ने किया।

सम्मेलन के द्वितीय दिवस का प्रारम्भ प्रातःकालीन मंत्रों से हुआ। गुरुकुल आबू पर्वत के आचार्य ओमप्रकाश जी के ब्रह्मत्व में २०० बालकों का यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य अवनीश मैत्री, डॉ. वरुण शास्त्री, आचार्य प्रशांत एवं गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा मन्त्रपाठ किया गया। प्रथम एवं द्वितीय दिवस की सम्पूर्ण यज्ञ व्यवस्था आचार्य अवनीश मैत्री, आर्य समाज मानसरोवर, जयपुर के प्रधान सुनील अरोड़ा, मन्त्री श्री तुंगनाथ त्रिपाठी, श्रीमती सुधा मित्तल, सतीश मित्तल द्वारा की गई।

'मंथन' नामक सत्र की अध्यक्षता श्री अशोक आर्य उदयपुर, मुख्य अतिथि मध्य भारत आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प्रकाश आर्य रहे, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के पूर्व मन्त्री प्रो. सुधीर कुमार शर्मा, आचार्य आर्य नरेश, आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा, श्री प्रदीप आर्य, अलवर, आदि अनेक विद्वानों ने इस सत्र में विचार व्यक्त किये। सत्र का संयोजन आर्य समाज मोतीकटला जयपुर के प्रधान एवं प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग सदस्य श्री अशोक कुमार शर्मा ने किया। समस्त कार्यकर्ताओं, दैनिक याज्ञिकों, संन्यासियों, वानप्रस्थियों, आदिवासियों से सम्पन्न मंच पर कार्यक्रम का सत्रावसान हुआ।

सभा प्रधान श्री किशनलाल गहलोत, आर्य समाज भीलवाड़ा के प्रधान श्री विजय शर्मा एवं श्रीमती किरण शर्मा द्वारा ध्वजावतरण कर सम्मेलन के समापन की घोषणा की गई। राजस्थान प्रदेश के महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुयायी राजवंशों के वंशजों का सम्मान करना कार्यक्रम की विशेषता रही। सभी वक्ताओं, विद्वानों, अतिथियों ने महर्षि दयानन्द के विचारों, कार्यों, मन्तव्यों नवजागरण, महिला शिक्षा, दलितोद्धार राजनैतिक, दार्शनिक चिन्तन, स्वतन्त्रता संग्राम में योगदान, **'आर्यसमाज की वर्तमान में प्रासंगिकता'** आदि अनेक विषयों पर विचार व्यक्त किये। **(चित्र रंगीन पृष्ठ क्र. २०–२१ पर)**

इस्लाम मुक्त भारत-ISLAM FREE INDIA (IFI)

गतांक पृष्ठ ३२ से आगे

● राधाकिशन रावत
१००६, जीवाभाई टॉवर,बोकड़देव, अहमदाबाद (गुजरात)
चलभाष : ९४२८५९४०५७

(बी) दया : दया का यह अर्थ गलत है कि अपराधी को माफ कर देना और दण्ड न देना, इससे तो अपराध और बढ़ते हैं। अपराधी को सजा देना (जेल, मृत्युदण्ड) वास्तव में उन पर दया करना है, ताकि भविष्य में अधिक और अपराध करने से बच जाएँ। दूसरे पीड़ितों की दृष्टि में यह दया है कि उन्हें भविष्य में आततायी द्वारा दी जाने वाली पीड़ा से बचा रहे हैं।

दोनों शब्दों (न्याय–दया) में भावों में कोई अन्तर नहीं। अपराधी व पीड़ित दोनों के लिए न्याय व दया समान रूप से ही है। ऐसा करके हम दोनों का कल्याण कर रहे हैं। अत: अधर्मियों का सफाया करते समय कोई ग्लानि मन में नहीं रखें। आप पुण्य कर रहे हैं।

५. सर्वधर्म समभाव का झूठा प्रचार : 'सर्व धर्म समान है' का प्रचार कर जन सामान्य को खूब बेवकूफ बनाया जा रहा है। किन्हीं भी दो धर्मों में या सम्प्रदायों के मूलभूत सिद्धान्तों में बहुत अन्तर होता है इसलिए वे अलग–अलग है। बहुत सारे मतभेदों में कुछ बिन्दुओं पर समानता हो सकती है पर इसका अर्थ यह नहीं कि सब समान हैं, सब में रात–दिन का अन्तर है। अत: हमें सनातन धर्म में ही पूर्ण श्रद्धा रखनी होगी।

६. सनातनियों का मजार, पीर, दरगाहों में जाना : सनातनियों के लिए ये अत्यन्त अशोभनीय कृत्य है कि वे उन मुर्दो से मन्नत माँगने जाते, चादर–चढ़ावा करते जिन्होंने हमारा निर्दयता से कत्लेआम किया, बेतहाशा जुल्म किया, गुलाम बनाया आदि। इस शर्मनाक प्रथा को शीघ्रातिशीघ्र बन्द ही नहीं करें बल्कि ऐसे ढाँचों को जमींदोज कर दें। विचारें क्या हमारे यहाँ देवी–देवताओं की संख्या में कमी है? जो हम अन्यों के यहाँ जाएँ?

(९) वर्तमान की चौकाने वाली गतिविधियाँ : 'इस्लाम खतरे में है' के नाम पर इस्लाम अनुयाइयों ने अपने सब अन्तर्विरोध भुला कर जिस प्रकार देश में विरोध का शक्ति प्रदर्शन किया वह आँखें खोलने वाला है—

विशेषकर सीएए, पीआरसी मुद्दों पर देश के अनेक स्थलों पर शाहीनबाग जैसे धरने का आयोजन, जमातियों का कोरोना काल में गैर जिम्मेदाराना व्यवहार, दिल्ली के सुनियोजित दंगे, रोहिंग्या मुस्लिमों का अनेक पार्कों (संजयवन) स्थानों पर अनधिकृत कब्जे, हजारों स्थानों पर मजारों, दरगाहों, मस्जिदों का ढाँचा खड़ा करना (पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर मजार एक स्पष्ट उदाहरण हैं) मुस्लिम उच्च पदाधिकारियों (जफर इस्लाम, चेयरमैन, दिल्ली अल्पसंख्यक आयोग) का भारत सरकार को खुल्ला चैलेंज कि मुस्लिमों ने अगर अरब देशों से मदद माँगी तो भारत में जलजला (तूफान) आ जाएगा व फतवा जारी करना कि 'भारत में ३० करोड़ इन्सान (मुस्लिम) हैं बाकी १०० करोड़ काफिर (गैर मुस्लिम) हैं वे तुम्हारे खुले दुश्मन हैं' आदि–आदि। अभी तो अयोध्या में राम मंदिर का भूमिपूजन हुआ है (८/२०२०) और मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने धमकी देना प्रारम्भ कर दिया है कि अभी तो मन्दिर बना लो पर कुछ समय पश्चात (३० वर्ष) बाद वहाँ पुन: बाबरी मस्जिद होगी। हिन्दू इसे कोरी धमकी नहीं समझें, अन्धेरे में नहीं रहें, गणना है कि जनसंख्या वृद्धि में मुस्लिम बढ़ रहे हैं ७.३ प्रतिशत से और हिन्दू बढ़ रहे हैं १.७ प्रतिशत की दर से। टर्की के इस्माम्बूल में ६ठी शताब्दी के एक भव्य चर्च (हागिया सोफिया) को मुस्लिमों ने १५०० वर्षों बाद पुन: मस्जिद बना दिया है (जुलाई २०२०) जिस दिन भी ये संख्या बल में ज्यादा होंगे वोट के दम पर हर कानून पलट देंगे।

(१०) इस्लाम अनुयाइयों का पाकिस्तानी व्यवहार : जग जाहिर है कि इस्लाम अनुयाई राष्ट्रगान नहीं करता। जह हिन्द, वन्दे मातरम् या भारत माता भी जय के नारे नहीं लगाता। मुस्लिम न तो संविधान को मानता, न सुप्रीम कोर्ट के आदेश मानता, न संसद के जनादेश को स्वीकार करता। इनके लिए अल्लाह, कुरान, शरीयत ही सर्वोपरि है, देश जाए भाड़ में। देश का इस्लामीकरण ही इनकी प्राथमिकता है। अत: विचार करें ये भारत के कैसे नागरिक हो सकते हैं? स्मरण रहे भारत–पाक युद्ध में (१९६५) में मुस्लिम रेजिमेंट ने पाकिस्तान के खिलाफ लड़ने से इन्कार कर दिया था।

(११) नतीजा साफ सर्वनाश : बिना किसी अतिश्योक्ति के यदि यही स्थिति चलती रही तो वह दिन दूर नहीं जब इस्लामी अजगर सम्पूर्ण हिन्दू जाति को निगल जाएगा और भारत पर मुस्लिमों का एकछत्र शासन होगा। गैर–मुस्लिमों को अपना सब कुछ भूल जाना होगा। अपना धर्म (आर्य, हिन्दू पौराणिक, जैन, सिख) अपने धर्मग्रंथ (वेद दर्शन, उपनिषद्, गीता, पुराण, धर्मग्रन्थ, गुरुग्रंथ साहिब) अपने पूजा स्थल (मंदिर, देवालय, जिनालय, गुरुद्वारा, मठ), अपने शिक्षा स्थल (गुरुकुल, आश्रम, संस्कृत विद्यालय) अपने वार–त्योहार (दीपावली, होली, चेटीचांद, रक्षाबंधन, रथयात्रा, तीज), अपनी संस्कृति और सभ्यता (यज्ञ, जनेऊ, चोटी, तिलक, व्रत उपवास) आदि–आदि।

इनके स्थान पर हिन्दुओं को पाँच बार नमाज पढ़ना, रोजे रखना, गौमांस खाना, सुन्नत खतना करवाना, तीन तलाक, हलाला, हिजाब, बुरकाधारी बनना होगा आदि–आदि। क्या ये सब आपको स्वीकार है? अनाथ हिन्दू भागकर भी कहाँ जाएँगे? एक अकेला हिन्दू राष्ट्र नेपाल देश भी अब तो चीन के दबाव में भारत विरोधी हो गया है।

याद रहे, यदि हिन्दू मुस्लिम बन भी गया तो भी उन्हें कभी समानता (बराबरी) का दर्जा नहीं मिलेगा। मुस्लिमों में स्वयं ७२ से ज्यादा फिरके हैं जो ऊँच–नीच की भावनाओं से ग्रसित हैं और आपस में रक्तपात करते रहते हैं। मुख्य विभाजन शिया, सुन्नी, हनफी, देवबंदी, अहमदिया, बरेलवी आदि हैं। उच्चता की दृष्टि से कुरैशी, पठान, सैयद हैं। निम्न वर्ग में चिश्ती, भिस्ती आदि हैं।

क्षेत्र की दृष्टि से भी पंजाबी मुस्लिम अपने को श्रेष्ठ मानते और इसीलिए बांग्लादेशी मुस्लिमों से गुलाम जैसा व्यवहार करते थे जो अन्त में उनके देश विभाजन का मुख्य कारण बना।

स्मरण रहे, देश विभाजन के बाद भारत से पाकिस्तान गए मुस्लिमों को ७० वर्षो के पश्चात् भी मुहाजिर कहकर अपमानित किया जाता है।

अत: हम हिन्दुओं को अपनी दशा–दुर्दशा का भलीभाँति ज्ञान रखना चाहिए कि गुलाम नौकर–चाकर से बदतर उनकी स्थिति होगी।

(१२) आशा–किरण : सौभाग्य से भारत देश में समुचित अंशों में उच्च सनातन, वैदिक, ज्ञान, धर्म, दर्शन, सभ्यता, संस्कृति, परम्पराएँ आदि जीवित हैं। उच्च कोटि के विद्वान् धर्मप्रेमी, देशप्रेमी, समाजप्रेमी, साहसी, बलिदानियों आदि की प्रचुर संख्या है। अगर आवश्यकता है तो सिर्फ अपने को सुसंगठित करने की, लक्ष्य निर्धारित करने की, अपनी कुछ कमियाँ दूर करने की, मतभेद, मिथ्या ज्ञान भुलाने की, स्वयंभू नेतृत्व लेने की, साधन जुटाने की आदि की।

आवश्यकता है एक ही नारा **'इस्लाम मुक्त भारत–इस्लाम फ्री इण्डिया'** लगाने की, इसके लिए हम क्या–क्या कर सकते हैं? निम्न बिन्दु विचारार्थ हैं। **(क्रमश:)**

उपनयन संस्कार सम्पन्न

हमारा राष्ट्र भारत वर्ष समस्त भूमण्डल में शिक्षा संस्कार में आदिकाल से समस्त संसार को शिक्षित–दीक्षित कर अनवरत दिशा बोध देता रहा है। विश्व के समस्त कर्णधारों ने अपने–अपने विवेक से इसकी पुष्टि भी की है। आदि ऋषि ब्रह्मा से लेकर महर्षि गौतम, कपिल, कणाद, वशिष्ठ, विश्वामित्र, अत्रि, भृगु, पाराशर, अपाला, घोषा, अनुसुइया, मदालसा, मैत्रेयी, गार्गी, सुलभा, महर्षि वेदव्यास, जेमिनी पर्यन्त जैसे समग्र क्रान्तदर्शी विद्वान् विदुषियों ने अपनी संस्कार शालाओं से दीक्षा लेकर मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र, योगिराज श्रीकृष्ण, माता सीता, रुक्मणी जैसी पवित्र आत्माएँ आज भी प्रेरणा की स्रोत हैं।

महाभारत काल के उपरान्त हमारे संस्कारों में निरन्तर आती गिरावट ने हमें आज तक भी ठीक प्रकार उठने नहीं दिया है। इसी कारण योगिराज श्रीकृष्ण के बाद महर्षि दयानन्द ने संस्कारों में आई गिरावट को देखकर चिन्ता प्रकट की। राष्ट्र पिछले पाँच हजार वर्षो से ऐसा गिरता चला गया कि भूमण्डल के चक्रवर्ती सम्राट भी संस्कारों के अभाव से ग्रसित होकर त्रसित हो गए। यहाँ तक कि पद आक्रान्ताओं के समक्ष अपने हाथ स्वयं बाँधकर बैठ गए। बड़े–बड़े ज्ञानी–ध्यानी भी वेद विहीन शिक्षा देकर समाज को अन्धकार की ओर ले गए।

'ब्रह्म वाक्य जनार्दनम्' की दुहाई देकर कह दिया कि ब्राह्मण के मुख से निकली बात कभी मिथ्या नहीं हो सकती। जबकि लोगों ने समझा ही नहीं कि वेद विहीन ब्राह्मण तो शूद्र से भी निम्न स्तर का होता है। महाभारत कालोपरान्त महर्षि चाणक्य के बाद महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसे क्रान्तदर्शी ने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश, **'संस्कार विधि'** के रूप में ऐसा खजाना (धनकोष) दिया कि पुन: समाज में संस्कारों की चर्चा होने लगी है। उन्हीं १६ संस्कारों में से संस्कार विधि में एक **'उपनयन संस्कार'** है जिसे वेदारम्भ या विद्यारम्भ संस्कार कहा जाता है। यह संस्कार समस्त १६ संस्कारों में से मुख्य संस्कार है अर्थात् संस्कारों का चक्षु है।

गुरु के आश्रम में शिष्य, गुरु के समक्ष अग्निहोत्र पर यह प्रतिज्ञा करता है–

ओ३म् मम् व्रतपते हृदयं दधामि मम् चित्तमनुचित्तं ते अस्तु।
मम वाचकेमना जुषस्व बृहस्पतिष्टवा नियुनक्तु महयम्।।

इस मन्त्र में आचार्य प्रतिज्ञा कराते हुए शिष्य को कहता है– हे शिष्य बालक! तेरे हृदय को मैं अपने अधीन करता हूँ। तेरा चित्त मेरे चित्त के अनुकूल बना रहे और तू मेरी वाणी को एकाग्र मन हो प्रीति से सुनकर उसके अर्थ का सेवन किया कर और आज से तेरी प्रतिज्ञा के अनुकूल बृहस्पति परमात्मा तुझको मुझसे युक्त करें। इस मन्त्र की भावना के अनुरूप शिष्य भी प्रतिज्ञा करते हुए कहता है कि हे आचार्य! आपके हृदय को मैं अपनी उत्तम शिक्षा और विद्या की उन्नति में धारण करता हूँ। मेरे चित्त के अनुकूल आपका चित् सदा रहे। आप मेरी वाणी को एकाग्र होकर सुनिये और परमात्मा आपको सदा मेरे लिए नियुक्त रखें।

इसी प्रकार से मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम और योगिराज श्री कृष्ण का भी उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार किया गया जो आज भी सम्पूर्ण आर्यावर्त्त में संस्कारों से युक्त होकर जन–जन के हृदय में बसे हुए हैं।

ऐसे ही एक उपनयन संस्कार (यज्ञोपवीत) में आर्य नेता मूर्धन्य विद्वान् सीकर सांसद स्वामी सुमेधानन्द सरस्वतीजी महाराज ने ग्रेटर नोएडा में गजेन्द्रसिह आर्य के निज आवास पर उनके पौत्रों अक्षित, आदित्य का उपनयन संस्कार कराकर अग्निहोत्र पर पौत्रों को संस्कारित कर उपदेश दिया और कहा कि समाज में मात्र नामकरण एवं विवाह संस्कार ही होता है और उनका भी रूप आज बिगाड़ दिया है। गजेन्द्रार्य ने अपने पौत्रों का उपनयन संस्कार कर समाज को एक नई दिशा दी है। इस प्रकार के आयोजन समाज में होने चाहिये।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व केन्द्रीय मन्त्री बागपत सांसद डॉ. सत्यपाल सिंहजी ने उपनयन संस्कार को सबसे श्रेष्ठ बताकर उसके महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि उपनयन संस्कार राष्ट्र निर्माण की आधारशिला है। चारों ओर चहुँमुखी विकास हुआ है परन्तु मनुष्य के निर्माण में निरन्तर गिरावट आई है। जब तक मनुष्य का निर्माण नहीं होगा, चहुँमुखी भौतिक विकास से कोई लाभ नहीं होगा। पुरुषार्थ और चरित्र निर्माण की शिक्षा केवल उपनयन संस्कार से ही मिलती है, बालक समझने लगता है कि अब मुझे प्रतिज्ञाबद्ध होकर अपने चरित्र का निर्माण करना है। आज पूर्व प्राचार्य गजेन्द्रसिंह आर्य ने अपने पौत्रों का आर्य विद्वानों के द्वारा उपनयन संस्कार कराकर समाज और राष्ट्र निर्माण में श्लाघनीय कार्य किया है। आज उपनयन संस्कार को तो लाखों में कोई–कोई व्यक्ति करा रहा है जबकि हम सभी को और विशिष्टत: आर्य समाज को इस ओर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। पौत्रों को अपने हाथ से **'ओम् यज्ञोपवीतम्...'** बोलकर यज्ञोपवीत पहनाकर आशीर्वाद दिया और ओ३म् के प्रतीकात्मक चिह्न (बैज) लगाए।

विशिष्ट वक्ता के रूप में इतिहासकार **'उगता भारत'** के मुख्य सम्पादक **'भारत को समझो'** के राष्ट्रीय प्रणेता डॉ. राकेश आर्य ने कहा कि इस उपनयन संस्कार के कारण ही वीर हकीकत राय जैसे किशोर ने जनेऊ और चोटी की रक्षा के लिए प्राणोत्सर्ग कर दिया–**'काट दो बोटी–बोटी को, ना दूँगा चोटी को।'** एक नहीं अनगिनत वीर–वीरांगनाओं ने यज्ञोपवीत की रक्षा में सर्वस्व न्योछावर कर प्राणोत्सर्ग किया। ऐसा राष्ट्र के प्रति समर्पण वैदिक संस्कारों के कारण कर पाए। इन्हीं भावनाओं से प्रेरित होकर पूर्व प्रधानाचार्य गजेन्द्र आर्य ने अपने पौत्रों का उपनयन संस्कार कराकर हम सबको इस पवित्र कार्य के लिए प्रेरित किया है।

इस अवसर पर मूर्धन्य विद्वान् गणित ज्योतिर्विद् ज्योतिषाचार्य आचार्य दार्शनेय लोकेश ने कहा कि आज का दिन उपनयन संस्कार के लिए अत्युत्तम है। शरद सम्पात का मध्य बिन्दु है। वेदानुसार ऊर्ज मास (कार्तिक सौर मास) प्रारम्भ हो रहा है, तुला संक्रान्ति है और सूर्य भगवान भास्कर ठीक शत–प्रतिशत पूर्व में उदयमान हैं। दिन और रात बराबर हैं, ज्योतिष के अनुसार शरद सम्पात का सर्वश्रेष्ठ दिन है। यद्यपि गजेन्द्र आर्य ने अनायास यह दिन चुना है भले ही वे कोई ज्योतिर्विद नहीं हैं। परन्तु जो विचारशील व्यक्ति सत्य की ओर बढ़ता है, सत्य भी उसी की ओर खिंचा चला आता है। उनके पौत्रों को जो आज आशीर्वाद मिल रहा है यह हजारों गुना बढ़कर इनकी यश कीर्ति में वृद्धि करेगा। जिन विद्वानों के द्वारा उपनयन संस्कार करा गया है वे अति महत्वपूर्ण मूर्धन्य विद्वान् हैं। अत: यह परिवार पौत्रों अक्षित, अथर्व, आदित्य के साथ सौभाग्यशाली हैं।

आचार्य दार्शनेय जी ने पंचांगों में आ रही विकृतियों पर प्रकाश डाला। वेद के सिद्धान्तानुसार केवल और केवल श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् ही त्योहार और पर्वों की सही एवं वस्तुनिष्ठ जानकारी देता है। महर्षि दयानन्द जी ने भी वर्तमान में चल रहे पंचांगों में सन्देह व्यक्त कर आर्ष पत्रकम् पर ध्यान आकृष्ट किया था लेकिन समय से पूर्व ही काल कवलित हो गए। उनके बाद उनके अधूरे कार्य को अपनी योग्यता और वेदानुसार श्री दार्शनेयजी इस क्षेत्र में तत्पर हैं और आर्ष पत्रकम् को देकर समाज को जागरूक कर रहे हैं। आज नहीं तो कल अवश्य ही लोग समझेंगे और उपकृत होंगे।

भजनोपदेशिका अलका आर्य ने भी संस्कारों पर प्रकाश डाला और कहा कि दादा गजेन्द्र आर्य ने बच्चों को यज्ञ की विधा और उपनयन संस्कार कराकर हम सबको प्रेरित किया है। हम सभी विद्वानों को इस दिशा में ठोस कदम उठाने चाहिये। इस अवसर पर पुत्र और पुत्रवधुओं आर्येन्द्र–गुंजन, राघवेन्द्र–उर्वशी की ओर से पौत्रों के दादा एवं दादी श्री गजेन्द्र आर्य, राजेन्द्री देवी ने सबको नमन कर आभार एवं धन्यवाद दिया और कहा कि इस दयानन्द की पीढ़ी पर आप सब समय–समय पर अपने आशीर्वाद की वर्षा करते रहें। **(चित्र देखें रंगीन पृष्ठ ३९ पर)**

–गजेन्द्रसिंह आर्य
राष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता, जलालपुर, जि. बुलन्दशहर (उ.प्र.)
चलभाष : ९७८३८९७५११

'भारत मित्र स्तम्भ' का लोकार्पण समारोह सम्पन्न

सिन्धु परिवार के गौरव, माता जियोदेवी की कोख से पिता शीशरामजी आर्य के यहाँ १५ दिसम्बर १९३१ को जन्मे, वर्ष १९४८ में माता परमेश्वरीदेवी के साथ गृहस्थाश्रम में प्रवेश कर महर्षि दयानन्द को प्रेरणा स्त्रोत बनाकर **'मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे'** अर्थात् हम सब एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें, को ध्येय वाक्य बनाकर अपने सुकर्मों, सरलता, सहृदयता, कर्मठता, समर्पण की अनुपम सुगन्धी बिखेरकर दिनांक २७ जनवरी २०११ को महाप्रयाण करने वाले आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध कर्मयोगी, भामाशाह एवं वेद पथ के पथिक स्मृति शेष चौधरी मित्रसेन जी आर्य की स्मृति को समर्पित ब्रह्माण्ड उत्पत्ति से लेकर वर्तमान तक के ऐतिहासिक कालखण्ड, धर्म संस्कृति और राष्ट्र के महापुरुषों, वीर बलिदानियों, परम वीर चक्र से सम्मानित शूरवीरों, हरियाणा राज्य की प्राचीन कला संस्कृति परम्पराओं तथा चौधरी मित्रसेन जी के जीवनवृत्त को दिग्दर्शित करवाते चित्र एवं मूर्तियों को अपने आप में समेटे आठ तल के इस विशाल स्तम्भ जिसके शीर्ष भाग पर ओ३म् ध्वजा और ध्वजा के ठीक नीचे चारों दिशाओं में काल (समय) बोध करवाने के साथ प्रति घण्टे ओ३म् नाद् गुँजायमान करती घड़ियाँ, का लोकार्पण दिनांक १२ अक्टूबर २०२३ को स्तम्भ स्थल ग्राम खाण्डा खेड़ी, जिला हिसार, हरियाणा पर आर्य जगत् की महान् विभूति, मूर्धन्य वैदिक विद्वान्, कन्या गुरुकुल रुड़की की आचार्या पद्मश्री सुकामा देवी जी की अध्यक्षता तथा राष्ट्रीय स्वयं संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी के मुख्य आतिथ्य एवं योगगुरु बाबा रामदेव, परमार्थ निकेतन हरिद्वार के स्वामी चिदानन्द जी एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उत्तर भारत प्रभारी एवं हरियाणा प्रमुख के विशिष्ट आतिथ्य व वृहद संख्या में उपस्थित खाप पंचायत प्रतिनिधियों, आर्य जगत् के गणमान्य संन्यासियों, वानप्रस्थियों, विद्वानों, सम्पूर्ण भारत के अनेक विभिन्न गुरुकुलों के आचार्यों, ब्रह्मचारियों ब्रह्मचारिणियों, आर्यसमाज पदाधिकारियों, आर्यजनों, गणमान्य राजनेताओं, प्रबुद्धजनों की उपस्थिति में माता परमेश्वरी देवी के संरक्षण में, चौधरी मित्रसेन जी द्वारा स्थापित **'परम मित्र मानव निर्माण संस्थान'** के तत्वावधान व आपके ज्येष्ठ सुपुत्र कैप्टन रुद्रसेन जी के संयोजन में अत्यन्त हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न किया गया। जिसके साक्षी बनने का सौभाग्य वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा को भी प्राप्त हुआ।

वीर बाना धारण की हुई कन्याओं द्वारा सुमधुर मित्रगाथा का गायन कर समारोह प्रारम्भ किया गया। चौधरी मित्रसेन जी के जीवन वृत्त पर प्रकाश डालती लघु फिल्म को प्रदर्शित किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. मोहन भागवत एवं गणमान्य अतिथियों को चौधरी मित्रसेन जी के सुपुत्रों द्वारा भारत मित्र स्तम्भ का अवलोकन करवाया गया। भागवत जी द्वारा अत्यन्त तन्मयतापूर्वक सम्पूर्ण स्तम्भ का अवलोकन किया गया तथा अभिभूत हुए स्वामी रामदेव जी एवं स्वामी चिदानन्द जी द्वारा महर्षि दयानन्द का गुणानुवाद करते ओजस्वी उद्बोधन प्रदान किया गया। गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों के द्वारा संगठन सूक्त के मन्त्रोच्चारण के मध्य मंचस्थ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन व मुख्य अतिथि डॉ. मोहन भागवत जी के करकमलों द्वारा **'भारत मित्र स्तम्भ'** शिलालेख को प्रदर्शित कर लोकार्पण प्रक्रिया को सम्पन्न किया गया।

मध्य में मुख्य मंच के समीपस्थ दोनो ओर विशाल मंचों पर वृहद संख्या में विराजित गणमान्य महानुभावों द्वारा हाथ उठाकर शुभाशीष प्रदान किया गया। **'परम मित्र मानव निर्माण संस्थान'** की ओर से मुख्य अतिथि के करकमलों द्वारा आर्य जगत् की विशिष्ट विभूतियों स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती वडलुरु (तेलंगाना), डॉ. विवेक जी आर्य दिल्ली एवं आचार्य धनंजय जी श्रीमद् दयानन्द आर्ष गुरुकुल पौंधा का सम्मान शाल श्रीफल तथा रु. १ लाख धनराशि के साथ किया गया। मुख्य अतिथि द्वारा अपने उद्बोधन में एक शेर के बच्चे का अपने जन्म के साथ ही अपनी जन्मदायिनी माता तथा अपने समुदाय से विमुख हो जाने पर बकरियों के समूहों के साथ हुए लालन–पालन और कुत्तों के द्वारा उसके साथ किए गए व्यवहार का दृष्टान्त सुनाते हुए स्तम्भ में प्रदर्शित दृश्यावली को हमें अपनी गौरवमयी संस्कृति, इतिहास, विरासत और पहचान से अवगत करवाने का सशक्त माध्यम बताया।

मुख्य अतिथि को भारत मित्र स्तम्भ की प्रतिकृति व अन्य अतिथियों को भी स्मृति चिह्न तथा अन्य उपस्थित गणमान्य महानुभावों को भी शॉल, परम मित्र मानव निर्माण संस्थान द्वारा सृजित दैनन्दिनी दिग्दर्शिका तथा **'चौधरी मित्रसेन अभिनन्दन ग्रन्थ'** भेंटकर सम्मानित किया गया। आचार्या सुकामा देवी जी के अध्यक्षीय उद्बोधन पश्चात् वैदिक राष्ट्रगान **'ओ३म् आ ब्राह्मण ब्राह्मणोवर्चसी जायतां...'** के अर्थ सहित गान के साथ समारोह का समापन किया गया।

आर्य जगत् की सम्पन्न विविध गतिविधियों की चित्रावली

ऋषि दयानन्द के निष्ठावान सिपाही गजेन्द्रसिंह जी सोलंकी के सुपौत्रों अक्षित व आदित्य के 'उपनयन संस्कार' पूर्व आईपीएस तथा बागपत से सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह जी पूर्व केन्द्रीय राज्य मन्त्री एवं सीकर (राज.) के सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न। (विस्तृत विवरण पृष्ठ ३७ पर)

वैदिक संसार प्रकाशक सुखदेव शर्मा की दौहित्री 'आर्या' का 'मुण्डन संस्कार' श्री रामफलसिंहजी आर्य, भिवानी के ब्रह्मत्व तथा श्री मानसिंहजी धीमान गाजियाबाद के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न। (विस्तृत विवरण पृष्ठ ३४ पर)

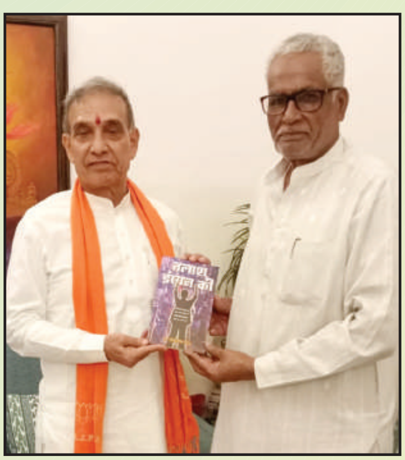

वेद एवं ऋषि दयानन्द के प्रति अगाध श्रद्धावान् डॉ. सत्यपालसिंह जी आर्य पूर्व पुलिस कमिश्नर मुम्बई, पुणे व नागपुर वरिष्ठ राजनेता, बागपत सांसद के दिल्ली निवास पर वैदिक संसार प्रकाशक की सौजन्य भेंट पर माननीय सत्यपाल सिंहजी अपनी अनुपम कृति 'तलाश इन्सान की' भेंट करते हुए।

भारत मित्र स्तम्भ लोकार्पण समारोह से लौटने पर आर्य समाज जीन्द, हरियाणा पर रात्रि विश्राम तथा संस्था पुरोहित आचार्य सुरेश जी शास्त्री के ब्रह्मत्व व श्री कृष्ण कुमारजी सोनी के संग देवयज्ञ का सौभाग्य प्राप्त हुआ।
-सुखदेव शर्मा

एम.पी.एच.आई.एन.-२०१२/४५०६९ • सम्पादक : गजेश शास्त्री • डाक पंजीयन : एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०२१-२३

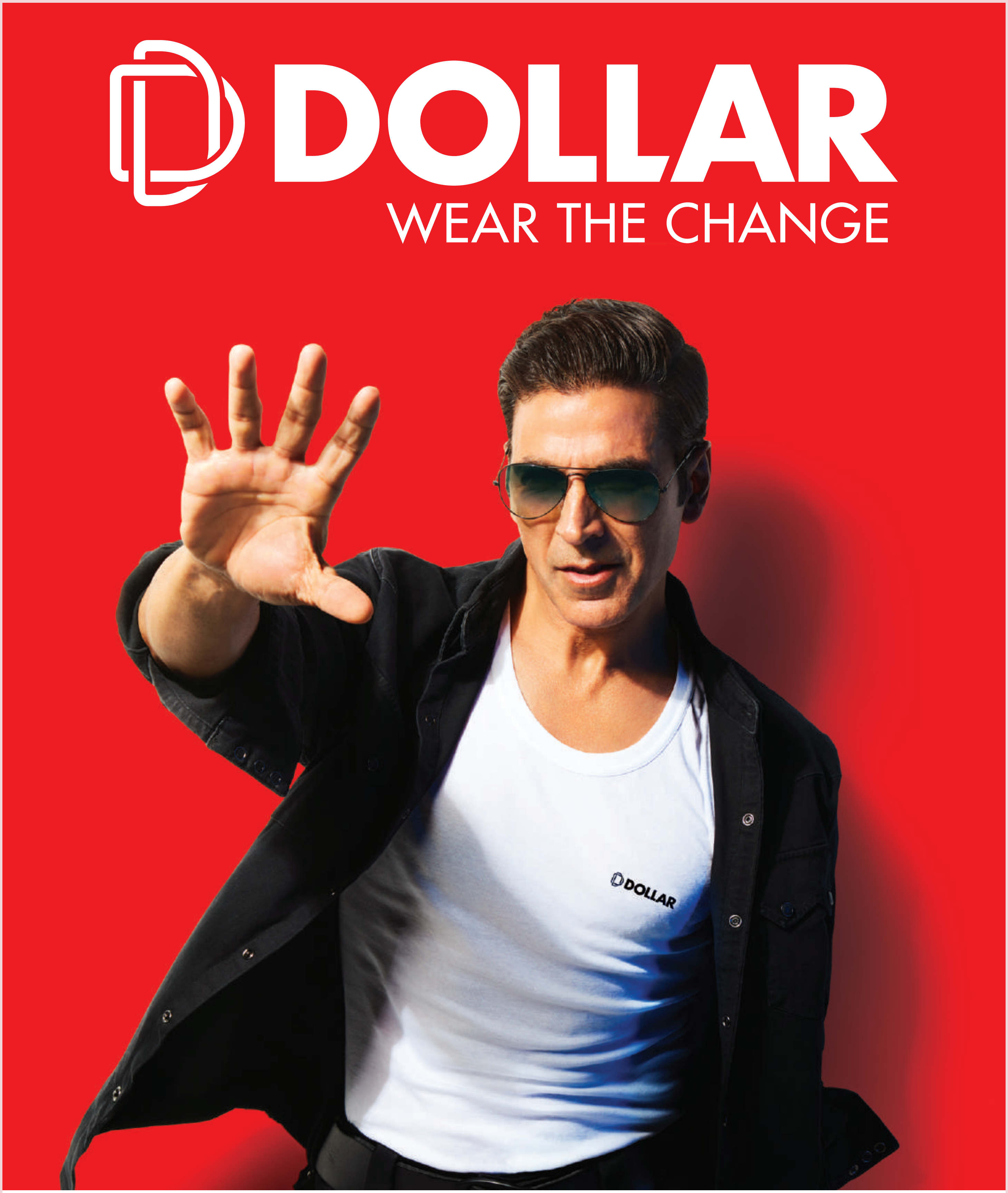

www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

अक्टूबर २०२३, पृष्ठ-४०

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक : सुखदेव शर्मा, इन्दौर द्वारा इन्दौर ग्राफिक्स, २४, कुँवर मण्डली से मुद्रित एवं १२/३, संविद नगर, इन्दौर-१८ से प्रकाशित